# क्षिमश्रा

# शैहतियाइन मुर्थाभाषाम् ।

পুণীত।

দ্বিতীয় সংখ্যরণ।

প্রথম ভাগ।

## किनिका छ। ।

শ্রীপারী মোহন বন্দোপাধার দার।
বন্ধল স্পিরীরর যক্তে মুর্জিত।
মূজাপুর ৫ নং মুসলমান পাড়া লেন।
সন ১২৮৪ সাল।

#### विक्डाशन।

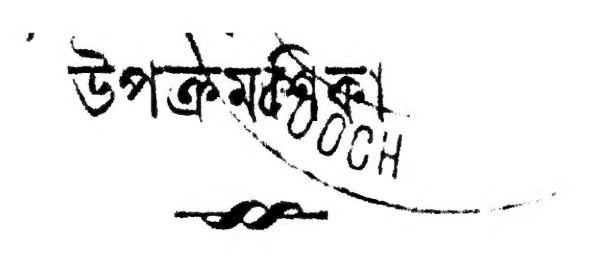
এতদেশীয় বিদ্যানুৱাগী মহোদয়গণ প্রথমিত আয়ুকুলা প্রাপ্তে নানা বিষয়ক পুস্তকাদি রচনা করত একণে
বদ্ধভাষার উন্নতি রিদ্ধি করিতেছে। কিন্তু রুষিকার্য্য যাহা
এতদেশীয় অধিকাংশ লোকের উপজীবিকা তৎসমন্ধীয়
কোন পুস্তক অদ্যাবধি প্রকাশ না পাওরাতে এতদেশে
রুষিকায়া পুর্ববং অবস্থাবস্থিত আছে। এক্ষণে রাজপ্রক্
দের যত্নে কলিকাতায় বটানিক উদ্যান সংস্থাপিত হওয়াতে
নানাপুর্ব বৈদেশীক রক্ষ চারা এতদেশে রোপিত হওয়াতে
কুষিকার্য্যের উন্নতির সোপান হইয়াছে বটে, কিন্তু যে সকল
কৌশল দ্বারা উক্ত উদ্যানের কার্য্য পরিচালন হইয়া
থাকে তাহা দেশে প্রচারিত হয় নাই, এই নিমিত্ত
আমরা বহু যত্নে ঐ সকল কৌশল সংগ্রহ করিয়া এতদেশীয়
সামানারূপ রুষিকার্যের সহিত সংমিলন পূর্বক এই রুষিদর্পণ নামক সন্দর্ভ রচনা করিয়া প্রকাকারে প্রকাশিত
করিলাম।

পূর্মকার পৃত্তক অপেক্ষা এই পৃত্তক অনেক র্দ্ধি ছইয়াছে কারণ মৃত্তিকার রাসায়নিক পরীক্ষা পূর্মেকার পৃত্তকে ছিলনা কিন্তু এই বার সেই সকল বিষয় সংগ্রহ করণ পূর্মক এই পৃত্তকে সংযোগ করা হইয়াছে।

পরিশেষে আমরা ক্তজতা সহকারে স্বীকার করি-তেছি। আন্দুল নিবাসী শ্রীয়ক্ত বারু রাধামোহন বস্থ্ এই পুস্তক মুদ্রিত করিবার যাবতীয় ব্যয় নির্ম্বাহ করি-য়াছেন। তিনি অনুগ্রহ প্রদর্শন পূর্বক এই বিষয়ের ভার গ্রহণ না করিলে এই পুস্তক প্রচারিত করা ছুরুহ হুইত সন্দেহ নাই।

कलिकांड। मन १२५१ माल। १२ सम्बद्धन।

শিহরিমোহন মুখোপাধার।



इङ्गई। रक्षका नामक्रिम नाम श्रकाद दङ् श्रमर करतम 1- काम छोट्स सर्ग, दोशा, काम छोटम दा होता, मनि गांगिका, প্রবালাদি উৎপন্ন इहेरा। शांक, এবং তৎসমীপ-रिर्छ छ। योगिरां के मकल प्रवा जाहरन हारा जीरिका निस्वाहर डेभाग निर्भातिष्ठ करता किस्तु आयोगित्रात धरे नकताका गाधा छेक प्रतामि किछ्डे छेल्भन्न इय गा, उथानि ... हैश (यक्ष अवस्था मश्साषित आहि नाश अवस्थातम करितन म्लाफे थाउँ । इश (ग इश (करान डेस्डिक्ड क्र कर्ड़ श्रमय करिएरक, कार्रण हेकार्ड शर्यांचानित काम श्रीड-रक्षका मां शाका उमगुज करें जा जा नाशू मधानि इहें है। मृक्तिंदिक क्रमाश्च महम होद्या छेखांभ, द्रिष्टिभाव धरः गर्दत ननीत जल প্রবাহিত হওয়াতে অনুভূত হইতেছে যে धरे (माम जाना मकलप्रता विनिम्हा (करल ऐसिडाई छेट-भन्न इहेर्ड भारत, अङ्ग्रेश এङ काम यामित्र ङिख्यार णालाइना मादा (पर याजा निस्ति ह कदि (तक। वित्मराजः छेसा (माम कक्त मामशी अशंद यमा यादम প্রভৃতি কখন আছা-दार्थायांगी इरेट পात ना, कार्ग रहिक्छाए अपनिश कीर्यत भरीत क्रांख इहेशा शांक, ठाहाटि यनि कक मामणी া সহকারে শরীরের ভিতরের উত্তাপ রদ্ধি হয় তবে উভয়েন

मश्यार्श जनगा नित्मम श्रीन श्रीत भारत, उर्थाक एक-পযুক্ত আহারীয় দ্রবা যে ক্লিগ্রসামগ্রী অর্থাৎ ফল মূল অন্যান্য উদ্ভিক্ত ইহাই সর্ব্যভোতাবে এদেশীয় জীবের ভোজনাই; অতএব এই কারণবশতঃ বঙ্গদেশ নিবাসি (लार्कदा क्रिकारा क्रिया शार्कन किन्छ क्रियिनगात कि-हुई व्यानिका नाई, वर्ष याद्यां कार्याः कर्ष ध्यकां भ भारे ए भारत ध्या दिश्य छेभार अवशादिए मारे। যদিও চারা উৎপত্তি করিবার কারণ মৃতিকা খনন, সার (मन्द्रां, अक्रांशा कुश्निश्क नस्के करा, मगासर भाराहिक्ष छ जनामहरू करा, এবং ইছাকে (राश इकेट यूक करा ' हेटार्नि किया कमार्थ यादा क्रिकार्यं णामून द्वेसार्ड ভাছার বিষয় কিঞিৎ কিঞিৎ অনেকে অবগত আছেন, কিন্তু धर्मे मकन किरात माता ऐसिङ्किनिश्यत कीयानाभाषाणा किशा मकल किलाश निकार इके. छात्र, छात्र। (कहरे छा छ न(इन। याउध्य ध्रे मत्न विगत शक्ष करिवाद मान(म जामरा अथमडः मिश्नाम (य औ मदन अनुकास मिलिर खंडावानुमादः डिझर खंडाव धादण कदिशाहि, यथा, भीड-প্রধান দেশে সভত বরক পতিত ছওয়াতে উদ্ভিজনিগের श्रिक जिल दावस्। करा कर्वरा नास, ए । उथाकार कर्ठिन हिक्श मृहिक। रह मृद अर्राध थनन न। कदिएल कथन क्विकार्याभिर्याभी इक्ट्रेड भारत ना। जीय-अधान (मर्भद कान ठावा औरमर्ग वार्थन कदिए इरेल छेख्य गृष्ट भर्मा তাহা রোপণ করা আবশাক, কিন্তু বঙ্গরাজা মধ্যে সক-नहे जारांत्र विभवीं एनियां भांत्रा यात्र, এই स्थान

अधिक जल रावश्रो कर्ना कर्न्दा मृद्धिको अधिक मृत अवधि খনন করিতে হয় না। শীত-প্রধান দেশীয় চারা আনিয়া যদি এই দেশে রোপণ করিতে হয় তবে শীতল গৃহে রোপণ कर्। जानगाक, धनः धर (मण जालका मर्याधक हेमः দেশের চারা আনিয়া এই দেশে রোপণ করিতে হইলে রজন (योशों डाइर्र डेशर्व जाक्कामन मिट्ड इत। এই প্रकार উভয় দেশীয় কৃষিকার্য্যের বিভিন্নতা দেখিয়া আমাদিগের স্থির বিবেচনা হইতেছে যে, এক দেশীয় ক্লবিকার্যের ব্যবস্থা কিঞ্চিৎ পরিবর্ত্ত না করিলে অন্য দেশে তাহা কখন প্রচ-लिंड इहें पिर ना। এই जना हेश्म की या नाम मकल আমাদিগের এই দেশের সভাবানুদারে পরিবর্তন করিবার জনা প্রথমতঃ আমরা কিছুই উপায় ধার্যা করিছে পারি माहै। जदामार जानक जिला करिया धरे खिर करिलाम (य, মভাবরূপ প্রায় আলোচনা করাই আবশাক, তাহাতে याशा व्यवधारिक व्याट्स उरम्भूमत वानुगीलन कतिल नाना (मर्भंद कृषि रावश्वां निक्रभेश जदमा करा याहर भीविद्य, কারণ যে স্থানের যেরূপ সভাব তথায় তদ্রপ উদ্ভিজ উৎপন্ন হইয়া খাকে। কোখাও ধানা, কোখাও জাকা (काथा वर्ग थड्डू द्र, काथा वर्ग नाहिएकल, धरे तथ स्थान नित्नित्य नित्नमर नमा ७ कन, हक्क, छेर्भन्न इहेर्स शांदि।

কোনং ব্যক্তি যে সদেশোৎপন্ন উদ্ভিক্ত রোপণ দারা জী-বিকার উপায় করিয়া থাকেন তাঁহারা কেবল স্বভাবের বদা-নাতার উপরই নির্ভর করিয়াছেন। কিন্তু নানা দেশে যে ভিন্নং উদ্ভিক্ত উৎপন্ন হয়, তাহার নিয়ম অবগত হইয়া যদি

ভাহাদিগকৈ আমাদিগের এই দেশেরোপণ করিবার প্রথ ্প্রচলিত করা যায়, তবে ক্ষিকার্যাের উন্নতি হইতে পারে এবং दिएम् नानिएकाद आंव आंवभारुका थार्क मा, कांवन मर्ख (म्लां ९ श्रेन ज्या, को मेल क्या यि श्राम्त छे १ श्रेन कर्न यात्र তবে কোন্ দ্রব্যের আর অভাব থাকে? স্তরাং তৎসমু-দয়ের নিমিত্ত আমাদিগের আর দেশেই ভ্রমণ করিবার প্রয়ো-জন থাকে না। অতএব এই রূপ আশয়ে স্থানিষ্কতা লাভের জন্য স্বভাব রূপ পুস্তকে দেখিলাম যে, তাহা তিন পরিচ্ছেদে সমাপ্ত হইরাছে, কিন্তু এক এক অধাায়ের পত্রের সংখ্যা আমা-দিগের এই সামান্য বুদ্ধিতে নিরপণকরা অসাধা; কারণ এक महा दिखीर्ग आखर महामा मखासमान इहेरा। हेड खड़ः দৃষ্টিপাত করিলা বিবেচনা করিলাম যে আকাশ অতি নিকট-वर्जि-जुमिर्ड मश्लश रहेशाह जर उनविष भृथिती समा निर्मिष्ठे इहेशाइ। পরে ঐ मीमात निक्रि याहेशा आका-अकार किराक द अधामद इहेश (मिश्रिमां म ता आमानिताद शमान छेशां जा जा जा वा भारताम इत। धरे था कार्त जा में भ रिखीर्ग शृथिती (मिरिया) आमानिर्गत ममह मक्ष हिछ इछ-शांट चर्छादत मगक् शांहत अमङादमा (मधिशा दिहर-চনা করিলাম যে, যত হুর প্রান্ত আমাদিরের দৃটি-भाइराधीन उनभारान महारहे महारहे इध्या डेहिड। এই कल्पना छित कित्रिश आह्मत माधा अहिमा कितिमा, किन्छ उथात স্বাভাবিক নিয়ম মনুযাদিগোর কাপানিক ব্যবস্থার সহিত এমত गिश्रिक (य তাহ। इरेट रेशांक विভिन्न करियां শিক্ষা করা স্কটিন। অতএব এতাবৎ ভাবিয়া চিন্তিয়া এক

महात्रेशा माक्षा डेशिब्ड इडेमाम, उशांत मिशिनाम (ग শिकामातिनौ शक् ि मडी अन्छ नगात्र भग्न भ्रविक नि-দ্রাভিভূতা রহিয়াছেন। আমি তাঁহার নিকট দণায়মান হইয়া করপুটে জিজাদা করিলাম হে ভারুকজন মোহি-नि! পরমেশ্বরের এই বিচিত্র রচনার মধ্যে যেরূপ আশ্চরা लील। थकांन পाইয়াছে তাহ। मनुम्य मर्भन करिया किছ প্রণিধান করিতে পারিলাম না, অভএব আমার প্রতি অমু-কম্পান্থিত। হইয়া আমার হৃদয়াকাশে জানরপ ভার উদিত करून्। এই कशा दाइष्ठाद छे कि कदाएँ काम छे छे अप है-लाम ना, (कह आभाद नाका अन्। कदिल ना, अन् उर्शस এমত কাছাকেও লেখিলাম না যে এই বিষয়ের সত্রপদেশ फिलामा करि। পরে অভান্ত চিন্তাকুল হইয়া ইতন্ততঃ ভ্রমণ कत्ठ এक शिदित निक्ठे छेशिष्ट्ठ इहेलाम, उथाय दिन्य। ভাবিয়া দেখিলাম যে শিক্ষা করিবার চারি প্রকার উপার গাছে। প্রথমতঃ, পুত্তক পাঠ, কিন্তু এখানে তাই। কি প্রকারে সংগ্রহ করি? কারণ ঘাঁহার নিক্টে শিক্ষা করিতে আদি-য়াহি তিনিই অতৈতনা রহিয়াছেন। দ্বিতীয়তঃ, ক্ষোপকখন किन्छ এই স্থানে বাক্যালাপ করি এমত কেহ নাই। তৃতী-ग्रकः, भवोक्षा, किन्नु এशाम भवीका कवि अग्र कान डेभाग नाई। পরিশেষে চতুর্থ উপায় অর্থাৎ বহুদর্শন দ্বারা যে জ্ঞান छे० भन्न इक्ट भारत छाक्षक छित कल्भ कतिया ह्युक्तिक নিরীকণ করিলাম, ভাহাতে আমার এই আশ্রেষ্ট জান হইল रा श्रक्ति निर्मातकार शांकियां अस्तर केश्रर किया भ-দ্ধতি অরপা হওয়াতে সকল কার্যের মূল-সূত্র ধারণ করিয়া

নিঃস্তব্ধে তাহাদিগকৈ এমত নিয়োজিত করিতেছেন যে কোন ক্রমেই তাহার কিছু মাত্র অন্যথা হয় না, যথা কতিপায় আদিভূত, বস্তু সংখ্যাতে ষট্পঞ্চাশতেরও অতি-রিক্ত হইবেক, ইহাদিগের সমন্বরে জগৎস্থ সমস্ত বস্তুর रुशि श्रिज इरेट्डि, এवर रेशिम्टिश्व विष्ट्रिम मिरे अकल जावांत लग्न शाहित्वहा किन्छ हेरानिशात क्षण रकान कारल है नाई, रकान (नक् शत्र क्वेंटन क्वानिरगद क्टिवल পরস্পর বিচ্ছেদ হইয়া পুনশ্চ অন্য দেহ রচ-নায় প্রবৃত্ত হয়। এইরূপ ক্রমাগত ইহারা দেহের রচনাও बार्भाई ब्रेड जार्ड, रायम एक जार्डोलिको डाबियो उ९ इसे-कानि महकाद जमा अद्वोनिका मिर्मि इहेशा शांक। जड़श्र একবার যাহা তিনি সৃষ্টি করিয়াছেন তাহার হাস রুদ্ধি না इहेरा। ममजारिक जाड़ि এवर उरकार्ग अयुक्त उर्পाइ ७ ४१म मय-পরিমাণে আছে। এইরপ নানাবিধ পরিবর্তনে केश्रद्रत धरे जहुउ नीना श्रामु करेंग्ड धर धरे পৃথিবীও ইছার উপরিস্থ সমস্ত বস্তুকে সমাক্ প্রকারে मः यक कतिया देशानिर्गत तकात कारण मः शाणिक करि-साष्ट्रम। ठकुक्कीलम कदिश्च (मिश्टिल जाभामिरगद एइ অনুমান হইতে পারে যে, এই ভাগতে কোন ার অকর্মণা अदश्राश्रम नाई, मकल्लई सीग्रर कार्या निगुक आहु, यथा, कार्जिक निरुपानुभार अर्जिक (ममीकार्यान इरेश) जा-लाक श्रेमारिन मकन वसुरक माउउन कहिएउइन। शृथिनी नक्त हेडार्गि ममूनांश (महे स्रात्क श्रित्वकेन क्रिया पूर्णाय-मान इंडग़ांट निवादां जि धवः भीठ, गीय, वर्श अकृ ि अकृ,

मकलात পরিবর্ত্তন হইতেছে। পৃথিবীস্থ বস্তু मकलाর গমন।-शमन ममूनांश कि जान्हर्या मृना इरेटिह, यथा, পर्वटिंद নানা স্থান হইতে ক্ষুদ্রং স্রোত একত্র মিলিত হইয়া রহৎ नम नमी ऋर्भ मयुक्त जल शिशां यिखिङ इरेडिहा थवः मयुक्त হইয়া বরফ, কুয়াদা এবং র্ষ্টিরপে ভূতলে পতিত হইয়া পৃথিবীম্ব সমস্ত বস্তুকে তৃপ্ত করত পুনশ্চ নদ নদী প্রবাহে मगुरा जामिशा डेপछिङ इहेरङ्ह। धहे श्रयुक मागुरिक জলের দীমা সমভাবে থাকে, এবং তদ্রপ জুয়ার ও ভাটা ও কংন বাত্যাঘাতে জলের গমনাগমন ক্রমাগত সম্পন্ন হই-তেছে। বায়ুর গমনাগমন কখন দক্ষিণ পূর্বে কখন বা উত্তর 🖚 পশ্চিমে সঞ্চালিত হইতেছে, কিন্তু স্থান বিশেষে ঐ সকল अलित পরিবর্তনত দেখিতে পাওয়া যায়। यनिও বায়ুর সঞা-লন কোন ২ সময়ে কোন স্থানে অনুভূত না হয় তথাপি বায় পরিমাপক যান্তে পরীক্ষা করিয়া দেখিলে বোধ হইবে যে यामुकशन श्वित्रकारव शास्क ना। शृथियीत डेशितिकारभेड এইরূপ পরিবর্ত্তন হইতেছে। অতিশয় কঠিন শৈল সকল ভালিয়া মৃত্তিকাশায়ী হইতেছে, কোন ভূমি ভালিয়া অধোভাগে গমন করিতেছে, কেহ বা জ্রোতে ভাসিয়া স্থান-कृष्ठ करें एक, जनश किर छेर्न गामी, किर ना आशामी करें-তেছে এবং কেছ বা ভূমিকম্পা দারা বিলোভিত ছইতেছে। ক্ষুদ্র পর্বত সকল ভাঞ্চিয়াজল প্রবাহে ভাসিয়া যাইতেছে কংন বা পর্বত মধান্থ অতি নিম স্থান পরিপুরিত হইয়া উচ্চ इरेटिए, कथन कलांभा अम्यूरायत उन एक इरेश किन

मृखिकाविनिष्ठे इरेटिड्। এरे श्रकार्त कथन जात्ना कथन অমুকার, কখন শীত কর্থন প্রীমা, কখন শুন্ধতা কখন আর্দ্রতার আবিভাব হইয়া আসিতেছে এবং প্রতি ঘণ্টায় উত্তাপ এমত পরিবর্ত্তিত হইতেছে যে তাহা আমাদিগের ইন্দ্রির অগো-हत्। आयोक्तिशंत (मर्ट्य विषयः यस्ति। मिर्वण कितिशं (मिर्विल অবুমান হয় যে নানা প্রকার পুরাতন প্রমাণু সকল বহির্গত হইয়া তাছাদিগের পরিবর্তে তৃতন পরমাণু সঞ্চার হইয়া नदीद्रक दक्षिनानी कदिएउट्घ। आमानिर्शद आंश्रंदीय प्रदा অচেত্রন উদ্ভিক্ত এবং মাংস, এই তিন প্রকার বস্তু উদরস্থ করা-তে ইহারা পরিবর্তিত হইয়া রক্তোৎপত্তি করিতেছে, এবং তাহা ঘর্ম ও প্রপ্রার পরিণত হইরা শরীর হইতে নি-র্গত হইতেছে, এবং পুনশ্চ রক্ত আদিয়া সর্ব্ধ স্থান পরিপরিত করিতেছে। নিয়ত এইরূপ হওয়াতে মনুযোর দেহ ১০।১২ বৎসরের মধ্যে এমত পরিবর্তিত হইয়া যায় যে তাহাকে পরিচিত করণের কোন চিহ্ন থাকে না। এইরপ সকলই द्रिक পाইতেছে, এবং অবশেষে কালআমে পতিত হইয়া বিনষ্ট হইভেছে। অভএব ক্রমাগত পরিবর্তিত হইরাও প্রাক্ত-তিক অনিবার্থা নিয়মে সকল বস্তু এমত আবন্ধ আছে যে কোন প্রকারে তাছার অনাথা হইবার সম্ভাবনা নাই এবং हेशांक अवलयन करिया मकल वसु श्रेन्श्र श्रिकार्द्र डेशद निर्देत कदे की तर कार्या मणान कदिए उत्भागा व धकज कित्रिश जनताकन कितिल निरिट्टम इहेट भारत य रेशां कवन क्रगां वर्ष डेलकां स्रमाधन इरेजिए।

य मकन नियम रुखि श्रिजि श्रानार्यंत्र कार्यं, जार्यामिशाक

অবলম্বন করিয়া পর ত্রিবিধ বস্তুতে সংস্থাবি গতেত্ৰ উদ্ভিক্ত এবং প্রাণি সমূহ, কিন্তু । तर अबद अवदे বিভক্ত হইয়াছে, যথা छोतन ना शाकार्ड नेश्वत हेशानिगाल शिक्य दिनिष्ठे कादन गाहै, এবং তৎপ্রযুক্ত চলংশক্তি गाहे (कवल जुला वसु मश्रांता, त्रांभिर এक ब इहेशा हिमिनीन इहेशा थांतक, विक जन्छ এवः উদ্ভिक्ति निर्मात को दन थाका कि की-शार्थ हेशानिराधित जानास्त्र मामादिश यस निर्माण करिशाहिन, ध यञ्चाहा वाश दञ्चत तम পরিপাক পাইয়া ইহাদিগের শ-तोत हिम्म इनेशा शांदक, उथ्थायुक धने पूर्यंत महिं। जाति कि कूने 🖚 বিভিন্নতা দৃষ্ট হয় না, কেবল জন্তুদিগোর নাগায় উদ্ভিক্তদি-গের চলংশক্তি নাই। ছুরের যন্ত্র সকল, আকারে এমত रिनक्षा इहेशाइ (य मुखिभाउ माद्व ठाइ। छाउ इउश याष्ट्रिक भारत। अक्रिकित अधाम स्थी, जीत, मनुषा जनिभ পক্ষাদি প্রাত্ত দর্শন করিলে তাহাদিগের অভ্যতরত্ব যতে जानक रिलक्षणा मुखे इय़, यथा मर्शकां जित इस श्रेम ७ कर्ष माहे, এবং कांश्वांत्र या ठक माहे, किन्छ भारीदिक (कांम कार्यात उन्हें मुखे इस मा; कातन की मकल की त्वत हिन्द्रात কার্যা অভান্তর মৃত্রের দ্বারা নির্বাহিত হইয়া থাকে। যেমন হস্ত পদ না থাকায় সপদিগের দেহ বক্তভাবে নত হওয়াতে তাহাদিগের গমমাগমনের কার্যা নিস্পাদিত হই-(उ.इ., मिरेक्सभ कल गर्धा এक श्रकांत्र जानुमा की है जार्ड যে আমাদিগের দর্শনেন্দ্রের অগোচর হওয়াতে প্রতিদিবস

জলের সহিত আমরা তাহাদিগের লক্ষ ২ ভক্ষণ করি, কিন্তু অনুবীক্ষণ যন্ত্রে তাহাদিগকে দেখিলে বোধ হয় যে ইহাদিগের কোন ইন্দ্রিয় নাই, কেবল এক পিণ্ডাকার মাত্র।

कक्रितिशंत (अगीमाधा गंगा कत्रा याहेट भारत मा। रक्षकः कक्र-निर्शिय नाग्य जोक्निरिशंत मयुनाय जाक जार्ड, यथा जाएड-দিগের অতের ন্যায় ইহাদিগের বীজ ভূমিতে পুতিলে জল বায় এবং উত্তাপের পরিমাণাত্দারে অঙ্কুরিত হইয়া চারা উৎপন্ন হইয়া থাকে। যাহার যে রূপ অভাব তাহার। অভাবানুসারে তাহার প্রতি দেইরপ বাবস্থা নির্দিষ্ট হইয়াছে যথা, কেছ জলে, (कश खुल, (कश रा द्राकाशदि, किश रा शर्दाणशिद छे९शह इहेश शांक। পরে তাছার। প্রেল হইলে মূলাগ্রভাগ এমত भाषक निक्रिं जाइंड इहेरी थारक य उम्रादा श्रीयरी হইতে রস, অনবরত আক্লাট হর, এবং প্রকাণ্ডের কার্চে রস मधानित इहेशा भाषा ध्वांचा निशा जरामास भावत छेशरि-जारिश जामिया डेलिखिङ इय जर उथाय ख्रांत डेडार्ल পরিপাক পাইয়া কিয়দংশ ঘ্রা হুইয়া বহির্গত হুইয়া যায়, जारिनकोश्न পত्रित निम्नारगत निता निमा अर्थागांमी - इर्ल পाज़र मोगाञ्चार्थां जार्थां जार्थ क उक्छ कि । क्रिस जार् उद्योद । वार्ष ज्यापा প্রবেশ করিয়া ঐ পরিপক রদের স-रिउ गिथिउ इनेश উ सिकानिशात की तामा भागाणि तम श्रीखंड इनेशा छोट्लंद मधान्य भिद्रानिशा श्रेनर्गमन कोट्ल देशाद কিয়দংশ স্থানে২ অবস্থিতি করাতে নূতন কাঠের উৎপত্তি

সহকারে প্রকাশু রদ্ধি হয়। ক্রমাগত এইরপ হওয়াতে তৃত্র শাখা পল্লব উৎপন্ন হইয়া পুজা এবং ফলের উৎপত্তি হই-তেছে। পরে ঐ সকল কার্য্য নিজ্পাদিত হইলে অবশিষ্ট অ-শার অংশ মূলাগ্রভাগ দিয়া বহির্গত হইয়া যায়।

ইহাতে কোন ব্যক্তি জিজাসা করিতে পারেন, যে রসের গ্রমনাগ্রমন এককালে এক স্থান দিয়া কি প্রকারে হইয়া शारक है . छोड़ात छेड़त धरे य পतिभक तम অভिশয় গাঢ়, এবং আরুষ্ট রস তর্ল, অতএব গাঢ় রস ইহাতে নিম্ম इरेश दहिश्व इरेश यात्र। श्रुष्ण मस्या इरे यक जार्ड औरकगत এवर श्राकगत। श्राकगता खानीत আকার এক বস্তু আছে তাহার ভিতর রজঃ উৎপর্ন इरेशा थारक, शेर्ड इक्ट श्रिशक रहेल थे स्नी विमारग পর্বাক বহির্গত হয়। জীকেশরাপ্রভাগেও আটার ন্যায় এক दक्ष छे । भन्न इहेना थारक, छेक तकः वामुमः र्यार्ग अथवा প্রজাপতি প্রভৃতি কোন কটি সহকারে স্ত্রীকেশরাপ্রভাগে পতিত হইলে তাহাতে দৃঢ় রূপে সংলগ্ন হইয়া থাকে। ঔ दक्षः इरें ए खूबर मांनी मकन रिशंड रूरेश औरकनंदरक विमीर्ग करिया वोज्ञाकांच भर्यास প्रातम करितन शूर्ण्यद গতের সঞ্চার হয়, এবং পাপড়ী ও পুংকেশর সকল খসিয়া পতিত হয়, কেবল ক্রীকেশর একাকী রন্ধি পাইয়া ফল হইয়া छे हो। भारत धो कन स्थक इहेश। शिंडिड इहेर त्रक विद्याप অবস্থা প্রাপ্ত হয়। যদি জন্তুদিগের সহিত এত দ্বিধ্যে তুলনা कर्ता योग তবে সমুদয় একা ছইতে পারে, यथा, জखरा वाष्ट्रांत कतित्व के वाष्ट्रांतीय ज्वा मकन श्रीकष्ट्रांनीरिक

সমাগত হয়, পরে, ইহার রস রক্তাশয়ে উপস্থিত হুইয়া রক্তের উৎপত্তি করে, এবং তথা ছইতে ফুসফুসীতে গিয়া বাতাস সংযোগে ইহার ঘোর লোহিত বর্ণ হয়, এবং পুনশ্চ তাহা রক্তাশয়ে আসিয়া উপস্থিত হইলে তথা হইতে धमनी निया भंदीतमय गांशुङ रहेया প্रकार, एक, निकीरन প্রভৃতির উৎপত্তি করিয়া পরিষ্ঠত হইবার জন্য পুনশ্চ ঐ क्मकृमीएं जामिया डेशिविड इया। এইরপ , क्रमागंड इउगार जलामिरगंत भंदीत वर्षिङ इहेगा थाएक, এवर जो পুৰুষ সংযোগে সন্তানেংপতি হয়। অতএব আহার, নিজা বিহার ইত্যাদি বিষয়ে উদ্ভিজ্ঞাণ যদি জন্তদিণের তুলা হয়, এতত্বভাষের মধ্যে বিভিন্নতা নাই বিলক্ষণ প্রকাশ পা-है(उहि, किन्न ভिन्नश्रकादि यहित दैनलक्षा हहेग्राहि। অতএব উভয়ের উৎপত্তি এবং রুদ্ধি বিষয়ে যদি কোন বিভিন্নতা না থাকে তবে পালিত জন্তদিগের নাায় উদ্ভিক্ত-দিশের প্রতি ব্যবস্থা না করিলে কখন উত্তমরূপে তাহাদিগের উৎপত্তি इहेट পারে না। বিশেষতঃ উদ্ভিক্ত এবং জন্ত গণ এমত স্থিরতর সম্বন্ধে আবন্ধ আছে যে, যদি ইছারা পরস্পর সাহায়া না করে তবে এক মুহূর্ত মধ্যে মহা প্রলয় इरें भारतः, कांत्रगत्रमाय्य निमात भत्रीका के वा निस्तिभित्र হইরাছে যে, জন্তরা যে নিশ্বাস পরিত্যাগ করে তাহাতে जडाख विवाक छन जाएइ, डेसिक्बमन (महे मकन असदश করিয়া ইহাদিগের পরিক্ত বায়ুর সহিত মিশ্রিত করত धो दिशंक छन मश्यांभन भूक्षक क्रक्षित्रात कीवन दका क्रिडिट्ह। नद्रशंग यथन (द्रार्शिद क्रिड़ाल धार्म পिडिड

হইয়া অসম যাত্রশায় কাতর হয় তখন পর্বতাকার স্বর্ণরাশি প্রদান করিলে যে উপকার বোধ না হয় এক সামান্য উদ্ভিজের গুড়া দারা তাহাদিগের দেই যাতনা নিরাকরণ পূর্বক ততোধিক উপকার বোধ হইতে পারে এবং তদ্য-তীত আমাদিগের আহারীয় বস্তু শ্যা ও গৃহনির্মাণ করিবার নানা প্রকার দ্রব্য, ইত্যাদি দেহযাত্রা নির্কাহের य मकन প্রয়োজনীয় তৎসমুদয় উদ্ভিক্ত হইতে প্রস্তুত र्य। অতএन य मकल बख रहेए এত উপकांत मूर्ल তাহাদিগের প্রত্যুপকার করা উচিত। যদিও সত্য বটে স্থানেং ভিন্ন প্রকার উদ্ভিক্ত উৎপত্তি হইনার উপায় স্বাভাবিক निर्मिखे इहेशांट्इ, यथां, तम मर्था मनुशामिशांत काम मा-राया वा जित्र क व्यक्त कि क्रिकारी निक्शिष्ट रहेशा शांक তাহা নিরীক্ষণ করিলেই ইছা সপ্রমাণ হইতে পারে। আমরা পরম্পরায় অবগত আছি যে কোন্ব রাজ্যমধ্যে কেছ এবিষয়ে হস্তার্পণ করেন না, যেহেতু তথাকার বনমধ্যে স্বাভাবিক ক্ষিকার। নির্বাহ হওয়াতে তদ্বি সেই স্থানের মনুষ্য-निर्गत डेशजीनिक। निर्दाष्ट बहुता थारक। यथा उत्तरमण, शतक অনায়াসে তাহাদিগের সমুদয়কে একতা পাইবার জনা ক্ষ্-कार्या करा मनुयानित्रात वित्निय श्राह्माक्षमीय इन्यार्छ।

উক্ত প্রকার উদ্ভিজ হইতে জন্তদিগোর যেরপ উপকার দর্শে তদিবরণ যৎকিঞ্চিৎ লিখিয়া এক্ষণে তদারা যে প্রকার মনের সংখ ও শারীরিক সংস্থতা জন্মে তদিবর লিখিতে প্রন্ত হইলাম। এই পৃথিবীতে রাজনেবা, বাশিজা, এবং কৃষিকার্যা এই তিন উপায় দারা মনুষাদিগের দেহযাত্রা

निकां इरेटए। किंह क्यिकांग शूर्कांक इरे कार्यात्र जामूल इहेत्राष्ट्र, कांत्रग कृषिकार्रिगां १ भन्न ख्वा मकल जिन অংশে বিভক্ত হইয়া প্রথমাংশ রাজার রাজ্য জ্না রিক্ষিত হয়, দ্বিতীয়াংশ ক্ষক আপনি গ্রহণ করে, অবশিষ্টাংশ वाणिका कार्या निराधिक इहेरा शांक। शृथियीत প्रथमा-বস্থায় যখন রাজকার্যা এবং বাণিজাের কোন সূত্র ছিল না उथन छेमद्र পंরিপোষণ জনা সকলেই ক্ষযিকার্ষের নিযুক্ত ছिলেন। পরে অন্যান্য কার্য্যের আবশ্যক হইলে কেহং তাহাতে निशुक्त হहेलन वर्छ, किस क्रम्रकद्रा मकलरकहे প্রতিপালন করিয়া থাকে অতএব যিনি যে কার্য্যে প্রব্রত্ত থাকুন, কুষ্কের সাহায়্য অভিলায় করেন না এমত কেহ नारे, जन्नद मकनकार्द रेशांज दिल्य मानार्याभी হওয়া অতি কর্ত্রা। অনেকেই আপনাকে সুখী জান করিয়া ক্ষিকার্টোর পরিশ্রমে প্রব্রত হইতে অন্দীকার পা-इंड পারেন। किन्धु जुश्रामार्थ कि धाना छेशार्किंड इइश्रा थारिक ? जाजि छेछम तमन जूनर्ग तिजृशिक इक्टेलिके कि सुधी इत ? जाशवा जालागात वर्गाठार्थन इहेता जाउँ लिकार्शित তাকিয়ার উপর দেহ হেলন প্রকে নিষ্কর দিও হইয়া विभिन्न शिक्ति कि सूरी इहेड शादा? लचाह नहा। কারণ এতাদৃশাবস্থায় মনুষাকে বাহা গৌন্দর্যা দেখাইতে পারে বটে, কিন্তু আন্তরিক হু:খানল তাহার দেহকে অহরহঃ দয় করিয়া খাকে, যেহেতু মনের সস্ভোষ না इहेल मनुषा कथन जूथी इहेए भारतना। धरनाभार्करन কেবল আকাজতা রদ্ধি হইয়া থাকে, কোন কালে তাহা নির্ভ

হয় না। আলেকজাণ্ডার বাদশাহ এই সসাগরা পৃথিবী জয় क्रिय़। समुख दोखा थे थे थे क्रिय़। यथन खीय वोक्रविनश्राक বটন করিয়া দিলেন, তখন এক ব্যক্তি তাঁহাকে জিজাসা ক-রিলেন যে তাঁহার আপনার জন্যে কোন্রাজ্য রাখিলেন? তাহাতে তিনি উত্তর করিলেন আমার অন্য রাজ্য জয় করিয়া লইবার আরো আকাজ্কা আছে, অভএব আকাজ্কার শেষ नारे। लिमिशा (मनीश महाद्रोक किनान मानन नामक এक মহাপণ্ডিত্রকে আপন সভায় আহ্বান করিয়া আপনার সমুদয় र्धश्रमा अनर्भन शृद्धक जिल्लामा कितिलन य शृथिवीत गर्धा সুখী কোন্ ব্যক্তি? তাহাতে তিনি উত্তর করিলেন, "এই शृथिवीए अथी तिइहे नष्ट, তবে क्रवकित्रांत्र शृष्ट्व मध्य যৎকিঞ্চিৎ সংখের আবিভাব দেখিতে পাওয়া যায়। তাহাতে রাজা ক্রোধান্তিত হইয়া ঐ পণ্ডিতকে অবজ্ঞা করিলেম। अংই-किছू निवमारिख शांत्रमा (मगीय महात्रांक माहेतरमत महिङ युष्क পরাভত হইয়া তাৎকালিক প্রথানুসারে ভাঁহাকে कामो निवांत উদ্যোগ इहेल তিনি मान्यत नायाछात्रन शुक्रक উटिछ: यदा ही एकांत्र कतिया छिटिलन। माइतम তাহা অবণ মাত্র তৎকারণ জিজাসা করিলেন। তি-নি তাঁহাকে তাবদুতাত্ত অবগত করিয়া কহিলেন যে यिन जिनि जीमामिनीय क्रमक इहेरजन उर्व जांदाक अहे. कांभी कार्षत्र निकं जांभिए इस्ड मा। मनूरवात्र वामनात्र অন্ত নাই অতএব তাহাতে কিরপে সুখোৎপত্তি হইতে পারে। কিন্তু থিনি বিষয় বাসনা পরিত্যাগ পূর্বক স্থান্তর मर्था मन विखीर्ग कित्रिश खानानू भील्य आमन मर्खाश

कतिएङ्क जिनिहे सूर्यंत त्रोट्का अधिका इहेग्रोट्कन। অনুসন্ধান করিয়া দেখিলে প্রায় কাছাকেও এতদ্রপ দেখিতে পাওয়া যায় না, তবে ক্লকদিগের মধ্যে কিঞ্জিৎ স্থাপ্র উপলব্ধি इहेश शास्त्र। कात्र जैहानिशात मन क्रिन-कार्रिं। ते शोकांश यात किहू (उरे वामना नारे, (कवल কি প্রকারে ভাঁহাদিগের ক্ষেত্রাৎপন্ন রক্ষ সকল উত্তম-রূপে ফলবান হইতে পারে, ইহার কারণানুসন্ধানে,তাহাকে निरंख जनस्म कतिएक इर जाहाएक क्रमभः क्रामीश्रद्ध रुकिरकोमल-नोना अगर ठारात जलःकता छेमग्र रूप-हाएक मि भद्रमारम लाएक भी व इहेरक भी दि। वित्नरकः তাহার অঙ্গ প্রভাষে পরিভাষে স্থালিত হওয়াতে বহু ঘর্ম বহির্গত হইয়া আভারিক ক্লেদ নির্গত হইয়া যায় এবং কুর জড়তা কোন স্থানে আর থাকে না। পরে দি-दोनमांत्म कृषक सीग़ कारा ममाधा करिया गथम गृह् পুনরাগম্ম করেন তখন তাঁহার মন প্রফুল হইয়া (थ्रेमान्स (थ्रामीत ७ म्हानिमारक मर्गन कराइ পরিশ্রমের ক্লেশ তার থাকেনা। অবশেষে ক্ষ্পায় কা-তর হইয়া তৃপ্তিপূর্বাক ভোজন করিলে সংখর নিদ্রা आमिशा आंकर्रण करत এবং अटिकट्ना र भनी यांभन করিয়া প্রাতঃকালিক ক্রিয়াসকল নিয়মিতরাপ সম্পন্ন হও-য়াতে ভাঁছার মন সম প্রফুল থাকে, তংপ্রযুক্ত ভাঁছার শরীর সতত রোগগ্রেন্ত হইবার কোন সম্ভাবনাই থাকে না। এবং উছির মনোমধ্যে কোন ভাবনা থাকে না, কেবল পরিবার প্রতিপালন করিবার আকিঞ্চনে কৃষক আপন পরিশ্রম

मकल कतिएं भीरतम, এই जमा अयं वाक्तिक श्रभी विनियां ज्याना स्वितांत क्रिटिंड इहेरिक। ज्ञान्य ध्रमें स्न-থের রাজ্যে অধিরত হইবার মানসে রোমদেশীয় মহারাজা দিনদিনেটদ রাজায় পরিত্যাগা করিয়া ক্ষিকার্যাে প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন এবং পুনশ্চ যখন তাহাকে রাজপদাভিনিক করণাভিলাবে রাজদৃত আহ্বান করিতে আসিয়াছিলেন তৎ-काल जिनि जोशांत शीरक जारकश कित्रा किश्लन, " अहे वरमत এই কোতে दीक दशन करा। इहेल मा, कार्रा अनुर्दाध প্রযুক্ত আমাকে রাজকার্য্যে নিযুক্ত হইতে হইল"। অতএব व्यामाभिर्गत व्याधिक माठ रिक्त्रां क्षिकार्या डेशकांत्र मर्ट्स उम्रिदर्श क्षकाम क्रिएड क्षर्र इंडर्शाएड क्रे अनुमान् इरेज्डि (य, मकल दाक्तिव भिष्क क्रविकार्या कवा कर्ववा। साजारिक कृषिकारा (मिथिश) आभामिश्रत धरे (वाथ दरे-তেছে যে, রক্ষ হইতে স্থাক ফলের বীজ ভূমিতে পতিত হইলেই তাহা অঙ্করিত হইয়া চারা উৎপন্ন হয়, এবং क्षे ठारा हिकिगाली इहेरा शर्र फलवान इहेरवक व्यव शुक्रा-(य्रोजन मगुन्य निर्मादिक जोइ। यथा, পृथियी जाधाद इहेशा वादि मश्यार्ग जुगानि नाना वस शहाहेशा धक्छ মিশ্রিত করণ পূর্মক রসপ্রস্তুত করিতেছে, উদ্ভিজ্ঞাণ সেই दम ভোগाएउ स्था छेडाएभ भदिभाक भारेशा कल कूल. শোভিত হইতেছে, বায় সতত সংগালিত ইইয়ারস প্রদানে তৃত্ত করত উহাদিগের নিশ্বাস প্রশ্বাসের ক্রিয়া নির্বাহ कत्रिरङ्हः अञ्च मकल পরিবর্ত্তি इहेश অর্থাৎ পর্যায়ক্তমে গ্রীষ্ম বর্ষা শীত আগমন পূর্বক স্থীয়ং তণ প্রকাশ করিয়া

উহাদিগকে कथन इक्तिमील, कथन कलवान, এवर कथन वा धरे इरे कार्यात वित्रिक कतिरक्छ। स्यात देखारी वाति मकन ध्रमोकारत शरागमण्डल विखीर्ग इहेत्रा स्मात्रभ धात्रग পূর্বাক স্থানে২ ব্যাপৃত হইয়া বারিবর্ষণ করত সর্বা প্রকার উদ্ভিজের উপরি পতিত ছইতেছে। রক্ষমূলে যে সকল रीक পতिত হয়, তাহা সমুদয় অঙ্কুরিত হইয়া চারা উৎপন্ন হইবার কিছুই সম্ভাবনা নাই, কিন্তু উহা নদীর স্রোত বা বায়ু সহকারে অথবা জন্তদারা স্থানেং চালিত হইয়া পড়ি-ल वार्तिन-वार्ति मश्यार्श अङ्कृतिङ इहेश (महे खां डि वह मः थाक तक उर्भन्न इरेजिहा। यनि जभन कोम मार्श्या বাতীত স্বভাব কর্তৃক এপ্রকারে ক্ষবিকার্য্য নির্ম্বাহ হয়, তবে মনুষ্যাদিগের এবিষয়ে হস্তার্পণ করিবার প্রয়োজন কি? স্থিরতর্রূপে বিবেচনা করিলে ইহাই প্রতীত হইবেক य यां जां विक निश्राय याज्ञ थे कल कुल छे ९ भन्न इहेशा शास्क তাহা মনুষ্যজাতির অভিপ্রায়ানুযায়িক কখন নছে। তৎপ্রযুক্ত ভাছারা ক্ষিকার্যোর মানাবিধ কৌশল সৃষ্টি করিয়া স্থাভা-বিক অপেকা উত্তমরূপ কল কুল উৎপত্তি করণের উপায় कत्रिशोष्ट्रिन, यथा, शोलावकूल खांडाविक शक्षमम इरेग्ना थाक, এবং অবশিষ্ট কেশরে পরিপূর্ণ কিন্তু अध्यात किरो बात्रा धे क्लात मकलात পतिवर्ध वस्मरक मलात छे९-পত্তি হইতেছে তাহাতে ঐ কুল শোভান্বিত হইয়া সোগন্ধে আমোদিত করিতেছে।

বীজ হইতে যে সকল চারা উৎপন্ন হইয়া থাকে তাছার ফলের গুণ তাদৃশ হর না, তৎপ্রযুক্ত যোড় কলমে, গুটী

कन्या, मां कन्या धवर नांचा क्लिम कन्या ठांत्रा छेर्लान्न बादा कल कूलाव छे कर्व दक्षि इहेग्रा शांक, यथा, कविषया, थामु, निष्टू, रेडाानि इक छेङ প্रकार्त्र डेश्श्रम ना कतिन, कन कूरलब छन পরিবর্তিত হইবার সম্ভাবনা। গেড় হইতে যে সকল উদ্ভিজ্ঞ জিখিয়া থাকে তাহাদিগের স্বাভাবিক অবস্থায় আল্গা মৃত্তিকার অভাব প্রযুক্ত গেড় রদ্ধি পাইতে পারে না। কিন্তু কর্ষিত ভূমিতে রোপণ করাতে এক্ষণে রহদা-কারে উৎপত্তি হইতেছে, কারণ তদ্বারা অধিক রস শোষণ शूर्वक शूरु इहेश। इकि भाग, यथा, मान्याम, मूना, शास्त्र, करू, मानकरू, इंडािन। जर्भन्न, जालून वीज वर्शन क्रिल অতি ক্ষুদ্র আলু উৎপন্ন হয়, কিন্তু উহার চক্ষু কাটিয়া উক্ত श्रकात ज्भिए श्रिज्ल इकिनीन इस्टिक। कननी त्रक সকল কৰিত ভূমিতে পুতিবার পূৰ্বেষ যখন বন্য অবস্থায় ছিল, তখন উহার ফল বীজেতে পরিপূর্ণ থাকিত কিন্তু এক্ষণে বিবেচনা পূর্বাক রোপণ করাতে বীজ সকল লোপ পাইয়াছে ও শস্য অধিক হইয়াছে, অতএব যে কারণে ফল ফুল এরপ রদ্ধি হইতে পারে, তাহার বিষয় জাত হওয়া অতি कर्त्तरा, धक्रमा जामि क्रममः धरे विरस প्रकामं कद्रिए প্রবৃত্ত হইলাম। আদে ইছাই বিবেচা, কি নিয়ম অবল-यन कत्रित्न क्रिकार्या निशून इत्रां गारेख भारत। जला-দেশে ক্ষিকাষ্য যেরূপ অবস্থায় প্রচলিত আছে তাহা मिथिया जामानियां अनुमान इक्टिइ य क्लिनियां मधा এবিষয়ে নিপুণ হইবার কোন বিশিষ্ট ধারা নাই, কেবল স্বাভাবিক নিয়ম দেখিয়া কতিপয় উদ্ভিচ্চ রোপণ করিবার

বাবন্থা পূর্ব্বাপর চলিত আছে, তাহাই এদেশীয় কৃষিকার্ষ্যের আমূল হইয়াছে। কিন্তু অন্যদেশীয় কোন চারা আনিয়া এই দেশে রোপণ করিবার ব্যবস্থা কেছ জ্ঞাত নছে, এবং কি প্রকারে ক্ষিকার্যের উন্নতি হইতে পারে এমত চেফা কাহারও নাই। প্রতিবৎসর বর্ষাকালে গজার জল প্লাবিত হইবায় উহার পলী পতিত হওয়াতে ভূমি এমত উর্করা হয় যে সার দিবার আর প্রয়োজন থাকে না, এই জনা এতদে-শীয় লোকেরা ভূমিতে সার দিবার কোশল বিষয়ে চির-অজই রহিয়াছে। কেবল স্বাভাবিক বদান্যতার উপর নির্ভর করিয়া लाकिनिःगत खित्रकि भ जार्ड य वीक वर्षन कित्रल है छोत्रा উৎপত্তি इइ ७ পারিবেক। ইদানীং কলিকাতা বটানিক छेन्। न भः छोलन इंशांट क्रिकार्यात को न दिया कांबर वाकित वाह्यकि जियाराष्ठ्र। यनि এই मिट्स क्रिय-বিদ্যার শিক্ষা প্রচলিত হয় তবে ভারতভূমি শস্যশালিনী इरेश बदुर्गानिनी इरेरवन। आंगानिश्व अस्मिश जृिम मण्णूर्वत्रा क्रिकार्यात यांगा (निश्रा म्यामाधा अत्रथ जारक्रिश डेनर इरेडिइ य क्रिकारी निकार विवस कांन वाक्टिशे निश्रुण माश्रा नीलकत मार्श्दता धरे (माम আদিয়া बील दोशन कर्नावरत किছू निव कर्त हुई जिन लक होका डेशार्डन करिया महामान श्रम्भाग कर्यन, किस आमत्रा এই দেশীয় লোক হুইয়া কিছুই করিতে পারিলাম ना, कि जाम्बर्धा! हिन्दुनिरगत गर्धा क्रिकार्धात এज्ञर्भ ব্যবস্থাহীন অবস্থায় কিছু নূতন নিয়ম অবলম্বন করিলেই **७३ का**या উख्यक्रेश निक्षां इरेट शाब्रियक ७३ छना

क्रमकिमगीरक अहे छेशरमण मिर्छि ए। छ। दा छ। स्वारिव অনুবর্তি হইয়া যে সকল নিয়ম উদ্ভিক্ত রাজা মধ্যে ব্যাপ্ত আছে এবং যাহ। ইহাদিগের উৎপত্তি ও র্দ্ধির কারণ হই-शांक् उत्मगूमग्र अञ्चीलन शृंखिक क्रिविकारी ककन्। श्रेथ-মতঃ উদ্ভিজ্ঞদিগের স্বভাব কিরপ; দিতীয়তঃ বাহাবস্তুর मिश् छे मिश्कि मिर्गत जीनाना भाषा किया विकास कित्र भाषा । তৃতীয়তঃ দেশের অভাবানুসারে উদ্ভিজ্জ দিগের কিরূপ পরি-वर्जन इयः; ठजुर्यज्ञः कि कोनन द्वाता क्रिकार्य निर्माश कतिएक इहेरवक, इंडानि क्रांक नियमित्र यनि मस्मिन পূর্বক ক্ষিকার্য্য নির্বাহ করিতে পারেন তবে ইহার উন্নতি इरेवांत्र প্রতিবন্ধক কিছুই থাকিবেক না।

# क्षिमर्भण।

-o⊕oo⊕o-

### উদ্ভিজ্জ দিগের স্বভাব।

যদি উদ্ভিক্ষদিগকে জীবিত পদার্থ বলিয়া স্বীকার করিতে হয়, তবে পালিত পশুর প্রতিপালনের ন্যায় ইহাদিগের স্ভাবানুযায়ি ব্যবস্থা না করিলে কি প্রকারে তাহাদিগের রিদ্ধি হইতে পারে?

বে অবস্থায় উদ্ভিক্তের। জিঘিয়া থাকে তাহাকে ইহাদিয়ের সভাব কহিতে হইবেক, বিশেষতঃ স্থান এবং কাল ইহার প্রধান করিও হইরাছে, এই ছুরের সভাবানুদারে উদ্ভিক্তের। নানাবিধ প্রকারে জিমিয়া থাকে যথা, বারিজ, তরজ, গিরিজ, স্থলজ। অপর, কেহ শীতকালে কেহবা গ্রীম্মকালে কেহ কেহ বর্ষাকালে জ্যে। এতদ্বাতীত যাহাদিগের বীজ রসমুক্ত এবং আচ্ছাদন অতিশয় পাতলা তাহাদিগের বীজ ভূমিতে পতিত হইতে অপ্পারস সংযোগে পাঁচয়া নফ হইবার সন্তাবনা, এই জন্য ইহারা পুস্পাদতের উপরি অঙ্কুরিত হইয়া চারা রিদ্ধি হইতে থাকে পরে মূল দ্বারা মৃত্তিক। হইতে রস আকর্ষণ করিবার উপযুক্ত হইলে ভূমিতে পতিত হয়; এই রূপে এগেড ও গরাণের বীজ অঙ্কুরিত হইয়া থাকে।

गाउकलाई गांका वांकाद्य हिट्यत वांमांच माट्य विचारंक चांटक जाकात भूका छेटला इवेशा क्ष्मिकः मिट्स मुचिक वर्गा भएए। भारत कम छेर भिंछ बड़ाम देवा मृत्किं। विमीर्ग करन भूकि जिल्ल गारेगा जगांत गांक्सानित गांक, कारन गांक गहर मर्गार्ग हेड्राया मक्टे इंड्रिड लाइड, दहे कम मुक्स लिल्ड क्षेत्रा डेटिट्स को काल बेकानियात तील अक विक क्षेत्रा हाता वहिर्गंड करता कड़ांचे मृद्धि महिया देशामित नीट পাতना बाष्ट्रामन बाह्य, अहे खना एक मृतिकात अवर एक সময়ে ইহাদিগকে উৎপন্ন করিবার বাবস্থা নিরূপিত করা आছে। किन्नु मीटित अरमान यथन इंडामिशात रीक भति-शक इहेश। डेट्रे उल्काल याम मन्या कर्वक जुनिया तकिडी না হয় তথাপি বর্ষা আদিয়া উপস্থিত হইলে এ স্মৃটির ভিতরে থাকিয়া রক্ষা পাইতে পারে, কিন্তু ইহাতে অধি-কাংশ নম্ভ হইতে পারে। অতএব কোন চারা রোপণ काल हेशद अভावानुमाद मम् जार्याक्रम मा कदिल कना छ छ । इरेड भारितक मा। जान याराता जिला থাকে তাহাদিগের জনা কোন নিয়ম অবলহন করা চুক্কর, कांत्र ज्था या देश जेश निश्च खना मनुष्यात्र कांन कर्ष নিকাহ করিতে পারে না, কেবল জলের পরিমাণ বিবে-চনা कরা অভি কর্ত্বা। বর্ষাকালে অধিক জল প্লাবিভ হওয়াতে জলজদিগোর পত্র সকল নিময় করণ পূর্বক পচা-हेशा विनस्रे करत्र, उड्डामा श्रुक्तिगीत कान शास्त्रं नाना কাটিয়া অধিক জল হইবামাত্র বহির্গত করিয়া দিবে, এবং धमङ পরিমাণে জল রাখিবে যে ইহার উপরে জলজদিগের

পত্র সকল ভাসিয়া থাকিতে পারে। যদি কোন বৈদেশিক জলজ এই দেশে আনিয়া রোপণ করিতে হয়, তবে তাহার खना এই निराम প্রকাশ করিতেছি। ইহার বীজ পুষ্করি-भीत्र मर्था विखीर्ग कतिया निर्मिश कतिरल अक्रुति इहे-वात मत्मर थात्क, कात्रन जनमत्था (यत्रन উভान जाइ তাহা ঐ বীজ অঙ্কুরিত করিবার সমযোগ্য হয় কিনা তা-হা সন্দেহের বিষয়, এই জন্য এক গামলায় ুবালি এবং मात्रमृ छिक। ममजारा मिखिज कतिया পরিপূর্ণ করিবেক। পরে এ বীজ সকল ইছাতে পুতিয়া অনা এক গামলার खल जुनारेशा ताथित्व। यनि অधिक छेखार्थ आंत्रभाक इरा उत्व कल कमाहेरा। नित्व এवः जन्नं छेडान जावनाक इक्ट्रेल छल अधिक जालिया नित्र, ध्वे श्वकाद करितल धे वोक जक तिङ इहरवक। शरत हाता हिमिनोन हहरन श्रकतिनौ माक्षा এक जिरो करिया जाशां अशिवा निर्देश हैशां ज আর কোন ব্যবস্থা আবশাক হইবেক না, কেবল প্রাণ্ডজমতে জলের পরিমাণ বিবেচনা করিতে হইবেক, এইরপে বিক্টো-রিয়া রিজিয়ার বীজ রোপণ করিতে হয়। জলজের নাায় তকজের প্রতি কোন ব্যবস্থা আবশাক হয় না, কারণ তথায় क्रयत्कत श्रुत कान कर्म निकीष्ट श्रेटि शीट ने। श्रेष्ट्रात्री স্বভাবতঃ তক্তর কাণ্ড এবং শাখার উপরে জান্ময়া থাকে। যে পর্যান্ত ঐ রক্ষের শোষণ শক্তি না হয়, তদবধি বায় मर्यार्श (य द्रम প्रांश इश डाइाटिई इकि भीश। यि কোন বৈদেশিক তকজকে আনিয়া এইদেশে রোপণ করিতে इर उत्व वीक वर्षन कहिए इरेस कान हत्कत माधात

মিল্ল স্থানে বিস্তীৰ্ণ করিয়া আবশ্যক মতে জল দিবে কিন্ত हेरा कि विषयिनाक रहा उक्कना निवानमश्युक व्यथि जिहा জাতির চারা আনিয়া রক্ষের কাণ্ডোপরি বান্ধিয়া দিবে এবং প্রতিদিবস তাহাতে জল দিবে, কিম্বা কোন বাজের ভিতরে বা রক্ষের শাখাতে সাজাইয়া বান্ধের ন্যায় করিয়া তাহার ভিতরে রক্ষের ছাল পরিপূর্ণ করত তাহাতে धे ठात्रा मकल श्रु जिया किथिएर खल मित्र। धरे खांजि চারার মধ্যে বানিলা সমূহ মনুষ্যের অতি প্রয়োজনীয়, हेश्य कल्बत गास छान आरगामिङ करता यमि तांभन করিবার আবশ্যক হয় তবে ইছার শাখা কাটিয়া এক বালুকাপূর্ণ টবে পুতিয়া দিলে মূল সকল বহির্গত হইয়া চারা উৎপন্ন হইতে পারিবেক, পরে কোন রক্ষমূলে ঐ চারা मकन পুতিয়া ইহাদিগের চতুঃপাশ্বে ইফক সাজাইয়া দিবে। গিরিজ উদ্ভিজ মধ্যে মনুযোর কর্মের যোগা এমত কিছুই দেখি নাই, যদি এমত কিছু প্রকাশিত হয় তবে তাহা উদ্যানে রোপণ করিবার জন্য ভয় ঝামা কিম্বা খোলাকুচি সার মৃতিকা এবং বালি একত্র মিশ্রিত করিয়া এক টব পরিপূর্ণ করিবেক, পরে এ চারা তাহার উপরে পুতিয়া দিবে।

### चनक ऐखिएकात विषय।

ভূমিতে যে সকল উদ্ভিজ্ঞ জিমিয়া থাকে তাহাদিগের মধ্যে কতকণ্ডলিন মনুষ্যের অভান্ত প্রয়োজনীয়, তদ্ভিম অন্যান্য সমুদয় একণে অকর্ষণ্য বলিয়া স্বীকার করিতে
হইবেক, কারণ ইহাদিগের গুণ প্রকাশ নাই কিন্তু এ সমুদয় ছই শ্রেণীতে বিভক্ত আছে, অর্থাৎ একহায়নিক ও বহুহায়নিক। যাহারা বৎসরের মধ্যে নিরূপিত সময়ে জন্মায়
এবং পরে ফল ফুল উৎপাদন করিয়া কিছু দিনান্তে শুক
হইয়া যায় তাহাদিগকে একহায়নিক কহে। রোপণ করণ
কালে ইহাদিগের সভাবানুসারে মৃত্তিকার বিষয় বিবেচনা
করা অতি কর্ত্ব্য, কারণ এই সকল উদ্ভিজের মূল অধিক দূর
গমন করিতে পারে না, অতএব অতি নিকটে অধিক রম না
পাইলে ইহাদের জীবন কি প্রকারে রক্ষা হইতে পারে?

যাহাদিগের প্রকাণ্ডে এবং ফলে অধিক জল থাকে তাহাদিগার পক্ষে হাল্কা বালুকাময় ভূমি উপাদেয় হইতে পারে,
যথা তরমুজ, ফুটা, ইত্যাদি।

যাহাদিগের কাও মৃত্তিকাতে আচ্ছাদিত হইয়া র্দ্ধি পার তাহাদিগের পক্ষে মিশ্রিত মৃত্তিকা অতি উত্তম।

यादानिरात्र भाषा-विभिक्षे मूल তादानिरात्र शिक्ष हिक्श मृखिका डेशरगागिनी इरेंड शारत।

এই প্রকারে কোন স্থানে রুষিকার্য্য নির্বাহ করিতে যাইনে তথার কিরপ উদ্ভিজ্ঞ উৎপত্তি হইতে পার তাহা ঐ উপরি লিখিত নির্মানুসারে নিরপণ করিতে হইবেক। উদ্ভিজ্ঞানিগের সভাবতঃ উৎপত্তি হইবার জন্য ভিন্নং সময় নিরপিত রহিয়াছে, এজন্য পূর্ব্বে তাহা জাত হওয়া অতি আবশ্যক, কিন্তু বীজ প্রাপ্ত হইবামাত্র তাহা নিরূপিত করিবার এমত কোন উপার দেখি না।

উদ্ভিক্ত यामगीय इकेल डेका खिनातांत मगय मिथिया थू-নশ্চ রোপণ করিবার কাল নিরূপিত হইতে পারে। কিন্তু যদি বৈদেশিক হয়, তবে পরীক্ষা দ্বারা কিন্তা দেই দেশীয় কোন वाक्तिक किछोम। कबिल निक्तर्यन शहेर पादा। प्रक्रीका দারা নিরূপণ করিতে হইলে এই এক অতি সহজ ধারা আছে, यथा, এই দেশের মধ্যে শীত, গ্রীষ্ম, বর্ষা এই তিন কালে তিন বার বপন করিলে তাহা নির্দারিত হইতে পারিবেক। যদি अकारल वीक वर्षम कन्ना <u>इन्न</u> उरव के अबु डेस्टिक्बन सर्गारह महिल मिश्रिलन ना इंख्यांटि ज्यम्पूर्य नके इहेवांद्र मखावना, यथा, পालक भारकत वीख वर्षाकारल वर्शन कतितल किहूरे कल-দায়ক হইতে পারে না। যদি শীতল দেশীয় কোন বীজ বপন कतिए इश, उत्य अहे मिटन भी उन्न अथम अवस् है हो निर्भात পক্ষে অতি উত্তম সময় হইতে পারে। এই জন্য কপি, শাল-भाष, भोजद रेजानि मयुनाय भी उत्र आंत्रसरे दार्थन करा यात्र, कात्रन शुक्तां एक शूजितन अधिक वर्षात छातन शिवित्र। নষ্ট হইয়া যাইতে পারে।

বহুহায়নিকদিণের পক্ষে উক্ত প্রকার মৃত্তিকার বিষয় বিবেশ্চনা না করিলে কলাচ উৎপন্ন হইতে পারে না। যাহাদিণের মূল কোমল এবং রসে পরিপূর্ণ, তাহাদিণের পক্ষে বালি এবং চিকণমৃত্তিকাযুক্ত ভূমি উপযোগিনী হইতে পারে, যথানারিকেল রক্ষের মূল অতিশয় কোমল এবং রসমুক্ত এই জন্য বেহার প্রদেশের শুষ্ক কঠিন চিকণ মৃত্তিকাতে রোপণ করিলে ইহার মূল সকল বিদীর্ণ করণ পূর্ব্বক মৃত্তিকায় প্রবেশ করিতে পারে না এবং তাদৃশ রস পাইতেও পারে না, এজন্য বেহার

लामान कथन धरे हक छेरशन रहा मा, किन्छ योशिमान माथानिकिश्चम्म छोशिमात्र शिक्क धरे छान छेशबूक रहेट भारत, यथा, जामु, निष्ठू, रेडाानि।

### वाश्वस्त महिङ উদ্ভिक्क मिर्गत की बरना পरिया गि किशोत मञ्जू विषय ।

मृष्टिका, धरे कथक यस, উদ্ভिজ्জिनिशात्र উৎপত্তি ও त्रिक्त कात्रन श्रेत्राष्ट्रः उएश्रयुक्त रेशांत्रा शत्रियांनायूमाद्र উष्टिष्ठ-দিগের অন্তর্গত হইয়া তথায় স্বীয়ং অংশ সঞ্চয় করি-রা রাখে এবং কিয়দংশ বহির্গত হইয়া যায়। এইরূপ রাশিং ক্রমশঃ সঞ্চিত ও মিশ্রিত হইরা উদ্ভিজ্ঞদিগকে নিয়ত রুদ্ধি-नीन क्षिएंट्र, यथा, मूनाधां जारा किलिय हिस जारह उदा-द्रा शृथिवी इरें जिनाविध वस जलाद महिल मिलिल इरेगा পত्रि উভোদন করিতেছে, এবং পত্তের নিম্নভাগে যে সকল রম্ভ আছে তাহাতে বায় এবং বায়ু সংযুক্ত রস প্রবেশ করি-(उट्हा वरे इरे तम वकत स्वा छेडार्थ अक्तिभाक थारेता . इरे व्यथ्न क्रेटिहा क्षत्रमङ: এकाश्न मात्रङाग क्षकार माथा गार्श्ड इरेशा ग्डन कार्छ इक्ति कतिएउए धवर जना क्रमीयांश्य वर्ष इरेया जे शज बक्क निया विर्यं इरेजिए। यमानि र्क होत्रि वख्नत्र (कौननम्बात्रा क्यिकांश निर्काश शत्र, 

छेएखनात्र विमर्थ स्रेटि शाद्रि, धरे कांत्रगवर्गाउः मीर्घ धक শাকো নির্মাণ করিয়া তাহার উপরে এক গৃহ প্রস্তুত করিবেক এবং ইহার হুইপার্থে তিন চারি শিড়ী নির্মাণ করিয়া তাহা-मिरांत्र छे भे जी छल (मनीत्र ठांत्रा मकल गांमलात्र श्रु छित्रां खनीवक পूर्वक वमादेश दाशित, **এवर প্রতিদিব**স मात्रश्काल खन नित्यः क्रमनः এইরপ কার্যা দারা চারার্দ্ধি ও সভেজ ইইরা डेिंगि প্রতিদিবস প্রাতঃকালে রোদ্রে বাহির করিয়া দিবে। পরে এই দেশীয় উত্তাপ সহ হইলে শীতকালে এক অনারত श्रांत পুতिय़ा निरंत, किश्रा क्रुषक यमि विरंवहमा कर्त्रम र्य अश्री-নের উত্তাপ সহ্য হইবে না তবে এ চারা সকল কোন শীতল श्वांत्म श्रृं जिय़। मीजन (मगीय ठांत्र। मकन धरे (मर्म রোপণ করিবার জন্য শীতকাল উপযুক্ত সময় নির্দারিত इरे-ग्राष्ट्र कांत्रग उৎकालित छेउां भ भी उन्नाम भी ग छेउां भित्र महिउ मियान रहेट भीता। धरे खना मीनगीम, किभि, हेडानि এই সময়ে রোপণ করা যায়। কিন্তু এই দেশীয় উদ্ভিজ্ঞ দিগের स्रमा উद्योशित विषय जीपूर्ण विरिव्यम कर्तात व्यविगाक्यां नारे, (करम (य कात्मत्र উद्धार्थ (य डेस्डिक किश्रा) थाति (मरे काल डाङ्मिगरक রোপণ করিবেক। यमि ছায়া ছারা त्रम आकृष्ठे कतिरव छाद्रा छेशयुक छेछाशास्त्रव ध्ययुक পরিপাক না পাইয়া কেবল শাখায় এবং পত্তে সঞ্চিত হইয়া পাকে, তাছাতে ইহারা কেবল স্ফীত হইয়া রহদাকার विभिन्ने जवर श्विकवर्ग इय, जहे जवस्थाय भाषा मकन किन ना इहेब्रा (कामल इब्र, यनि हेहाएँ कान हानि ना इडेक

उथानि ऐक ऐक्किं कथन कल कुल ऐश्नामन कतिर्व ना। यनि कोन छेशां यो यो कून छे शिष्ठ इत्र छ व হইবেক না। যদি কোন উদ্ভিজ তাহার সহনাতিরিক্ত উक्তाপে রোপিত হয় এবং তথায় যদি তাদৃশ রস না থাকে তবে ইহার পত্র হইতে যত অধিক রস বহির্গত হইবেক उৎপরিমাণে মূলদারা পৃথিবী হইতে আক্লট হইবেক নাঃ उৎপ্রযুক্ত নবীন পত্র সকল মিয়মাণ ও শুষ্ক হইয়া যাই-(तक, यनि এইরপ উত্তাপে मृत्तिकांत्र এবং বায়ুতে রস থাকে তবে অধিক উত্তেজনায় এত অধিক রস আকর্ষণ করে, যে তাহা এ উদ্ভিজ পরিপাক করিতে পারে না, उद्धना क्रमीयं ज्ञा व्यक्षिक मिश्चि इरेया के शृंद्धीं क श्रकांत्र শাখা পলবকে স্ফীত করিয়া দীর্ঘাকার বিশিষ্ট করে, কিন্ত कुल कल ठोहार्ड कथन उर्भन हरेरक न। এই पूरे প्रहण উত্তাপের বিষয় লিখিয়া আমরা বিবেচনা করিতেছি যে रेका मर्वाना घिष्ठ रहा ना। यथन अरेक्स इरेटिक उथन कान **डे**भाग्रक्राम डेलां भित्र श्रीनडा क्रिएड भाग्रिल এই अभकात्र इरेटांत मखायमा थाकिट्यक मा। এर मकल कार्रण विट्यहमा कित्रियां व्यामानित्येत (यांस इक्टिइ (य, এके दिनी स किन উদ্ভিজের প্রতি অধিক উত্তাপ সংলগ্ন করিশার জাবশাক নাই কারণ স্বাভাবিক উত্তাপের দ্বারা সকল কৃষিকার্যা নির্বাহ इहें पाद्र, क्वल भाषा एक्ट्रिक काम छोत्रा छे पानम करि. ৰার জন্য সর্বে সম্ভোব উত্তাপ আবশ্যক হয়। তৎ-প্রযুক্ত তহুপরি কাঁচ পাত্র আচ্ছাদন দিয়া প্রয়োজন সম্পর উদ্ভিক্ক প্রতি ব্যবহার করিলে নির্মাতরপ হইতে পারে তাহা
আমরা নিশ্চর বলিতে পারি না, তথাপি আমাদের মনে
অনুসন্ধানদারা যাহা উপস্থিত হইয়াছে তাহা যৎকিঞ্চিৎ
লিখিতেছি। প্রথমতঃ, উদ্ভিক্ষদিগের সমুদর যন্ত্র স্থীর স্থীর
কর্মে প্রব্র করিবার জন্য উত্তাপ আবশ্যক করে, কিন্তু ইহা
সমভাগে থাকিলে ঐ যন্ত্র সকল বিশ্রাম না পাইয়া এমত
ক্রান্ত হক্ষের হানি হইতে পারে।

পূর্ব্বাক্ত বিশ্ব নিবারণ নিমিত্ত শীতলত। প্রয়োজন বিধার নিশাগনে এবং হিম ঋতুর আগমনে উত্তাপের হ্রাম হয়, এবং প্রশত দিবাভাগে ও অন্য ঋতুতে তাহা পূর্ব্বমত প্রবদ্ধ এই ব্যবস্থা উদ্ভিক্ষদিগের জীবনোপযোগী ক্রিরার সহিত সমিলন পূর্ব্বক নির্দ্ধারিত করা আছে, দিবাভাগে ইহাদিগের সমুদর রম পরিপাক হইতে থাকে এবং তাহার কিয়দংশ বাষ্প স্বরূপ হইয়া পত্র হইতে বহির্গত হয় কিন্তু রজনীযোগে তাদৃশ উত্তেজনা না থাকাতে মূলদারা রম আকর্ষণে এবং নিশার শিশির পাতে সর্ব্বাংশে পূর্ণ হইয়া থাকে স্তরাং প্রভাতে দিবাভাগের ন্যায় রম সংযোগ প্রযুক্ত ক্ষীণতা আর থাকে না, ঋতু পরিবর্ত্তন হওয়াতে ইহাদিগের প্রতিও দেই—রূপ গুণ প্রকাশ করে।

এতদেশীয় উত্তাপের বিষয় বিবেচনা করিতে হইলে ইহা
নিশ্চয় বোধ হইবে যে শীত, গ্রীষ্ম, এবং বর্ষা এই তিন ঋতুতে
তিন প্রকার উত্তাপ হইয়া থাকে এবং তদমুসারে উদ্ভিক্ত
সকল তিন প্রকারে উৎপন্ন হয় যথা, গ্রীষ্মকালে অর্থাৎ

কাশুন অবধি জ্যেষ্ঠ পর্যান্ত তরমুজ, ফুটি, শশা ইত্যাদি किर्ात्र ऐ सिक्क कि शिया थारिक कि स्थानिगरिक जना अपूर्ड রোপণ করিলে কদাচ উৎপন্ন হইতে পারে না, কারণ ইহা-দিগের বীজ অঙ্কুরিত করিবার জন্য যেরূপ উত্তাপ আবশাক তাহা বর্ষা কিম্বা শীত ঋতুতে কদাচ পাওয়া যাইতে পারে না। এই জন্য যদি ইহাদিগের বীজ এই ছুই সময়ে রোপণ করা যায় তবে পচিয়া নফ হইবার সম্ভাবনা, এবং বর্ষার উত্তাপে যাহারা উৎপন্ন হইয়া থাকে তাহাদিগার জন্য গ্রীম্মের কিম্বা শীতের উত্তাপ কখন উপযোগা হইতে পারে ना, यथा, रेकू। रेरामिगरक शूर्वारु প्रश्च कतियोत्र जना ত্রীত্মের অবসানে রোপণ করিয়া থাকে, কিন্তু অধিক জল সেচ-নের আবশ্যক হয় নতুবা প্রচণ্ড রেডির সমুদয় শুক্ষ হইয়া यात्र। मीटिंत डेडोर्श नांना श्रकांत रेवरमिक धवर धंडरम-भीय वनक मकल উৎপन्न इरेग्रा शास्त्र। তार्शानिगरक जना इरे कांत्ज दार्शन करितल शिष्ट्या किया एक रूज्या याय, অতএব কোন চারা রোপণ ্রিবার সময়ে এই তিনের মধ্যে कान् छें छा भ जारात्र योगा रहे जित्र भाति एक, जारा वित-চনা করা ক্ষকের অতিকর্ত্ত্বা। তীম আসিয়া উপস্থিত হইলে र्शि (मिनीभाषां इरेशा (उक्तिवर्श शूर्यक शृष्यिकोरक नीत्रम করেন তাহাতে উদ্ভিজ্ঞাণ মধ্যে উদ্ধিতাগো আত্যন্তিক রসা-क्र इहेवां ए उद्दोतिरांत्र शज इहेट धर्मायत्रश तम वहि-র্গত হইতে থাকে, তাহাতে মুলের শোষণ-শব্জি র্দ্ধি হইয়া जाकांट व्यक्षिक त्रम शृथिती क्रेट व्यक्ति करत धरे छना मूल क्रम (मञ्ज्ञा व्यावनाकः किन्छ चर्डावडः मिक्न वाज्रमका-

The state of the s

मिल इन्द्रांट कित्रमध्य तम मिक्क इरेट शांक। धरे अलूत প্রভাব এই দেশে প্রবল, অন্য ঋতুর আগমনে কেবল কিঞিৎ रिवनक्रिंग इश्न, अहे खना अथानि मर्का मगर्य छिखक मक्रम উৎপन्न इरें ए পারে। ত্রীত্মের প্রথম অবস্থায় যে সকল রস শীতকালে পরিপাক পাইয়া সঙ্কুচিতরপে কাণ্ডমধ্যে সঞ্চিত ছিল তাহা এক্ষণে উত্তেজনায় স্ফীত হইয়া কুজ্ঝটিকার জলে किन्ना क्थन वाजिनवाजि मश्यार्ग अधिकाश्न छेन्छिक्किनिगरक विक्रिक जिंद नवीन भाशा श्रष्ट्र इकि भीलकरता किस श्र-স্পোদাম সময়ে যদি অধিক বর্ষা এবং উত্তরীয় বায়ু প্রবাহিত হয় তবে উদ্ভিজ্জ দিগের রসশোষণ হ্রাস হইয়া প্রচুররূপে পুष्प धात्राण विद्रा द्वारिश, धवर उरकाद्रण वर्गां कालद शब्दि অবশ্য হইয়া থাকে। এই ত্র্চিনা নিবারণ করিবার এমত কোন छेशांत्र आयदा कविएक शांति मा, किन्छ उर्श्वर्ख के मुकून मकन श्रम्बाहित इहेग्रा याद्यांट भीख कल डेल्शांमन करत, अमड कान कोनन अवनयन करा अं अं उकर्लगा। यनि ऐ सिक्किनिरात्र মূলে সার মৃত্তিকা দিয়া জল দেওয়া যায় তবে উভয় উত্তাপে এवर अन मश्यारिश श्रेष्ट्र मकन विदर्शक इहेश कनवान् इश । পরে উত্তাপের রিদ্ধি ছইলে এই কালে ফলের রস উত্তমরূপে পরিপাক পাইয়া মিষ্ট ছয়। অন্যান্য দেশে যথায় এইরপ উত্তাপ নাই তথায় ফল কখন এতাদৃশ মিফ হয় না। এই थकारत ऐ खिरक्कता कल कुल धात्रण जान ऐ खिक्कना थायूक এমত ক্লান্ত হয় যে, বর্ষা আসিয়া রস প্রদানদ্বারা যদি তাহা-मिगरक ज्थाना कविज जरव ममूमग्र विनक्षे इरेज। धरेक्रभ अञाविषक छेशात्र वावका मिथिया मनूर्यात्रा मकन छेगात्नित

जम्भूयांत्रि कार्या निर्काइ कतित्वन এवर ठातात मूल आम-वान व्यर्थार योगा वासिया जन मित्र। किस प्रहे श्रष्टरत्र नमः कथन जन मिर्व ना, कांत्रग उৎकानीन অত্যন্ত উত্তেজन প্রযুদ্ত ভাহা মৃত্তিকার সহিত মিশ্রিত না ইইয়া সমুদয় পত্র মধে আসিয়া সঞ্চিত হয় এবং পরিপাক না পাইয়া উত্তেজনাক मान् পত্ৰকে गियमां। कर्ता। जीचा অপেকা वर्षात्र উত্তাপ অ-धिक, कांत्रगं अरे नमार्य अक अक निवास अमें अमें इरेग्रा थारिक যে তাহাতে জীবন সংশয়াপন্ন হয়, কেবল বারিদ বারি পতিত हरेल वाग्न किथिए भोजन रग्न। ऐसिएकाता धरे ऐखारि অপর্যাপ্ত রস ভোগ করিয়া উত্তমরূপে পরিপাক পাওয়াতে नवीन भाषा প्रत्य इिष्कृक इरें छ थारक। भीर छ देखां भ **উक्त प्रदे** श्रकात छेंद्रांश याशका यांच याला, ५३ जना भी उ-लडा घात्रा উদ্ভিজ্জ निरांत नवीन त्रम वाशिनी भिता मकल मक्रुहिङ इरेशा थारक, धवर शृथिवी स ममस वस नोत्रम इरेरङ थारक, উত্তেজনা किছूरे थारक ना। উদ্ভিক্ত দিগের রস গাঢ় হইয়া এ সক্লচিত শিরা দিয়া অতি মৃত্ভাবে সঞ্চালিত হইতে থাকে, তাহাতে কোমল শাখা সকল এমত কঠিন হয়' य मीर्डिय थ्रेडार्य कांन शिन श्रेडि भारत ना। क्रिन-कृरिशंद्र এই এक नियम धि कोन रेवरिनिक हें हो द्रिशिन করিতে হইলে ইহার জন্মস্থানের উত্তাপের সহিত সে স্থানের উত্তাপ সমন্বয় করা অতি কর্ত্ব্য। ইংলওদেশ হইতে यिन कोन होत्रा जानिया (तार्शन कित्रिक इय, उत्य धरे मिनीय উত্তাপ কোন উপায় ক্রমে হ্যুন করিয়া ঐ শীতল দেশীয় উত্তাপের ন্যায় করিতে হইবেক, তস্তিম এ চারা অত্যন্ত করিবেক, কিন্তু অনা পাত্র আচ্ছাদন দিলে তথাখ্যে অন্ধকার হইয়া এ কোমল পত্র সকল থেতবর্ণ ছইয়া যায়। যদি এই দেশ অপেক্ষা উত্তাপিত দেশ হইতে কোন চারা আনিয়া রোপণ করিতে হয়, তবে তৎসমযোগ্য উক্তাপ শীতল দেশীয় উত্তপ্ত গৃছে যে প্রকার নির্মাণ হইয়াছে ভছুপায় ক্রমে করা यांक्ट भारत। किछ केकार अधिक राग्न क्या, धरे अमा वक ज्रमुख विधि जार्ह य के होत्रोत छेश्रात त्रक्रमीयार्श এক আচ্ছাদন দিলে ঐ স্থানের উত্তাপ বহির্গত হইয়া যা-ইতে পারে না, এই জনা এ স্থান উষ্ণ থাকাতে চারার প্রতি কোন হানি হয় না। জন্তদিগের দেহে যেরপ উত্তাপ উৎ-পত্তি হইয়া থাকে, বিশেষ কোন কারণ বাতীত উদ্ভিজ্ঞ দি-গের কাণ্ড মধ্যে তাহা কখন উদ্ভব হয় না, কেবল বায় এবং পৃথিবীর উত্তাপে উত্তপ্ত হইয়া থাকে, এই জন্য আ-माहिरात्र (वांध इरेंडिह (य शृथिवी इ धांकु वञ्जत माहाया অপেক্ষা উত্তাপ এবং রুসের দারা উদ্ভিক্তদিগের রুদ্ধি হইতেছে।

বায়ুর উত্তাপের বিষয় তাপ পরিপাক যন্ত্রে নির্মাণ করা যাইতে পারে, কিন্তু পৃথিবীর উত্তাপের বিষর জ্ঞাত হওয়া অতি কঠিন। যদিও আমরা পৃথিবীর অতি নিম্নভাগের বিষয় জ্ঞানিতে ইচ্ছা করি না, তথাপি উপরি ভাগ যাহাতে উদ্ভিক্তিদিগের মূল বিস্তীর্ণ হইয়া আহার আয়োলজন করে তথাকার উত্তাপের বিষয় অনুসন্ধান করা অতি আবশ্যক, ইউরোপীয় উদ্ভিজ্জবেতারা এ বিষয় যেরপে প্রকাশ করিয়াছেন তাহা দেখিয়া নির্মাণত হইতেছে যে

ৰায় র উত্তাপ অপেকা পৃথিবীর উত্তাপ অধিক, কারণ, বারু র छेखां भरा अरम्भर्ग इहेल य भित्रभार्ग तम वहिर्गेष इत्र जमर्भका भृथिवीत छंछार्भ अधिक छेरछिष्कि इहेग्रा मून यिन त्रम व्यक्ति ना करत उर्व श्रेज मकल शक रहेता याहेर शासा গ্রীত্মের প্রথম অবস্থায় যখন উদ্ভিক্তেরা পুলেপাৎপাদন করিতে থাকে তৎকালীন পৃথিবীর উত্তাপ বায়ু অপেকা প্রতি মাদে বাড়িতে থাকে। পরে বর্ষার শেষ পর্যান্ত ইহার উতাপ সমভাবে থাকিয়া উদ্ভিজ্ঞদিগের শাখা পল্লব কঠিন করিতে খাকে এবং রদকে গাঢ় করিতে থাকে, কারণ এইরপ না হ-ইলে শীতের আগমনে কোমল পত্র সকল বিনষ্ট হইতে পারে। পৃথিবীর উপরিভাগ অপেকা নিম্নভাগে ক্রমনুযায়ি উত্তা-পের হানতা হইয়াছে তৎপ্রযুক্ত যদি কোন রক্ষের মূল অ-বধি প্রকাণ্ডের কিয়দ্দুর পর্যান্ত মৃত্তিকায় পুতিয়া রাখা যায় তবে র্প্র মূলের আবশ্যক অনুযায়ি উত্তাপাভাব প্রযুক্ত অধিক রস আকর্ষণ করিতে পারে মা এবং বায়ুর উত্তাপে পত্রের রস विदर्शक इरेल मगूमग्र एक इरेग्रा यारेक शांत्र, এर जना ক্লুষক কখন ২ মূল খনন করিয়া ভূষ্য উত্তাপে বহির্গত করিয়া मित्। यमि कोन रेवमिनिक त्रक धरे मित्न त्रोभन कर्ताउ छेखारिश्व रिवनक्रना श्रयुक्त कन छेर्शामन मा कर उत् श्रय-মত ইহা জাত হওয়া উচিত যে ঐ রক্ষ জন্ম স্থানের উতাপ व्यालका अर्मनीय छेछाल व्यक्तिक किया कला इउम्रांड এইরপ হইয়াছে, যদি সম্প উতাপ প্রযুক্ত এইরপ হইয়া थांक उत्व र्थ इत्कृत भूल थनन कतिया स्था कित्र । विक्र 

পর্যন্ত এ অবস্থার রাখিয়া মূলের খাতে সার পরিপূর্ণ করিয়া জল দিলে নবীন শাখা পলব হইয়া পুজ্প উৎপাদন করি-বেক। যদি অধিক উত্তাপ প্রযুক্ত পুজ্প না হইয়া থাকে তবে মূলে মৃত্তিকা রাশী করিয়া তাহার চতুজ্পার্থে খড় বিস্তীর্ণ করিয়া জল দিবে।

## कटलत विषय।

আমরা চতুর্বিধ বস্তুর মধ্যে উত্তাপের বিষয় বলিয়া জল জীবনোপযোগি ক্রিয়া সম্পন্ন করত যেরূপ উদ্ধিজ দিগকৈ রিদ্ধালি করিতেছে তাহার বিষয় কিঞ্চিৎ বলিতে 🤜 প্রব্রত হইলাম, পাচকবর্গ এই স্থলে বিবেচনা করিবেন যে জীবনের পক্ষে জীবন ব্যতীত উপায় নাই, ইহাতে অবগাহন কিম্বাইহাপান করাতে যেরূপ পশুদিগের দেহ স্থিয় করে এবং আহারীয় উব্যের সহিত মিশ্রিত হইয়া ভক্ষিত হওয়াতে রক্ত উৎপত্তি করে, উদ্ভিজ্জদিগের প্রতিও তদ্ধপ উপকার করিতেছে। বারিবর্ষণ হইলে ইহারা উত্তাপ হইতে বিরত হইয়া শীতল হয় এবং পৃথিবী হইতে মূল দারা যে সকল আহারীয় দ্রব্য আরুষ্ট করে তাহা বারিসংযোগে প্রকাণ্ড মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া পরিপাকানন্তর রস উৎপত্তি করিতেছে এই কারণ বশতঃ উদ্ভিজ্ঞদিগের স্বভাব অনুসারে উপযুক্ত পরিমাণে বারি প্রদান করা ক্তবিকার্য্যের প্রধান কার্য্য হই-য়াছে। যদি কোন ভূমিতে কিঞ্জিম্বাত রন না থাকে কিন্তা জলেতে প্লাবিত হইয়া থাকে তবে তাহাতে কোন উদ্ভিজ

· উৎপত্তি इरेड পারিবেক না, কেবল জলজ এবং গেড়ু হইতে যে সকল উদ্ভিক্ত উৎপত্তি হয় তাহার। এই হুই অবস্থায় অনায়াদে জন্মাইতে পারে কারণ জলজদিগের স্বভাব এরপ যে জলে থাকিলেও পচিয়া যায় না এবং (गेंडू मकन পত এবং गृल विशेष शहेश एक मृखिकां स जीविज থাকিতে পারে এতদ্বিন্ন অন্যান্য উদ্ভিক্ত সমূহের জন্য জলের পরিমাণ বিষয় বিবেচনা কর। অতি কর্ব্য। স্বভাবতঃ শীত অবধি এীষ্ম পর্যান্ত ভূমি সকল নীরস হইতে থাকে এবং বায়-রও তজপ রসহীন অবস্থা হয়, যদিও নিশার শিশির এবং গ্রীমকালের কখন প্রচণ্ড ঝড় এবং র্ষ্টি হইয়া উদ্ভিজ্ঞ দিগের জीवन ब्रक्का कर्त थवः कल कुल छेल्लामन क्रिएं ब्रञ्कर्त তথাপি অবশেষে ইহারা নীর্দ হইয়া এমত ক্লান্ত হয় যে किङ्क छेर्शनम ना करिएल मकलहे विनग्धे इहेए र् राह्म अह जन। বর্ষা আ'দিয়া নিয়ত, বারি বর্ষণ করাতে উদ্ভিজ্জরা উভয় উত্তাপ এবং প্রচুর রস ভোগ করিয়া শাখা পল্লব রূদ্ধি করিতে थात्क। উত্তিভানিগের রিদ্ধিণীল অবস্থার মৃত্তিকা প্রচুর রুদে পরিপূর্ণ। রাখা অতি কর্ত্তব্য কারণ তৎকালে নবীন পত্র সকল উৎপন্ন হর এবং ইহাদিগের উপরিভাগ হইতে রস ঘর্মের স্থারপ হইয়া অনিক বহির্গত হয় তাহাতে মালল শোষকতা শক্তি রিদ্ধি হইতে থাকে। পত্র সকল যত কোমল অবস্থায় থাকিবেক ততই ইহানিগার হইতে রস বহির্গত হইতে থাকি-বেক কারণ ইহারা সূর্য্য উত্তাপ স্পর্শ করিবা মাত্র অভিশয় जिक्क উত্তেজনায় আক্রান্ত হয় কিন্তু কিঞ্চিৎ পক হইলে রস ৰহিণ্ড হইবার হিজ সকল মুদিত হওয়াতে তাদৃশ রস আর

選挙が確認さ

বহির্গত হয় না, এই সকল কারণ বিবেচনা করিয়া আমর। এই বিধি প্রকাশ করিতেছি যে চারাদিগের রিদ্ধিলি অবস্থায় ভূমি সতত সরস রাখিবেক।

আমাদিগের এতদেশীয় সামান্য ক্লযকদিগের মধ্যে এক श्रीनिष्णनक वावश्रा প্রচলিত আছে, কোন চারায় জল দিতে रहेल তাহার। পুরিত কলদীর প্রবল ধারায় জল ঢালিয়া থাকে কিন্তু তাহাতে যে স্থলে ঐ জল ধারা পড়ে তথা-কার মৃত্তিকা ধৌত হইয়া বহির্গত হওয়াতে এক গর্ত হইয়া মূল সকল বহিষ্কৃত হয়। যদি ক্রমশঃ জল দেওরা হয় তবে সমুদয় জল আদিয়া ঐ গর্ত্তে স্থিত হওয়াতে সেই স্থলের মূল সকলকে পঢ়াইয়া বিনষ্ট করিতে পারে কিয়ামূল রেছি " বহিষ্কৃত হওয়াতে শুষ্ক হইয়া যাইতে পারে, এই জন্য আৰ-মরা ব্যবস্থা দিতেছি যে বোমের দ্বারা জল বিস্তীর্ণ করিয়া নিবে কারণ ইহা হইতে জল অতি ফুক্ম ধারায় পতিত হও-য়াতে সর্বতি সমভাবে জল পাইতে পারে। যদি বীজ বপন করিয়া গামলায় জল দিতে হয় তবে অতি সৃক্ষধার বোমা দারা জল দিবে কিম্বা ইহার অভাবে তুর্কা ঘাদের এক আটি वाक्तिया औ शामनाय जन छिष्ठोरेया मित्र। मात्रधमदिक চারার মূলে জল দিতে হইলে সিঞ্চন করিয়া দিবে কিন্তু কৃষক সাবধান হইবেন যে জল দারা চারার মূলে কোন মতে গর্ত না হইতে পারে।

ফলোৎপাদক রক্ষের মূলে ইহার মুকুল হইবার পূর্বা-অবধি যদি সার দিয়া সরস রাখা যায় এবং পরে ফল হইলে ইহাদিগকে বান্ধিয়া সূর্য্য উত্তাপ হইতে যদি আচ্ছাদিত রাখা যায় তবে সেই ফল সকল স্বাভাবিক অপেক্ষা অবশ্য বড় হ্ইবেক, কারণ রক্ষ হইতে যে রস আরুষ্ট হয় তাহা ইহা-দিগের মধ্যে সঞ্চিত হইয়া পরিপাকাভাব প্রযুক্ত সতত স্ফীত করিয়া রাখিবেক, ইহাতে দৃশ্য বড় দেখাইতে পারে किस स्वाप्तत अपनक रेवलक्षणा इश्वक, स्था उर्जाप यनि ইহাদিগের রস পরিপাক না পায় তবে সেই ফলের জলবৎ স্বাদ হইবেক এই কারণ ফল পরিপক হইবার সময়ে জলের পরিমাণ মূন করা অতি আবশাক হইতেছে, ইহাতে কোন वाक्ति जन्मान कतिए भौतिन य वर्षाकौल य मकल कल পরিপক্ষ হয় তাহাদিগের স্বাদেরত এই রূপ হীনতা হইতে পারে কিন্তু তাহা কখন হইতে পারে না কারণ তৎকালীন বিন্দুপতি হইলে ক্ষণেক কাল মাত্র উত্তাপের হীনতা হইতে পারে পরে ভূষা দেদীপামান হইয়া প্রচণ্ড তেজো বর্ষণ পূর্বাক পত্র এবং ফল হইতে বহু ঘর্ম নির্গত করেন তা-হাতে ইহাদিগের রস পরিপাক পাইয়া ইহাদিগকে মিষ্ট कर्त्र किन्छ कन वाक्रिया वाथिएन जवना स्वाप्त दीने वा इहे-বেক। উক্ত কারণ বশতঃ নদীর তটে বালুকাময় ভূমিতে তর-মুজ ও কুটি চাষ করিলে মৃত্তিকায় অধিক রস থাকাতে ফলের স্থাদ স্বভাবিক থাকে কিছুই তাুন হয় মা! খদি কোন চারার মূলে ইহার পরিমিত অপেক্ষা অধিক জল দিয়া ক্রমা-গত সরস রাখা যায় তবে তাহাতে নবীন শাখা পল্লব উৎ-পত্তি হইতে পারে কিন্তু ফল ফুল হইতে বিরত থাকিবেক, এবং যদি এই ক্ষেত্রে কোন উপায় ক্রমে ছায়া করিয়া দেওয়া यांग्र किञ्चा क्रमणः अधिक जल (मध्या यांग्र उत्व क्रूप ठांत्र)

হইলে মূল পিচিয়া বিনষ্ট হইতে পারে এবং বড় চারা প্রতি এই ব্যবস্থায় ইহার হরিৎ বর্ণ লোপ পাইয়া শ্বেত্তবর্ণ হয়, পরে এইরপ অবস্থা পরিবর্ত্তন না হইলে নফ্ট হইবার সন্তাবনা এই কারণ কোন চারার মূলে জল স্থিত হইতে দেওয়া কর্ত্তব্য নহে। যদি কোন ভূমি এইরপ হয় তবে ইহার জল কোন উপায় ক্রমে বহির্গত হয় এমত করিবেক, কোন নিম্ন চিরুণ মৃত্তিকা বিশিষ্ট ভূমি জলে পরিপূর্ণ হইয়া কর্দমের ন্যায় হইয়া থাকে তাহাতে উক্ত প্রকার উপায় না করিলে কখন কোন চারা রোপণ করা হইতে পারে না এই ভূমিতে খোয়া এবং বালি নিশ্রত করিয়া দিলে ইহার জল শীস্ত্র অধোগত হইলে উত্তম উৎপাদক ভূমি হয় তৎপ্রযুক্ত মিশ্রিত ক্ষাত্র ক্রমিকার্য্য উত্তমকপ নির্ব্বাহ হইতে পারে।

গামলায় চারা রোপণ করিবার জন্য ইহার তলায় এক ছিল্র রাখিয়া তাহার উপরে হুই তিন খানা খোলাকুচি বসাইয়া দিবে, পরে মৃত্তিকায় পরিপূর্ণ করিয়া তাহার উপরে চারা রোপণ করিবেক এই অবস্থায় জল দিলে সমুদয় জল কখন ঐ চারার মূলে স্থিত থাকিবেক না, কারণ ঐ গামলায় যে ছিল্র আছে তাহা খোলাকুচি দ্বারা সম্পূর্ণরূপে রুদ্ধ করা হয় নাই, এই জন্য ঐ ছিল্র দিয়া জল অনায়াসে অধোগত হইবেক, কখনং গামলার মৃত্তিকায় পোকা আদিয়া বাস করাতে ইহারা ঐ মৃত্তিকাকে কোন ক্রমে কর্দ্দের ন্যায় করিয়া জল অধোগত হইবার পথ রুদ্ধ করে। এই জন্য ক্রবেকর ইহা গোচর হইবামাত্র ঐ পাত্রের জল বহির্গত হইবার পথ শ্বলিয়া দিবে, নতুবা তলায় জল বসিয়া ঐ চারাকে বিনষ্ট করিবেক। উদ্ভিক্ত · দিগের মূলের মৃত্তিকা পরিমিতরূপ সরস রাখিবার জন্য প্রতি निवम किञ्चि९२ জन निवाब वावश्रा शुक्रांशव প্রচলিত আছে এবং তাহাতে চারা সকল রূদ্ধি হইতেও পারে, বিশেষতঃ চারা রক্ষিত গৃহমধ্যে গামলায় যে সকল চারা রোপণ করা থাকে তাহাদিগের পক্ষে অতি উত্তম ব্যবস্থা হইতে পায়ের কিন্তু অনা রত স্থানে রোপিত চারার পক্ষে বর্ষাকালে তাদৃশ উপাদেয় इरेट পाরে না কারণ, র্ফির জল ইফাদিগের উপরে পতিত হইলে তাহা অতিশীঘ্ৰ অধোগত হইলা যায় এবং বায়ু রসেতে পরিপূর্ণ থাকে তৎপ্রযুক্ত এ জল শীঘ শুক্ত হইতে না পারাতে মৃত্তিকার সহিত মিশ্রিত হইয়া এক উপাদেয় রস প্রস্তুত করে, তাহা অতি মৃত্নমনে রক্ষনিয়ের অন্তর্গত হইয়া वह छेर्यकात करत धरे खना धरे ममस जल निवाब धरशंखन আর থাকে না, কিন্তু গ্রীম্মকালে বারিহীন অবস্থায় প্রতি দিবস জল দেওরা অতি কর্ত্তবা কিন্তু ইহাতে বর্ষার জলের ন্যায় উপকার দর্শে না, কারণ অপ্প জল প্রযুক্ত বায়ু রুসেতে পরিপূর্ণ হইতে পারে না তজ্জন্য পত্ররন্ধু দিয়া বহু ঘর্ম নিৰ্গত হইতে থাকে এবং তাহাতে মূল উত্তেজিত হয় কিন্ত जान्न तम ना পांध्यां एक स्थाता निक्यां विक स्था थारक, कार्रा को जन्म जल्म जिल्ला जिल्ला कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य এবং অবশিষ্ঠাংশ আহ্গা মৃত্তিকায় শীঘ্র অধােগত হওয়াতে মূল তাহা আকর্ষণ করিতে পারে না, পরে বারুসঞ্চালন দারা ले मृत्नत मृखिका अभे एक इरेड लाति य उपराउ ले চারার প্রতি হানি হইবার সম্ভাবনা অতএব রুষক অতি সাবধান হইয়া বৈকালে বায়ু শীতল হইলে চারার মূলে

এমত পরিমাণে জল দিবে যে তাহা শীপ্ত শুদ্ধ হইয়া যাইতে ना পারে; যদি এ চারার মূলে চিহ্নণ মৃত্তিকা থাকে তবে জল অধোগত না হইয়া ইহার সহিত মিশ্রিত হইয়া উপরে থা-কিতে পারে, তজন্য আমরা পূর্বে যেমত প্রকাশ করিয়াছি मেইরপ আল্গা করিয়া দিবে কিন্তু সাম্বংসরিক বনজক্তে জল দিতে হইলেইহাদিগের ক্ষেত্র মধ্যে নালা কাটিয়া জল দে-চন করিয়া দিবে, কারণ ইহাতে অধিক জল প্লাবিত হইয়া চা-রার হানিকারক পোকানিগকে নম্ভ করিতে পারে এবং ভূমি সতত সরস থাকাতে পত্র সকল কোমল এবং রহদাকার হই-(तक। मृ जिका अक (मिश्ता मश्राह जन्द्र धहेन्न किना किना विकास ব্যবস্থা করিবেক; বীজ বপন করিতে হইলে প্রথমতঃ ক্ষেত্র -मर्धा मैं जिश्व विकास छे अकारित जिलाहेस विकास ভাগে বীজ বপন করিলে ইহারা অঙ্কুরিত হইয়া চারা উৎপত্তি क्रितिक, পরে মূলের মৃত্তিকা পুরিত ক্রিতে হইলে হুই পাথের দাঁড়ার মৃত্তিকা ভান্ধিয়া দিবে এবং জল আবশাক হইলে উক্ত প্রকারে দিবে কিন্তু শাক ক্ষেত্রে এইরপ না করিয়া ইহার চতুস্পাশ্বে দাঁড়া বান্ধিয়া চেকার ন্যায় করিবে পরে · ইহার ভিতরের ভুমি সমান করিয়া বীজ বপন করিবে এবং উক্ত প্রকারে জল দিবে।

## 

মূলদারা যে রস আরুষ্ট হয় তাহা পত্রে যাইয়া পরিপাক পাইলে ছুই অংশে বিভক্ত হইয়া থাকে প্রথমতঃ সার্ভাগ · এकाश्म উদ্ভिक्किनिरात्र मस्या थाकिया देशिनगरिक दक्षि करत। দ্বিতীয়তঃ জলীয় যে অংশ তাহা ঘর্ম স্বরূপ হইয়া পত্র রন্ধ দিয়া বহির্গত হয়। স্থা উত্তাপ এই ঘর্ম বহির্গত হইবার প্রধান কারণ হইয়াছে, স্মৃতরাং কিরণের তীক্ষতানুসারে এই ক্রিয়া নির্বাহ হইয়া থাকে, কিন্তু বায়ুর অবস্থানুসারে इंशांत रिवलक्षण इंशेंट भारत, यिन वांत्र एक जवर उंडाभिज शांक তবে ইহা त्रिक्त इरेविक धवर आर्फ किया गींजन থাকিলে ব্রাস হইবেক অতএব বায়ুর এই হুই অবস্থার পরিমাণানুসারে ইহা অধিক কিম্বা অপ্প হইবেক, ঘর্ম অধিক বহির্গত হইলে পত্রের রস শুষ্ক হইয়া বিনষ্ট হইতে পারে কিম্বা পরিমিত রূপ বহির্গত হইতে যদি প্রতিবন্ধক হয় তবে উদ্কিদিগের রস উত্তমরূপ পরিপাক না পাইয়া রদ্ধি হইতে পারে না, এই সকল কারণ বিবেচনা করিয়া ক্ষক যদার। বায় উদ্ভিদ্দোর ঘর্ম পরিমিত রূপ বহির্গত করিয়া ইহাদিগকে সুস্থ অবস্থায় রাখে এমত কোন উপায় অবশ্য করিবেক, কিন্তু বায়ুর এইরপ অবস্থা সকল নিরূপণ করিবার আমাদিগের কোন বিশেষ উপায় নাই কেবল (ডिनिএল সাহেবের রসপরিমাপক যান্ত্রে নিরূপণ হইতে পারে কিন্তু তাহা এই দেশে প্রচলিত না থাকা 🤫 এই স্থলে লিখিবার প্রয়োজনাভাব, কিন্তু গাতে বায়ু সংস্পর্শ হইলে ইহার আর্দ্র কিয়া শুষ্ক অবস্থা তাহা কিঞ্চিৎ নিরূপণ করা याद्देश भारत। यथा भोजकाल एक वांत्र जामित्रा छेभिन्छ इहेल उर्छ मकल कार्षिया यात्र এवर शांज एक इस किन्छ आर्ज বায়ু বহিলে গাত শাতল হয় এবং সরস করিতে থাকে।

যে রাজ্যে যেরপ রক্তিপাত হইয়া থাকে তথাকার বায়ুতে তৎপরিমাণে রস থাকে, বলরাজ্যে বর্বাকালের প্রতি মাসে যত অধিক রক্তিপাত হইয়া থাকে তাহা পরিমাণ করিলে এই নিরপণ হয় যে সমুদয় জল রাজ্যমধ্যে যদি ব্যাপৃত হইয়া থাকে তবে প্রায়় এক হস্ত ও ছয় অসুলী উদ্ধে স্থিত থাকিবেক তৎপ্রযুক্ত আমাদিগের বিবেচনা হইতেছে যে অন্যান্য দেশ অপেক্ষা আমাদিগের এই দেশের বর্বাকালের বায়ুতে অধিক রস থাকে কিন্তু অন্যান্য কালে ইহা পরিবর্ত হইয়া যায়, তিন কালে তিন প্রকার পরিমাণে রম থাকে অতএব কোন বৈদেশিক চারা এই দেশে আনিয়া রোপণ করিতে হইলে কোন কালের বায়ুইহার উপয়ুক্ত হইবেক ইহা অ্যে নিরপণ করিয়া সেই কালে রোপণ করিবেক এবং সেই রপ বায়ু সমভাবে থাকিবেক এমত উপায় অবশ্য করিবেক।

আমরা জ্ঞাত আছি যে বায়ু দ্বির থাকিলে রস সমভাবে থাকে কিন্তু সঞ্চালিত হইলে ইহার বেগ বিশেষানুসারে শুষ্ক হইয়া যায় এবং তদনুযায়ী উদ্ভিক্তদিগের হর্ম নিঃস্বত হইয়া থাকে, যদি কোন উপায় ক্রেমে বায়ুর গমনাগমন ৰুদ্ধ করা যায় তবে উদ্ভিক্তদিগের ঘর্মজ্ঞাব তাহাতেই নিবারিত হইবেক। ইউরোপীয় উদ্ভিক্তবেতারা প্রকাশ করিয়াছেন যে যদি বায়ুর শ্বির অবস্থায় কোন স্থান হইতে এক শত গাঁচিশ গুণ হই-বেক এবং ঝিটকা হইলে এক শত পঞ্চাশৎ গুণ বহির্গত হই-বেক এবং ঝিটকা হইলে এক শত পঞ্চাশৎ গুণ বহির্গত হই-বেক এই জন্য উদ্যানের চতুর্দিকে প্রাচীর দ্বারা বেষ্টন করিয়া

ইহার ভিতরে বায় শ্বির রাখিলে ইহার রস সমভাবে থা-কিতে পারে অতএব বায়ুর শুষ্কতা কিয়া ইহার রস সমভাবে রাখা এই ছুই যখন যাহা আবশ্যক হইবেক তখন তাহা উপ-রোক্ত লিখিতানুসারে করিতে হইবেক।

আমাদিগের এই দেশে ছই প্রকার বায়ু আছে পূর্ব্ব দক্ষিণ এবং উত্তর পশ্চিম, পূর্ব্ব দক্ষিণ বায়ু সমুদ্র হইতে উদ্ভব হইয়া অতি আর্দ্র অবস্থায় এই অঞ্চলে আদিয়া উপস্থিত হয়, বিশেষতঃ ইহার আগমনে পর্ব্বতাদির কোন প্রতিবন্ধকতা না থাকাতে উত্তমরূপ সঞ্চালন হইয়া ইহার আর্দ্র স্বভাব প্রযুক্ত এই দেশীর উদ্ভিজ্জদিগের নিয়মিত ঘর্ম প্রদান করে, এই কারণ চৈত্র বৈশাস্থ মাসে পৃথিবা নীর্ম অবস্থায় উদ্ভিজ্জ সকল কেবল বায়ুর রুমে শীতল হইয়া জীবন রক্ষা ফরে।

উত্তর পশ্চিম বায়ু ভূমিও পর্বত হইতে উদ্ভব হইয়া অতি
মৃত্ন গমনে এই নেশে সঞ্চালিত হইতে থাকে, তৎপ্রযুক্ত
ইহাতে শীতের আবির্তাব হয় কিন্তু ইহা এমত শুদ্ধ যে যদি
ইহার সতত বেগ থাকিত তবে সমুদ্র উদ্ভিক্ষদিগের
রম বাহির করিয়া শুদ্ধ করিতে পারিত কিন্তু ইহা না থাকাতে
উদ্ভিক্ষদিগের জীবনোপযোগীকিয়া সকল অতি মৃত্নভাবে
প্রচারিত হয়, ইহা বাস্তবিক বিবেচমায় ইহাদিগের বিশ্রাম
অবস্থা কহিতে হইবেক, এই বায়তে যদি কখন ঝড় উপস্থিত
হয় তবে উদ্ভিক্ষদিগকে ছিল্ল ভিল্ল করিয়া পৃথিবীতে শায়
হামি করায়, শীতের অবসানে যখন উদ্ভিক্ষ সকল বিকশিত
হইতে থাকে তৎকালীন দক্ষিণ বায়ুর পরিবর্তে উত্তর বায়্
আসিয়া উপস্থিত হয় তবে ইহার বেগে গমন অবশ্য হইবেক

স্তরাং তাহাতে অধিক ঘর্ম বহির্গত হওয়াতে যে শিরা সকল সঙ্কৃচিত হইয়া রস বহন করিতে না পারায় বিকশিত পুষ্পা নকল রসাভাবে শুষ্ক হইয়া যাইতে পারে কিষা যে রক্ষ বিকশিত হইবার উপক্রম হইতেছে তাহারাও এরপ হইয়া পুষ্প উৎপাদন করিতে বিরত হয়, বিশেষতঃ আয়ের যুকুল সকল এইরপ হইয়া থাকে।

সর্কদেশে বায়ু এক প্রকার, কিছুই ভিন্নতা নাই, কেবল ইহার উত্তাপ এবং রুসের পরিমাণ বিষয়ে ভিন্নতা আছে, তজ্ঞনা উদ্ভিক্তেরা নানা প্রকার ভিন্নং দেশে জিমিয়া থাকে, অতএব কোন বৈদিশিক চারা এই দেশে আনিয়া রোপণ করিতে হইলে ইহার জগ স্থানের বায়ুতে যেরূপ উত্তাপ এবং রদ আছে তদ্রপ এখানে না করিলে কখন উৎপত্তি হইতে পারিবেক না, এই কারণ কোনং চারার জন্য বায়ু-রদ ত্যুন করা কিম্বা রদ্ধি করা অত্যন্ত প্রয়োজনীয়, ইহার छे था इश्न छो । छे खिक्क दिखा । यो शे थिका भे कशिया **एक** তोशे এদেশে প্রচলিত হইতে পারে না কেবল রস রিদ্ধি করা কোন উপায় ক্রমে হইতে পারে। যথা এক কাঁচ নির্মিত গৃহ প্রস্তুত করিয়া তম্বোে সতত জল সেচন দ্বারা কিম্বা অন্য কোন উপায় দ্বারা যাহাতে ইহার ভিতর জল থাকিতে পারে এমত করিলে ঐ গৃহ মধ্যে বায়ুর রঁস অধিক রূদ্ধি হইবেক, যেমন স্ত পাকার উশীর মূলোপরি জল সেচন করিলে তদর্জি গুণ সহকারে গন্ধবহে শীতল হয়। যদি বায়ুর तम जान करा जारभाक इश जान के गृह माथा इह नन বসাইয়া এক নলের ভিতর দিয়া উত্তপ্ত জল চালনা করিবেক,

এবং অন্য নল দিয়া তাহা পুনশ্চ যে স্থানে জল উত্তপ্ত হইতে ছিল তথায় আসিয়া উত্তীর্ণ হইবেক, এরপ ক্রমশঃ कतित्म धे वायुत तम नल घात्रा एक रहेशा यारेतक किछ গ্রীঘা প্রধান দেশে কখন হইতে পারে না এই জন্য আ'-মরা ব্যবস্থা প্রকাশ করিতেছি যে চারা রক্ষিত গৃহের বিষয় আমারা পূর্বে লিখিয়াছি তাহার ভিতরে কিমা অন্য কোন ছায়াযুক্ত স্থানে ঐ চারা গামলায় বসাইয়া রাখিতে পারে। কখন২ প্রাত্তে রৌদ্রে বাহির করিয়া দিবে এরপ ক্রমশঃ করিলে পর সহু হইয়া গেলে চারাকে উপযুক্ত স্থান বিবেচনা করিয়া তথায় পৃতিয়া দিবে। বায়ুর উত্তা-পের বিষয় বিবেচনা করিতে হইলে পৃধিবীস্থ সমস্ত বস্তুর উত্তাপের পরিমাণ অতো নিরপণ করা অতি আবশাক कार्रा এই मक्न रखर ऐखारि याष्ट्र ऐखारिक इरेगा शास्क গ্রীম্কালের হুই প্রহর সময়ে ইহার প্রত্যক্ষ প্রমাণ আছে কিন্তু উত্তাপ ধারণ করা এবং কাহারো উত্তাপ পরিত্যাগ করা শক্তি এই সকল বস্তুর মধ্যে কতিপয় বস্তুর আছে, যথা शाजुमकल ऐलाभिज इहेल मिहे जाभ हेहा मिर्गत जिल्दा বহুকালাব্ধি থাকে, কিন্তু তান্য সকল বস্তুর কেবল উত্তাপ পরিত্যাগ করা শক্তি আছে এই জন্য প্রা স্থানে কিছুই উত্তাপ থাকে না কিন্তু কোন স্থানে কঙ্কর বিস্তীর্ণ করিয়া রাখিলে, তথায় বহুকাল উত্তাপ থাকে, যদি কোন চারায় অধিকতর উত্তাপ দিবার আবশাকতা হয়, তথায় কম্ব বিস্তীর্ণ করিয়া দেওয়া কর্তব্য। তদারা বায়ু অধিক উত্তাপিত হইয়া ঐ চারাতে সংলগ্ন হয়।

তিমিবন্ধন হেমন্তের প্রাত্তাব হইতে এ চারার অনেক রক্ষা হইতে পারে। অপকারের মধ্যে এইমাত্র হয়, তত্ততা মৃত্তিকা मङङ एक थाकि। ध वावस्था ध मिल्य अञ्चलिङ स्टेंड भारत ना, कांत्रन धारमण जाम्म भी जनाई, ठ्युर्मित्क योग शोकित्न প্রচণ্ড তপনতেজ স্পর্শ না হওয়ায় তত্রত্য স্থান অনেক শীতল হইতে পারে। অতএব কঙ্কর নির্মিত পথ এবং তৃণাচ্ছন্ন ভূমি এই ত্বই প্রকার উদ্যানে থাকিলে উদ্যানের শোভা क्रिक এवर इत्कित्र शक्क उशकांत्र श्रेटिक शास्त्र। श्र्रित উত্তাপে পৃথিবীর অভ্যন্তর উত্তাপিত হইলে যদি ঐ উত্তাপ বহির্গত না হইয়া তথায় সমভাবে থাকে, তবে সমুদায় প্রজ্বলিত হইয়া নফ হইবার বিলক্ষণ সভাবনা। এই জন্য স্বাভাবিক এমত এক কৌশল আছে, যে ত-मात्रा मिवावमार्ग मगूमग छेखां विदर्श इहेश यांग । किस य शाम भारत छेन इस इस उथा से विक् হইতে পারে না। কারণ আচ্ছাদিত দিবাকরে ঐ উত্তাপ याहेशा लग्न পाइटिंड भीदि मां, धरे जना मिरे मभारत जाउँ खीच (वांध इत्र। शेरत त्रिकिशांउ इरेल স্র্যোর আবরণ নষ্ট হয় স্কুতরাং ভূমিস্থ উত্তাপ ক্রমশঃ উण्यिज इंदेल मुखिका भीठल इंदें थारक। देश दिर्व-চনা করিয়া দিবাবসানে যদি কোন চারার উপরে আচ্ছা-দন করিয়া দেওয়া যায়, তবে ঐ প্রতিবন্ধকতাপ্রযুক্ত তথাকার উত্তাপ উঠিতে না পারিয়া দেই স্থানেই ममजाद थादक, उद्दाताई किवन ठातांत উर्ज्जिमा त्रिक इरेट थारक। অতএব यनि क्षक এমত অনুমান করে,

যে কোন চারায় অধিকতর উত্তাপ দিবার আবশ্যকতা আছে, তবে উহাকে বারাণ্ডায় কিম্বা আচ্ছাদিত কোন স্থানে রাখিলে তাহার কোন হানি হইতে পারে না। দিবাভাগে উষ্ণভাবস্থায় যে সকল রস পৃথিবী হইতে পরমাণরপে উঠিয়া বায়ুতে সংলগ্ন হইয়া থাকে, রজ-নীযোগে উত্তাপ বহিৰ্গত হওয়ায় পৃথিবী শীতল হ-ইলে, সেই সকল রসের পরমাণু একত্রিত হইয়া শিশির রূপে পুনর্বার পৃথিবীতে পতিত হয়। সূতাং পৃথি-বীর শীতলভার পরিমাণানুসারে শিশির অধিক কিয়া অম্প পড়িয়া থাকে, এই জন্য শীত কালে অধিক শি-শির পতিত হয় কিন্তু মেঘের উদয় হইলে কখনই শিশির পতিত হইবে না। অতএব বায়ুর উত্তাপ এবং আর্দ্রতা অ-বস্থা অনুমান করিয়া কৃষিকার্য্য নির্ম্বাহ করিতে হইলে সম্পূর্ণ अकीय रेनशूनात्रें को नेन जावनाक करता किन्छ এउ९ প্রদেশে বায়ুর উত্তাপ পরিজানের উপায় নাই। যদি জানিবার আবশ্যকতা হয়, তবে ইংলগুদেশীয় বায়ুর উত্তাপ পরিমাপক যন্ত্র দারা নিরীক্ষণ করিলেই তাহার প্রতীতি হইবে।

যেথানে উদ্যান স্থাপন করিতে হইবে যাদ তথাকার মৃত্তিকা উন্নতানত হয়, তাহা হইলে তথায় চারা প্রস্তুত করা স্কঠিন। কারণ যদি ভূমি নিম্ন হয়, তবে বর্ধাকালে তথায় নিরন্তর জল থাকায় চারার মূলদেশ পচিয়া যাইতে পারে। যদি উন্নত হয়, তবে অনবরত প্রবল বায়ু সঞ্চার দারা চারা সকল ছিন্ন ভিন্ন এবং তাহাদের রসও শুক্ষ হইতে পারে, কিম্বা অধিক উত্তাপিত হইলেও প্রেরপ হইতে পারে। অতএব উদ্যান স্থাপন করিবার পূর্বের্ব মৃতিকা চালনাদি দ্বারা সমান করিতে হইবে। চারার উ-দ্যানে অরুণোদয় অবধি রেক্রি সংলগ্ন হইতে দিবে, পরে যদি কোন আচ্ছাদন দ্বারা কেবল অপরাহের রোক্রমাত্র নিবা-রণ করা যায়, তাহা হইলে চারা সকল তেজবন্ত থাকিবেক এবং উহাদিগের জন্য বায়ু অধিক সরস ও মন্দ্র্যাতি হওয়া আবশ্যক। অতএব যাহাতে চারায় অধিক সঞ্চালন না হয়, এমত উপায় করিতে হইবে। বিশেষতঃ অন্যান্য চারা-পেক্ষা সাম্বংসরিক চারার পক্ষে, অর্থাৎ যাহা জন্মা-ইয়া একবংসর মধ্যেই মরিয়া যায়, তাহার পক্ষে বায়ু অধিক সরস ও মন্দ্র্যাতি হওয়া আবশ্যক। চারাদিগের পক্ষেই এই সকল বিধি জানিবে রহম্বক্ষের পক্ষে কোন

## মৃত্তিকার বিষয়।

ধাতু ও উপধাতু রসায়নিক যোগে আবদ্ধ হইয়া যে পদার্থ উৎপত্ন হইরাছে তাহাকে মৃত্তিকা কহে ইহাতে ইহার উপা-দান ভুক্ত দ্রব্য সকল সামান্যত লক্ষিত হয় না, কিন্তু যে স্থলে ইহাদিগোর ক্ষনি আছে তথা ইহারা স্পষ্টরূপে প্রতিয়-মান হইয়া থাকে কিন্তু চাক্ষুষ দর্শনে কিবল ত্বই প্রকার মৃত্তিকা প্রতিভাত হয় যথা চিকণ অর্থাৎ এ টেল এবং বা-লুকা এই ত্বই প্রকার মৃত্তিকাতেই অন্যান্য নানা দ্রব্য মিশ্রিত

रहेश वह विध मुखिका छेर शामिक देश छहि, छोरा धरे इतन निधियांत्र প্রয়োজনাভাব দেখিয়া এইমাত্র কহিতেছি, যে পর্বতের উপরিভাগের মৃত্তিকা সমুদায়ই প্রায় চিরুণ এবং य ऋल य ज़र्भ প্रख्य जाहि, उश्वाकांत्र मृखिका मिरेज़र्भ छन धन दक्ष भावन कविशाहि। श्री वरमत वर्शकाल ध मकल श्रस्त्र छ ए। এवर मृखिका क्षीठ इरेग्ना जल-স্রোতে নিকটবন্তী আমে আসিয়া বিস্তার্থ হইয়া পড়ে, তৎপ্রযুক্ত এ সকল স্থানে মৃত্তিকা নানা প্রকার হইয়া থাকে। পরে ঐ পর্বভীয় গুঁড়া মৃত্তিকার সহিত মিশ্রিত হওয়াতে উহা এমত উৎপাদিকাশক্তি ধারণ করে যে, তাহাতে আর সার দিবার প্রয়োজন করেনা। এইরপে চড়ার কিহা দ্বীপের মৃত্তিকায় স্তবে স্তবে পলি পড়িয়া ক্রমে ক্রাশীকৃত হওয়াতে উহা শ্বভাবতই উর্বরা रहेग्रा शांक। शृथिनीत डेशतिङाशा এक रुख किया यान বিশেষে ততোধিক পর্যান্ত যে মৃত্তিকা আছে, তাহা নানা-বিধ বন্তুর সহিত মিশ্রিত হওয়াতে ক্ষিকার্য্যের যোগ্য হইয়াছে। আহারীয় দ্রব্য যদি কেবল এক বস্তুতেই উৎ-পন্ন হয়, তবে তাহা ক্রমশঃ ভক্ষণ দ্বারা তাশ্যা জীবের श्रीन श्रेट भारत। एक्का मनूरहाता अधानि भित-ত্যাগ করিয়া প্রতিদিন কেবল অন্ন আহার করিলে, কিছু निवासत माथारे कमनः भीन इरेश मतिशा योश। उज्जान, উদ্ভিক্তদিগকে এক প্রকার মৃত্তিকার পুতিলে কথনও জাবন ধারণ করিতে পারে না, তৎপ্রযুক্ত মিশ্রিত মৃত্তিকার রস উহাদিগের জন্য অত্যন্ত আবশাক। যে হেতু এ রস

উদ্ভিজ্ঞের ভক্ষণীয় স্বরূপ এবং উহা কেবল উপরিভাগের মৃত্তিকাতে আছে, এই হেতু যে দিকে এ রস পায়, সেই দিকের উপরিভাগ দিরা বিস্তীর্ণ হইয়া উদ্ভিজ্ঞদিণের মূল সকল বহু দূর গমন করে, কিন্তু অধিক নিম্নভাগে যায় না, যে হেতু তথার এরপ রস অধিক থাকে না। তাহার প্রমাণ এই, রহন্ত্রেকর নিকটে পুষ্করিণী খনন করিলেও তাহার অভ্যন্তরে রক্ষের মূল বা শিকড় দেখিতে পাওয়া যায় না।

পৃথিবীর ভিতরে যেরূপ মৃত্তিকা স্তরে স্তরে সজ্জিত আছে, তাহার বিষয় আমরা যথা জানানুসারে অত্যে কিঞ্চিৎ বর্ণনা করিয়া, পরে গুণের বিষয় বর্ণনা করিব। প্রথমতঃ যে মৃত্তিকাতে অধিক জল ধারণ করে ও শীঘ উত্তাপিত হয় না এবং অঙ্গুলী স্পর্শ করিলে সংলগ্ন হইয়া থাকে, তাহাকে চিক্রণ অর্থাৎ এটেল মৃত্তিকা কহা যায়। দ্বিতীয়তঃ যে মৃতিকা শীষ্ত্র উত্তাপিত হয় এবং কোন জন্ম জলধারণ করিয়া রাখিতে পারে না, তা-ছাকে বালুকা বলা যায়। কিন্তু বোধ মৃত্তিকা এই হুই (यानी माधा गोना इक्ट भोदि ना। कोबन किवन छिष्ठिक পচিয়া ক্ষবর্ণ মৃত্তিকারপে পরিণত হইয়া বোধ মৃত্তিকা কথিত হয়। উক্ত উপরিভাগের নিম্নে এক থাক বালি मृक्ति (मिथिट পोउरा) योरा, जोश क्रिकार्यात्र (योगा নহে। কিন্তু ইহা থাকাতে পৃথিবীর ভিতর এমন আ-म्त्रा शहर थारक या, छेशर इसिशां इहेरन क्लकान मर्थारे नीज जर्थागं रुरेश यारेट भारत। अरे जना উদ্ভिक्तिरिशंत यून वहकान जान शाकित्न পहिला नर्छ

হইতে পারে না। কিন্তু সতত জল সংলগ্ন হওয়াতে মৃত্তিকা এমত কঠিন হইয়া উঠে, যে তাহার ভিতরে জল প্রবেশ कतिए পीरत म। এই कार्रा मृत्नत्र मृ खिका करिन इहेल খনন করিয়া দিবে। পরন্ত বালির নিম্নভাগে বোধমৃতিকা মিশ্রিত এক থাক চিকণ মৃত্তিকা আছে। তাহার নীচে বহুচুর অবধি ছাইবর্ণ বালি মৃত্তিকা পাওয়া যায় এবং উহার নিম্নভাগে এক থাক বোধ মৃত্তিকা আছে, তাহার পর কেবল ছাই মৃত্তিকা আছে। কিন্তু তাহার অধোভাগে थनन कतित्व जन छेठिए शांक। এই जना आमत्र छोटात इंडांख कि हूरे विलिए भारति ना। धरे श्रकारत मृखिका धक थाक वालि, পরে একথাক চিক্কণ মৃত্তিকা ইত্যাদি ক্রমশঃ শ্রেণীপূর্বক থাকাতে প্রকৃতির কোশল ব্যক্ত আছে, তাহা দর্শন করিয়া আমাদিগের মন আশ্রহণ্য বোধে ভাহাতেই লীন হইতেছে। ঐ সুধার। অবলম্বন করিয়া জল অতি শীঘ্র অধোগত কিম্বা বহুকালস্থায়ী না হইয়া নিয়মিত-क्रां आधार्यम्य कर्त्र। यमि शृथिवीत्र निम्नजार्य धात्र বাহিক মৃত্তিকা না থাকিয়া ক্রমাগত বালি থাকিত, তবে রস অতি শীব্র অধোগমন করিয়া উপরিভাগতে এমত শুষ্ক করিত যে, তাহাতে সমুদায় উদ্ভিজ্ঞ রসাভাগে নফ হইতে পারিত, কিন্তা যদি চিক্কণ মৃত্তিকা হইত, তবে তাহাতে জল ধসিয়া তাহার হানি করিতে পারিত।

উক্ত হুই প্রকার মৃত্তিকার মধ্যে কতক অধিক জল ধারণ, কতক বা অধিক উত্তাপধারণ করিতে পারে। অতএব গুণের বিভিন্নতাপ্রযুক্ত উক্ত উভয় মৃত্তিকাই কৃষি কার্য্যের

छे शयुक्त न रह। कांत्र । छे खिक्कि निर्मात की वन त्रकांत निर्मिख নিয়মিতরপ জল এবং উত্তাপ আবশ্যক। কিন্তু যদি এ হুই প্রকার মৃত্তিকা একত্র মিশ্রিত করা যায়, তবে উভয়ে উভয়ের গুণ সমাধা করিয়া উদ্ভিজের উপকারক গুণ অব-লম্বন করে এবং ভাহাতে চারা পুতিলে নিয়মিত উত্তাপে উত্তেজিত হইয়া নিয়মিত রস ভোগে পরিতৃষ্ট হইতে পারে। কিন্তু ইহাদিগকে কি পরিমাণে মিশ্রিত করিলে ক্লষিকার্যোর উপযোগী হইতে পারে, তাহা আমরা নিশ্চয় বলিতে পারি না। কারণ, উদ্ভিজ্জদিগের মধ্যে কাহারও পক্ষে মৃত্তিকায় বালির অংশ অধিক, কাহারও পক্ষে চিরুণ মৃত্তিকার অংশ অধিক থাকিলে উত্তম হইতে পারে। যদি এক জাতীয় উদ্ভিজ হয়, তথাপি তাহাদিগের পক্ষে ভিন্ন वावका करा जावनाक। यथा, नातिएकल हुक्क शिक्टमांधाल রোপণ করিলে কদাপি বর্দ্ধিত হইতে পারে না, কিন্তু এই জাতীয় তালরক্ষ ঐ স্থানে বহুসংখ্যক জিমিয়া থাকে। এইরপে অনুসন্ধান করিলে অনেক দৃষ্টান্ত দেখা যাইতে পারে। य উদ্ভিজে যে সকল ধাতৃ বস্তু আছে, যদি সেই সকল ধাতু কোন মৃত্তিকায় থাকে, তবে তাহাতে সেই চারা পুতিলে, তাহা চারার পক্ষে উপযোগী হইতে পারে। मर्रा भारता शक्षक जार्ड, এই জना शक्षकमश्युक मृखिकांत्र পুতিলে উত্তমরূপ হইতে পারে।

কিন্তু এই মত অবলম্বন সহজ নহে। কারণ, মৃত্তিকা এবং চারার মধ্যে যে ধাতু বস্তু আছে, তাহা নিরূপণ করিয়া রুষক কখন কৃষিকার্য্য নির্মাহ করিতে হইলে রুসায়নিক

পরীক্ষা আবশাক করে এক্ষণে যেরপ কৃষিকার্য্য নির্বাহ इरेटिह छोट्टा मिथिया जागामितात धरे जनूमान दरेटिह य रोमि ७ हिक्न मृछिका छेछ रा मम পরিমাণে মিঞিড করিলে সাম্বৎসরিক চারায় ও গেঁড়ুর পক্ষে উপযোগী হইতে পারে। রদ ও উত্তাপ উভয় সমভাবে থাকাতে, নিম্ন-লিখিত উদ্ভিক্ত সকল অতি শীঘ্র বাড়িতে পারে। যথা শালগ্রাম, গাজর ইত্যাদি। আর যদি মৃত্তিকার অপেকারত অধিক বালির অংশ থাকে, তবে উহারা অধিক উত্তাপের সংযোগ এবং রদের হীনতা প্রযুক্ত বিনয় হইতে পারে। (करल त्रमयुक छे खिड़ मकल अंत्री मृजिकां य छे छे पत्री छे ९-পন্ন হইতে পারে। কারণ ইহাদিগোর প্রকাণ্ড মধ্যে অধিক রস থাকাতে মৃত্তিকার রস সহা করিতে পারে না, এই জন্য উহাদের পক্ষে উত্তাপিত বালি মৃত্তিকা উপযুক্ত হইতে পারে। কিন্তু চিকণ মৃত্তিকার ভাগ অধিক থাকিলে, উক্ত थकार्त উ खिरङ्ग भएक कथन छेभगुङ नर्श। कांत्रध এ মৃতিকার কঠিনতাপ্রযুক্ত ইহাদিগের মূল তমাংধ্য প্রবেশ করিতে অশক্ত হওয়াতে শীর্ণ হইয়া মরিয়া যাইতে পারে। কিন্তু তাহা রহদ্বকের পকে উপযুক্ত। কারণ ইছাদিগের মুল স্ত্রবৎ হওয়াতে মৃত্তিকার কঠিনতার দুঢ়বন্ধন পূর্বক धमं कित थाति (य सार्ष छे९ भाषि इस न।। धरे जना পঞ্চিমাঞ্চলে ফলের রক্ষ রোপণ করিলে উত্তম রহদাকার कल উৎপন্ন হইয়া থাকে।

গামলায় যদি কোন চারা পুতিতে হয়, তবে ইহার মৃত্তিকা চিরুণ এবং বালী, উভয়ের সমভাগ মিশ্রিত করিয়া

मिल उद्दात उर्भामिका में कि इहेट भारत। এছल বিবেচ্য এই যে, এদেশে নির্বচ্ছিন্ন চিৰুণ মৃত্তিকা পাওয়া হুৰ্ঘট, প্ৰায়ই বালি মিশ্ৰিত থাকে। অতএব উভয়ের মিশ্রণ করিতে হইলে বালির পরিমাণের বিষয় বিবেচনা করিতে হইবে, কিন্তু বহুসংখ্যক চারা পুতিবার জন্য এইরপ মৃত্তিকা মিশ্রিত করা বহু বায় এবং পরিশ্রমসাধা। এই জন্য আমুর্য এই স্থলভব্যবস্থা প্রকাশ করিতেছি যে, রুষক যে স্থানে ঘনঘাস জন্মাইয়া থাকে, তথাকার চাপড়া কাটিয়া পাঁজার ন্যায় সাজাইয়া রাখিবে। পরে ঐ মৃত্তিকা শুষ্ক হইলে উক্ত প্রকারে অধিকতর উর্বেরা হইবে। কারণ घाम जाि खाविकः ऐक्द्रा मृिका ना भारत कथन তেজোবত হয় না। যদি কোন ক্ষেত্রে ক্ষিকার্য্য নির্বাহ করিতে হয়, তবে তথাকার মৃত্তিকায় যে চারা প্রতিতে इहेरवक, जोशां निरान शिक्त की मुखिका देखें दो कि नो अर्थ তাহা পরীক্ষা ছারা নিরপণ করিয়া পশ্চাৎ ঐ কার্যো প্রবৃত্ত হইবে। প্রথমতঃ তথায় তৃণাদি উদ্ভিদ্ধ যে সকল আছে, তাহাদের রিন্ধি দেখিবে এবং ঐ ক্ষেত্রের অত্যন্ত শুক্ত মৃত্তিকা এক অংশ এবং ভিজা মৃত্তিকা এক অংশ লইরা অঙ্গুলী দ্বারা টিপিয়া দেখিবে যে, যদি এ শুষ্ক অংশ অতিশয় কঠিন হয়, এবং আর্দ্র অংশ আঠার ন্যায় এমত লাগিয়া থাকে যে তাহা পরিষ্কার করিতে অনেক যত্ন পাইতে হয়, তবে এইরপ মৃত্তিকাতে কদাচ রুষিকার্য্য इहेरवक ना। यमाशि मृत्तिकार किश्वियां व जाठांत्र मक्षांत्र थारिक जाथि जञ्जू निएक मृद्रिक्ष मश्नद्य इहेशा थारिक ना,

তবে সেই মৃত্তিকা অবশ্য উর্বরা হইবে। কিন্তা যদি
মৃত্তিকার কিঞ্চিমাত্র আঠা না থাকে, এবং অন্ধূলিতে
ধারণ করিলে এলাইয়া পড়ে, তবে নিশ্চর হইল যে, সেই
মৃত্তিকার উর্বরশক্তি কিছুই নাই। কিন্তু তাহাতে তরমুজ,
ফুটিইত্যাদি হইতে পারে।

যে ভূমি বায়ু হইতে রস আকর্ষণ করিয়া উদ্ভিক্ষকে পুষ্ঠ করে তাহাকে উৎপাদক ভূমি বলা যায়। তাহাতে বালি, চিকণ এবং পচা জন্তর কিমা পচা উদ্ভিজ্জের সারাংশ আছে। ঐরপ সার যত অধিক থাকিবে, ততই ভূমির রসশোষিকাশক্তি রিদ্ধি হইবে। যদি মৃত্তিকার নিম্নভাগে ইফক নির্মিত কোন দ্রব্য কিমা প্রস্তুর থাকে তবে, সেই স্থান শীক্র শুক্ত হইয়া তাহার উপরিভাগে যে চারা থাকে তাহার বিনাশ করে।

অনুৎপাদক ভূমি দর্শন মাত্রেই চিনিতে পারা যায়, স্বাভাবিক বর্ণ বিবর্ণ হইয়া যায় এবং কোন কোন স্থানে বালি সকল মৃত্তিকা হইতে পৃথক্ভূত হইয়া বহিষ্কৃত হইয়া থাকে কিয়া কোন কোন স্থানে লবণ প্রকাশিত হয়, যাহাকে ভাষায় লোণা ভূমি কহে। যে ভূমিতে বহুকাল রুষিকার্য্য হইতেছে তাহাও পরে প্রপ্রপ হইতে পারে, কারণ উদ্ভিজ্রো তাহার সার অংশ ভোগ করিয়া জের হীনতা করে, বিশেষতঃ বর্ষার জল অধিক পড়িলে ভূমির উপরি ভাগের চিকণমৃত্তিকা এবং সারভাগ ধৌত হইয়া নিম্নভাগে আদিয়া থাকে। এই প্রকারে মৃত্তিকা যত ধৌত হইবে ততই মৃত্তিকার ভিতরের চিকণ ও সার পদার্থের

হ্রাস হইবেক স্বতরাং ক্রমে ক্রমে উপরিভাগে বালি প্রকাশ পায়, এবং নিম্ন ভূমি ক্রমে ক্রমে সতেজ হইতে থাকে, অতএব যদি উক্ত প্রকার ভূমিকে শস্যশালিনী করিবার আবশ্যকতা হয় তবে, প্রথমতঃ তথায় ধঞ্জের বীজ বপন করিবে, কারণ উহাদিগের পত্র তথায় পতিত হইয়া পচিয়া এক উপাদেয় সাররপে পরিণত হয়, তাহাতে ভূমি উর্বরা হইতে পারে, কিম্বা যে স্থানে বালি বহির্গত হইয়াছে তথায় কিঞ্চিৎ চিক্লণ মৃত্তিকা এবং সাম একত্র মিশ্রিত করিয়া দিবে অথবা কেবল চিক্কণ থাকিলে বালি মিশ্রিত করিবে এতদ্বাতিরিক্ত নিম্ন লিখিত কয়েক প্রকার উপায় দ্বারা অনুৎপাদক ভূমির সংশোধন করা যাইতে পারে। এ मकल উপায় क्रम्मः लिथिउ इहेल। প্রথম মৃত্তিকা খনন করিয়া ওঁড়া করিবে, যদি বহুকালাবধি মূলদেশের মৃত্তিকা খনন করা না যায় তবে তাহা এমত কঠিন হয়, যে তাহার ভিতরে জল, রোদ্র এবং বায়ু প্রবেশ করিতে পারে না, এবং উপরিভাগে অকর্মণ্য নানাবিধ উদ্ভিজ্ঞ জিমিয়া তথা-কার তাবৎ রদ নম্ভ করে, তাহা হইলেই মূল সকল বাড়িতে পারে না এবং তাহাদিগের শাখা প্রশাখানা হওয়াতে অধিক দূর হইতে রস আকর্ষণ করিতে অক্ষম হয়। সুত-রাং চারা সকল তদবস্থই থাকে। অতএব বীজবপন এবং চারা রোপণ করিবার পূর্কে মৃত্তিকা খনন করিয়া ওঁড়া করিতে হইবে এবং রোপণান্তর মধ্যে মধ্যে ক্লেত্রের মৃত্তিকা খুসিয়া দিতে হইবে। ইহাতে উপকার এই मर्ल (य मृखिका यज छ ए। इहरव, उजह जाहांत्र तम জাকর্বণ শক্তি র্দ্ধি হইবে। বিশেষতঃ চিকণ মৃতিকা ওঁড়া না করিলে আন্তরিক রস শুক্ক না হওয়াতে বায়ুর রস আকর্ষণ করিয়া লইতে পারে না। যদি আন্তরিক রস শুক্ক না হইলেও কোন উপায়ক্রমে বায়ুর রস আক্ষ্যণ করে, তবে তাহাতে পরিমিত অপেক্ষা অধিক রস একতা বদ্ধ হইয়া থাকে, তাহা হইলেই চারার পক্ষে বিশেষ অনি-ফৌর সন্তাবনা। যদিও রস উদ্ভিক্তের জীবন স্বরূপ, তথাপি মূলদেশে তাহা নিরন্তর বদ্ধ হইয়া থাকিলে, বায়ু সঞ্চারের অভাবে অভিনব স্ত্রবৎ মূল সকল পচিয়া যায় এবং চারাও ক্রমশঃ শুক্ক হইয়া মরিয়া যায়। তাহা হইলে "গোড়ায় জল বসিয়াছে" সকলে বলিয়া থাকে। তৎকালে মূলদেশে স্থা্রের উত্তাপ সংলগ্ন করা আবশ্যক অতএব মৃত্তিকা খনন করিয়া ওঁড়া করিতে হইবে।

তৃতীয়, বায় সংলগ্ন হওয়াতে মৃত্তিকার সংশোধন হইতে পারে। তরিমিত বর্ষার অন্তে অর্থাৎ কার্ত্তিকাদি মাসে কিয়া প্রীম্ম কালে একবার রক্তিপাত হইলে অনুংপাদক ভূমি সকল খনন করিয়া যদি তাহার চাপড়া সকল উল্টাইয়া রাখা যায়, তবে তাহা চতুর্দিকে রোক্ত ও বায় লাগিয়া অত্যন্ত শুক্ষ হইলে, রক্ষের মূল ও আন্তরিক রস ইত্যাদি যে সকল বস্তু থাকায় ঐ ভূমি অনুংপাদক ইয়াছিল তংসমুদায় বিনফ্ট হওয়ায় ভূমির অসাধারণ উৎপাদিকাশক্তি জন্মে। এই হেতু প্রাচীন দেয়ালের মৃত্তিকা বিশেষ উপকারক বোধ করিয়া ক্ষেত্রে দেওয়া আবশ্যক। অন্য বস্তু মিশ্রত করাতে মৃত্তিকার পরিবর্ত্তন হইতে পারে, ইছা

পূর্ব্বে বলিয়াছি। যদি মৃত্তিকাতে লেছি সংযুক্ত কোন

দ্রব্য থাকে, তবে তাহা পার্ব্বতীয় মৃত্তিকার ন্যায় হরিদ্রাবর্ণ

হয়, তাহাতে চুন মিশ্রিত করিলে তাহার উত্তমরূপে সংশোধন ছইতে পারে। এবং ঐ অরুৎপাদক ভূমির মৃত্তিকা
পোড়াইলেও অধিক উপকার দর্শে। বিশেষতঃ যদি চিকণ

মৃত্তিকা নিয়মিতরূপে পোড়ান হয়, তাহা হইলে তাহাতে

অধিক কঠিনতা থাকে না। তাহার জলধারণ শক্তিরও

অনেক হ্রাস হইয়া যায়। একারণ এদেশীয় রুষকেরা
ধান্যাদি ক্ষেত্রে অগ্নি লাগাইয়া দেয়।

কিন্ত রন্ধির জল উন্নত প্রদেশ হইতে আসিয়া যে স্থানে কণ কাল অবস্থিত হইয়া অধােগত হয়, তথাকার মৃতিকা পলি ঘারা বরং তেজস্বী হয় এবং উদ্ভিক্ত সকল তাহাতে পরি-বর্দ্ধিত হয়। যদি উপরিভাগের এবং তাহার ক্সধাভাগের ভিতরের মৃতিকা অত্যন্ত আল্গা হয়, তাহাতে জল পতিত হইবামাত্র অধােগত হইয়া যায় এবং যদি উপরিভাগের মৃতিকা আল্গা হয় অথচ তাহার ভিতরে এমত কঠিন হয় যে, জল তাহার ভিতরে প্রবেশ করিতে পারে না। তবে ঐ জল আপাততঃ উপরিভাগ হইতে অধােগত হইতে দেখা যায় বটে, কিন্তু তাহা অধােগত না হইয়া, উপরিভাগের মৃতিকা র্মেটাদি সংযােগে যত শুক্ক হইবে, ততই জল বাস্প-রূপে পরিণত হইয়া উর্দ্ধাত হইবে। অতএব এই সকল কারণবশতঃ জল অধােগত হয়, কিন্তা তদবস্থই থাকে ইহা নিরপণ করিয়া সাধ্যক্রমে তাহার সংশােধন পূর্ব্বক ক্রিক কার্যা আরম্ভ করিবে। নদী তীরম্ভ ভূমি সতত স্রােতে প্লাবিত ছইলে তাছাতে কোন চারা উৎপন্ন ছইতে পারে
না। এই ছেতু বাঁধ বাদ্ধিয়া তাছা নিবারণ করিলে, ঐ
ভূমি শুক্ষ ছইয়া ক্ষিকার্য্যের যোগ্য ছইবে। পূর্কে কহি
রাছি যে ক্ষেত্রে নালা কাটিয়া জলসেচন করিলে ভূমি
উৎপাদিকা ছইতে পারে, কিছ্ক তদপেক্ষা যখন ক্ষেত্রে
ফলল না থাকিবে, তখন নদীর কিন্তা খালের ঘোলা জল
আনিয়া যদি ঐ ক্ষেত্রে পরিপূর্ণ করা যায়, তবে তাছাতে
পলি পড়িলে উৎপাদিকাশক্তি জ্মিতে পারে।

পঞ্চম, কোন ভূমিতে এক জাতীয় শদ্য ক্রমাণত চুই তিন বৎসর রোপণ করিলে উত্তরোত্তর ফলের ম্যুনতা অবশ্যই इरेटा। कांत्रगं ভূমির যে এক উৎপাদিকাশাক্তি আছে, তাহা অনবরত শস্য থাকার বিনষ্ট হইরা যায়। এবং প্রবজাত শদ্যের শিকড়ও আন্তরিক রস ইত্যাদি অনুৎ-পাদিকাশক্তির হেতৃ সকল একত্র সমাবিষ্ট হয়; এই নিমিত্ত কোন কোন শস্য-ক্ষেত্র এক বৎসর, কোন কোন শস্য কেত্র অন্তভঃ ৫। ৬ মাস শসাশূন্য করিয়া রাখিতে হইবে। যে ভূমিতে প্রথম বৎসর যেরপ ইক্ষু হইয়াছিল, পর বৎসর তাহাতে তাহা পুনর্কার রোপণ করিলে তাদৃশ হইবে না। কারণ পূর্বজাত ইক্ষুর মূল ও শিকড় অভি কঠিন। এই হেতু দেবার তাহাকে নষ্ট করিতে পার লায় না। বিশে-विकः छेर्पानिकांगिकि धक वर्मत रेक्ट्र छेर्पन कतिशा হীনতা প্রাপ্ত হইলে সেই হীনতাবছায় পুনর্বার তাহা উৎপাদন করিতে পারে না। কারণ সজাতীয় শস্য উৎ-পাদন করিতে একই প্রকার শক্তি অপেকা করে। কিন্ত

यि देकू (ष्ट्रमे कित्री (य भेगा जोम्भ भेकि अर्भिका) করে না, এমত অন্য জাতীয় শস্য রোপণ করা যায়, তাহা क्रेटल जारा मिर रीनमांकि बातारे मन्पूर्वत्रां छे९ पन ছইবে, কারণ তাহার পক্ষে দেই শক্তিই বলবতী। যেমন এক ভারবাছক একটা ভার বহন করিতে করিতে ক্রমশঃ শক্তির হীনতাপ্রযুক্ত ক্লান্ত হইলে বিশ্রাম না করিয়া তাহা বহন করিতে পারে না, কিন্তু তাহা অপেকা লঘু ভার অনায়াদে বছন করিতে পারে, সেইরপ ক্ষেত্রাদি বিষয়ে ও জানিতে হইবে। যদিও বোসাই ইক্ষু চ্ছেদন করিয়া ব্যয় বাকুল্য ও সাতিশয় পরিশ্রম স্বীকার করিয়া সেই গোড়া-তেই পর বৎসর रेक्कू উৎপন্ন হইতে দৃষ্ট হয়, কিন্তু তৃতীয় বৎসর তত অধিক বায় ও পরিশ্রম করিলেও তাদৃশ ইকু জন্মাইতে পারে না। এই হেতু ইক্ষু ক্ষেত্র এক বৎসর শস্য শুন্য করিয়া রাখিতে হইবে। ধান্যাদির মূল অপেকার্যুত কোমল এবং অপ্প উত্তাপেই শুষ্ক হইয়া যায়। এই নিমিত ধান্যাদি কেত্রে ৫।৬ মাস শস্যশ্না করিয়া রাখিলে, তাহার छे० भामिका नास्कि जनाशारम वनवडी इहेशा छेरि । धहेक्रभ গামলার মৃত্তিকায় এক বৎসর চারা উৎপন্ন করিয়া পর বৎসর সেই মৃত্তিকা পরিবর্ত্তন করিয়া চারা রোপণ বা বীজবপন করিবে।

জগৎপিতা জগৎ-প্রারম্ভে সর্ব্যপ্রকার সজীব পদার্থকে প্রক্রপ স্থানিবার্য নিয়মে চিরবন্ধ করিয়াছেন যে তাহারা আপন আপন ভক্ষ্য বস্তু উদরে পরিপাক করিলে যে রস উৎপন্ন হয় তাহাতেই তাহারা জীবিত ও রন্ধিশীল হইয়া

থাকে। তিনি জন্তদিগের যেরপ বিভিন্ন জাতির ভক্ষা বস্তুর বিভিন্নরপ ব্যবস্থা করিয়াছেন,উন্তিদদিগের প্রতিও দেইরপ যে মৃত্তিকা এক প্রকার উন্তিদদিগের ভোজ্য তাহা অন্যের ভোজনার্হ নহে, যে স্থানে ক্রমশঃ এক প্রকার উন্তিদের উৎপত্তি হইয়াছে তথায় দেই প্রকার উন্তিদ আর জন্মে না, ইহার কারণ এই মাত্র দেখিতেছি যে মৃত্তিকার এক এক উপাদান এক এক উন্তিদের ভোজনার্হ। যে স্থলে যে উপাদান অধিক পরিমাণে থাকে তথায় দেই উপাদান ভোজী বা ভোগী উন্তিদ সকল উত্তমরূপে জন্মে। এইরূপে উন্তিদ সকল নিজ্ঞ নিজ ভোজন পদার্থ অধিক পরিমাণে আকর্ষণ করিয়া বর্দ্ধিয়ে হইয়া থাকে, স্কৃত্রাং দেই পদার্থ নিঃশেষ হইলে তথায় উক্ত জ্ঞাতি উন্তিদ আর প্রায় উৎপন্ন হয় না।

উদ্ভিদ্দিগের কোন অংশ পোড়াইলে প্রায় সমুদ্র
মন্ত ইইরা যায়, কেবল কিঞ্চিৎ মাত্র ভন্ম অবশিষ্ট থাকে
বিদন্ধ বস্তুর উক্ত ভন্ম ভিন্ন বিমন্ত পদার্থকে ইংরাজী
ভাষার কার্বন কহে। উহাই অলারের সার অংশ এই বস্তু
বায়ুর ভিতর অভিঅপপ পরিমাণে থাকে অর্থাৎ এক সহস্র
অংশের মধ্যে এক অংশের অধিক থাকে না বায়ু যখন
নাসিকার দ্বার দিরাখাস যন্তের অন্তর্গত হা তখন প্রবায়র
উপাদান অক্সিজন নাটোজেন বায়ুও কার্বনিক প্রদিড
এই তিন বস্তুর মধ্যে অমকর (অক্সিজন) বায়ুরক্তের সহিত
মিশ্রিত ইইরা উহাকে পরিকার করে এবং অবশিষ্ঠ বায়ু
বহির্গত ইইরা যায়। জন্তদিগের শ্বাসজন্ত্র সদৃশ উদ্ভিদ

मिर्गित शेखित निम्नजोर्ग किन्या तक, जोएए। এই तक পথ অবলম্বন করিয়া বায়ু পত্রের ভিতর প্রবেশ করিলে পরিপক্ষ রদের সহিত মিশ্রিত হইয়া কার্যণিক এসিড ও নাইট্রোজেন তথায় সঞ্চিৎ হইয়া থাকে এবং অক্সিজেনের ভাগ বহির্গত হইয়া যায়। এইরপে কার্বণ ক্রমশঃ সঞ্চিত इ अशां ए डे सिन मकल दक्षि था अ इ श । ज अ व व डे सिन এই ছয়ের পরস্পরের শ্বাস ক্রিয়ার এই মাত্র ভেদ যে জন্ত-গণ নিশ্বাস সহকারে আরুষ্ট বায়ুর অক্সিজন ভাগা মাত্র গ্রাহণ করিয়া নাইট্রোজেন ও কার্বণিক এসিডের ভাগ পরি-ত্যাগা করে। এইরূপ জন্ত এবং উদ্ভিদদিগের পরস্পরের বিপরীত রূপ শ্বাস প্রক্রিয়া দর্শনে অনুমান হইতেছে যে জগৎপিতা জগৎরক্ষার জন্য কি আশ্বর্যা কৌশলই প্র-কাশ করিয়াছেন, জন্ত খাদ ক্রিয়া দারা বায়ুকে ছবিত করিতেছে। পক্ষান্তরে উদ্ভিদ সকল উহাকে সংশোধিত করিতেছে, এই প্রকারে বায়ু উভয় রক্ষা কারি গুণ ধারণ করিয়া সমভাবে রহিয়াছে, ইহার প্রত্যক্ষ প্রমাণ এই দেখি-তেছি যে এক কাচ নিষিত বাক্স জলে পরিপূর্ণ করিয়া ইহার তলভাগে ঝাজি ও পাটার চারা সকল রোপণ না করিয়া যদি ইহাতে মৎসা ও গেঁড়ি ছাড়িয়া দেওয়া যায়, তবে ইহারা কখনই জীবিত থাকিতে পারেনা। জন্ত ও উদ্ভিদ इंश्रां क्रीवन श्रांत्र श्रांक श्रांक्शात्र मार्थक করিলে সেই মল হইতে ঝাজি ও পাটা সকল কার্বনিক এসিড গ্রাহণ করিলে ইহার কার্বন ঝাজিও পাটার ভিতর

থাকে এবং অক্সিজন বহির্গত হইয়া যায়। মৎস্য সকল সেই অক্সিজন গ্রহণ করিয়া জীবিত থাকিতে পারে, কিন্তু ঐ বাক্সের ভিতর ঝাঁজি না থাকিলে উক্ত মল দারা জল দূষিত হইয়া মৎস্যাদিগকৈ নফ করে।

উদ্ভিদ সকলের ভন্ম পরিক্ষা করিয়া দেখিলে তাহাতে এই কএকটি উপাদান দেখিতে পাওয়া যায় (১) সিলিকা অর্থাৎ বালি (২) এলুমিনা অর্থাৎ এঁটেল মাটি (৩) লাইম চূণ (৪) ম্যাগনেসিয়া (৫) এলকেলাই অর্থাৎ অম নাশক নানা প্রকার ক্ষার পদার্থ যেমন পটাশ (৬) সলফিউরিক এসিড অর্থাৎ দ্রোবক (৭) অকসাইড্ অফ আইরণ অর্থাৎ লোহ সমুদ্রকূলে যে সমস্ত উদ্ভিদদিগের উৎপত্তি হয় তাহাদিগের ভন্মের ভিতর লবণ সোডা ও নানা প্রকার আইওডাইড্ থাকে। ভন্মের ভিতরের উপাদান দেখিয়া স্পষ্ট প্রতীয়মান হইতেছে যে ইহারা ঐ উদ্ভিদদিগের ভোজ্য বস্তু এই সকল বস্তু কি প্রকারে পরিপাক হইয়া উদ্ভিদদিগের ভোজ্য বস্তু এই সকল বস্তু কি প্রকারে পরিপাক হইয়া উদ্ভিদদিগের ভোজ্য বস্তু এই সকল বস্তু কি প্রকারে পরিপাক হইয়া উদ্ভিদদিগের ভোজ্য বস্তু এই সকল বস্তু কি প্রকারে পরিপাক হইয়া উদ্ভিদদিগের ভোজ্য বস্তু এই সকল বস্তু কি প্রকারে পরিপাক হইয়া উদ্ভিদদিগের

পূর্বোক্ত বস্তু সকল মৃত্তিকার সহিত যেরপ মিশ্রিত বাকে তাহা দেখিয়া অনুমান হয় যে ইহারা বিশুদ্ধ অব-স্থায় যাইয়া কখনই উদ্ভিদদিগের ভিতরে প্রান্তা কহ জল জাব্য কেছ এমে<sup>কি</sup>াা সংযোগে জাব্য কেছ বা কারবণিক এসিডের সহিত মিশ্রিত হইয়া কারবণেট অব সোডার জল জাব্য হইয়া উদ্ভিদদিগের ভিতর যাইয়া প্রবেশ করে। বালি জাব্য অবস্থায় পটাশের সহিত মিশ্রিত হইয়া সিলিকেট অব পটাশ হয়। ইহা

অতি প্রচুর পরিমাণে কঠিন প্রস্তারের উপাদান হইয়া থাকে। य मृक्तिश अधिक পরিমাণে সিলিকেট অব পটাশ খাকে, তথার গম, ইকু ইত্যাদি উত্তম রূপে জম্মে, কিন্তু যে মৃত্তিকার অপপ পরিমাণে থাকে দেই ভূমি পতিত রাখা অথবা আলু মূলা, সাল্যাম, ইত্যাদি যাহাদিগের জন্য অধিক শিলিকা আবিশ্যক করে না। তাহাদিগকে এই স্থানে রোপণ করা কর্ত্তবা, এইরূপ অবস্থায় তুই তিন বৎসর পাকিলে মৃত্তিকা-স্থিত শিলিকা সকল দ্রাব্য হইয়া উঠিতে পারে অথবা নিকটবর্ত্তী পর্বেত হইতে সিলিকা সকল দ্রাব্য অবস্থায় ধোত হইয়া ক্ষেত্রে পতিত হইলে ইহার উর্বরাশক্তি शूनक लक्ष इरें शिदा। कूरेक लारेम वर्शि वार्ष চুন সহকারে সিলিকা সকল দ্রাব্য হইয়া থাকে। ফেলসপার প্রস্তর গুড়া করিয়া কোন এসিডের সহিত মিঞ্জিত করিয়া ताथितन इरे जिन मछार माधा जावा ररेया गांय, किन्छ यनि প্রথমে ইহাতে কুইক লাইম যোগ করিয়া এবং তৎপরে তাহাতে এসিড দিয়া অগ্নির উত্তাপ সংলগ্ন করা যায়, তাহা হইলে চুন স্বৰ্পা কালের মধ্যে ফেলসপারের সহিত রাসা-য়নিক যোগে মিলিত হয়, এবং ইহার এলকেলাই অর্থাৎ পটাশ বহিৰ্গত হইয়া যায়, তখন ঐ এসিড সংযোগে ফেল-সপারের চুণ এবং সিলিকাদি সম্পূর্ণরূপে দ্রবীভূত হইয়া স্বচ্ছ আটার ন্যায় হইয়া উঠে, অর্জিনেসিয়স প্রস্ত-রের সিলিকেট সকল চূণের দ্বারা দ্রব হইতে পারে।

কুন্তকারদিগাের চিকণ মৃত্তিকা জলে গুলিয়া চূণের জল মিজিত করিলে উহা তৎক্ষণাৎ হন হইয়া যাইবে; আর তদবস্থায় এক মাস কাল রাখিয়া যদি ইহাতে কোন এসিড
মিশ্রিত করা যায় তবে প্র কাদা আচার ন্যায় হইয়া যাইবে, কিন্তু চূণের সহিত মিশ্রিত না করিলে উক্তরূপ কখনই
হইবে না। চূণ কাদার উপাদানের সহিত মিশ্রিত হইয়া
ইহাকে দ্রব করে এবং উহার এলকেলাই অর্থাৎ ক্লার
পদার্থ সকল বহির্গত করিয়া দেয়, চূণের উক্তরূপ গুণ
দেখিয়া স্থির হইয়াছে যে মৃতিকায় চূণ মিশাইয়া দিলে
উহা শীঘ্রই বলবতী হইবে। যদি মৃতিকায় অধিক বোধ
মৃতিকা থাকে তবে তাহা পোড়াইলে চূণের ন্যায় কায়্য
করে।

চিকণ মৃত্তিকায় যে সকল সিলিকেট থাকে তাহারা এসিড সংযোগে কার্য্যকারী হইতে পারে না। কিন্তু সিলিকেটকে অগ্রে পোড়াইয়া তাহাতে এসিড সংযোগ করিলে উহা দ্রবীভূত হইয়া কার্য্যকারী হইবে।

কুন্তকারের মৃত্তিকা মিশ্রিত মৃত্তিকা এবং অন্য প্রকার এঁটেল মৃত্তিকায় ও উক্তরপ গুণ আছে, ইহাদিগকে স্বাভাবিক অবস্থায় বিশুদ্ধ দ্রাবকে সিদ্ধ করিলে কোন পরিবর্তন হয় না, কিন্তু ইহাদিগের সহিত কিঞ্ছিৎ চূণ সংযোগ করিলে দিলিকা সকল দ্রাব্য হইয়া আ লার ন্যায় হইয়া যায়। রফির জল ও সমুদ্র জলে কানিক এসিড আছে এই জন্য এই ছই প্রকার জল যাহাতে লাগিবে তাহাই ক্ষয় হইয়া পডিবে। কঠিন প্রস্তর সকল ইহাদিগের দ্বারা ক্ষয় হইয়া মৃত্তিকাসাৎ হইয়া থাকে, কারণ মৃত্তিকার উপাদান সকল দ্রাব্য অবস্থায় প্রস্তরের চুণ, সোডা, পটাশ,

আকর্ষণ করিয়া লয়, স্বতরাং কার্কনিক এসিড সংযোগে প্রস্তুর হইতে উক্ত দ্রবা সকল মৃত্তিকার ভিতর প্রচুর পরিমাণে উৎপত্তি হইয়া থাকে। উদ্ভিদদিগের পুর্যুক্তর দ্রবা মধ্যে ফস্ফেট অফ লাইম অতি প্রয়োজনীয়, ইহা অদ্বিও জন্তদিগের বিষ্ঠার ভিতর থাকে, ক্লোরিণ ও সোডা, মৃত্তিকার ভিতরে লবণ থাকে তাহা হইতে উৎপন্ন হয়, গন্ধক গিপসম হইতে উৎপত্তি হয়। লোহা মৃত্তিকার সব স্থানে আছে, পর্বতে প্রদেশে ইহা অক্সিজনের সহিত মিশ্রিত হয়য়া লাল বর্ণ হয়। উক্ত দ্রবাদি ভিন্নং পরিমাণে ম্যান্থানিসার সহিত সংযোগ হইয়া উদ্ভিদদিগকে রিদ্ধিশিল করে। কারবণিক এসিড সংযোগ হইয়া উদ্ভিদদিগকে রিদ্ধিশিল করে। কারবণিক এসিড সংযোগ যে প্রকারে মৃত্তিকার উপাদানের যোগা বিচ্ছেদ হয়য়া থাকে তদ্বির্বণ প্রকাশ করিয়া এক্ষণে অন্যান্য বস্তু দ্বারা যে প্রকারে এই উপাদান সকলের যোগা বিচ্ছেদ হয় তদ্বিয়ে কিঞ্চিৎ লিখিতে প্রত্ত হইলাম।

এই পৃথিবীতে কখন জন্ত দেহ কখন উদ্ভিদাদি পঢ়িয়া
মৃত্তিকাসাৎ হইতেছে এবং ঐ জন্ত দেহ উদ্ভিদাদি দারা
পূর্ব্বোক্ত রূপ যোগ বিচ্ছেদ হইতেছে। জন্ত দেহ
উদ্ভিদাদি মৃত্তিকার সহিত মিশ্রিত হইলে ভূমির উর্ব্বরতা
শক্তি বর্দ্ধিত হইয়া মৃত্তিকার যে সকল বস্তু সংযোগে জন্ত
দেহ ও উদ্ভিদাদি উৎপন্ন হইয়া ছিল তাহাই পুনর্বার
আসিয়া মৃত্তিকায় উপস্থিত হয়, এইরূপ স্বাভাবিক কার্য্য
ক্রমশঃ প্রচলিত হইয়া আসিতেছে এবং পৃথিবীতে শস্যোৎপত্তি সমভাবে হইয়া আসিতেছে। যদি মৃত্তিকা আল্গা হয়

ও তাহাতে প্রচুর পরিমাণে চুণ থাকে,তবে জন্ত দেহ ও উদ্ভিদ শীব্র পচিয়া যায় কিন্তু কঠিন এঁটেল মৃত্তিকা হইলে ঐ হই বস্তু শীব্র অক্সিজন আকর্ষণ করিতে থাকে, এবং যে এমোনিয়া এই মৃত্তিকার ভিতর থাকিবে তাহা পরিবর্ত্তন ইইয়া নাইটিক এসিড হইয়া যাইবে।

কোন রক্ষের জব্দ জলে গুলিলে ইছার ভিতর চুণ যে কোন অবস্থায় থাকিবে তাহা এ জলে মিশ্রিত হইবে। ভন্মের ভিতর যে সকল নাইট্রেট থাকিবে তাহারা ঐ চূণের জলে মিশ্রিত হইবে। ইহাতে অনুমান হইতেছে ষে আল্গা মৃত্তিকা যেরপ এমোমিয়া ধারণ করিয়া রাখে সেইরপ নাই-্রিক এদিড ধারণ করিয়া রাখিতে পারে না। এই বস্তু চুণ কিম্বামাাগনেসিয়ার সহিত মিগ্রিত হইয়া র্ষ্টির জলের দারা মৃত্তিকার নিম্নন্তরে যাইয়া স্থিত হয়। যে সকল রক্ষের শিকড় মৃত্তিকার অধিক নিম্নভাগের রদ আকর্ষণ করিয়া शांक डाइमिर्गत शक्क जे नस अधिक कार्याकारी इरा। অতএব মৃত্তিকায় চূণের ভাগা অধিক থাকিলে, সেই মৃত্তিকার জন্ত সার থাকিলে ইছার এমোনিয়া পরিবর্তন ছইয়া নাই-ট্রিক এনিড উৎপন্ন হয়, এবং তাহা র্ফির জালর সহিত মিশ্রিত হইয়া নিম্নন্তরে যাইয়া উপস্থিত হই ে সেই মৃতিকা আকর্ষণ করিয়া রাখিলে ইছা শস্যাদি চারার পক্ষে কখন डेशरांशी इहेरव ना, कांत्रग नाहरहो। जन विभिन्न रिय जका দ্রব্য তাহা ক্রমশঃ ঐ মৃত্তিকায় অভাব হওয়াতে উহার **छर्कद्रा गक्ति आद्र किছू** शिक्टिव मा।

কোন ক্ষেত্রে এক জাতি চারা ক্রমশঃ রোপণ করিলে তথায় ঐ জাতীর ভক্ষা দ্রব্য ক্রমশঃ কমিতে থাকে। এজন্য ঐ ক্ষেত্র কিছু দিন পরে সেই জাতীর চারার পক্ষে অকর্মণ্য হইয়া পড়ে। যেমন কোন ক্ষেত্রে ফস্ফরিক এসিড অভাব হইলে ঐ দ্রব্য যে চারা অধিক পরিমাণে গ্রহণ করিয়া থাকে, তাহার পক্ষে উক্ত ভূমির উর্বর্গ কখনই প্রকাশ হইবে না। এবং যে ভূমিতে পটাশের ভাগ কিছু মাত্র থাকেনা যদিও তাহাতে অন্য উপাদান প্রচুর পরিমাণে থাকে তথাপি তাহাতে ভক্ষক চারা সকল কখনই উৎপন্ন হইবে না।

মৃত্তিকা মিশ্রিত ফসফেট সকল জল এবং কার্বোণিক এসিড সংযোগে যে প্রকার মৃত্তিকার বিস্তীর্ণ হইরা পড়ে তিদ্বিরণ আমরা পূর্বে প্রকাশ করিয়াছি। একণে ক্লো-রাইড অব সোডিরম অর্থাৎ লবণ, নাইট্রেট অব সোডা এবং এমোনিরা ইত্যাদি সংযোগে এ ফসফেট যে প্রকারে বিস্তীর্ণ হইরা পড়ে, তদ্বিষর প্রকাশ করিতেছি।

কিন্তু ঐ সকল ভক্ষা দ্রব্য উদ্ভিদগণ যে প্রকারে ভক্ষণ করিয়া থাকে তদ্বিষয় বিবেচনা করিলে এই নিরূপণ হয় যে মনুষ্য জাতির ভক্ষা দ্রব্য যে প্রকারে অগ্রে প্রস্তুত হইয়া গৃহীত হইয়া থাকে। উদ্ভিদদিগের ভক্ষা দ্রব্য সকল সেই প্রকারে পরিপাক করিয়া গ্রহণ করিবার উপযুক্ত করিতে হয়। উদ্ভিদদিগের শিকড়ের অগ্রভাগে ইহাদিগের মুখের স্বরূপ যে সকল স্ক্রম ছিদ্র আছে তাহা দেখিয়া স্পষ্ট প্রতীয়মান হইতেছে যে কোন বস্তু জল-দ্রাব্য না হইলে

ইহাদিগের ভিতরে যাইয়া কখনই প্রবেশ করিতে পারে না। धरे खना जका येवा मकल यांजीविक कोर्नाल खन योवा इहेल निकड़ मकल आंकर्षण कतिया लया, এই मकल डेशीमान মৃত্তিকার ভিতর রাসায়ণিক যোগে এমৎ দুঢ়বন্ধ আছে যে তাহাদিগের চিহ্ন কিছুমাত্র দেখিতে পাওয়া যায় না এবং উদ্ভিদ্দিগের কোন শক্তি দ্বারা ইহাদিগের যোগ বিচ্ছেদ করা হইতে পারে এমত কিছুই দেখিতে পাই নাই, তৎ-প্রযুক্ত স্বাভাবিক কৌশলে উদ্ভিদ্দিগের ভক্ষ্য দ্রব্য সকল প্রস্তুত হইয়া থাকে, সভাবিক কৌশলে ভক্ষ্যদ্রব্য প্রস্তুত হইলে জল বায়ুর উত্তাপ এই তিন বস্তু মৃত্তিকার সহিত সংলগ্ন হইলে ইহার রাসায়ণিক যোগ বিচ্ছেদ হইয়া একরপ মিশ্রিত অবস্থা প্রাপ্ত হয় এবং তাহাতে উপাদান সকল এমত বিভিন্ন হইয়া পড়ে যে উদ্ভিদ সকল তাহাদিগকে অনায়াদে গ্রহণ করিতে পারে। র্ফিরজন মৃতিকার উপর পড়িলে ইছার কার্ব্যণিক এসিড সংযোগে মৃত্তিকার উপা-দান দিগের যোগ বিচ্ছেদ হইয়া যায় এবং উত্তাপ ও বায়ু সহকারে উক্তরপ যোগ বিচ্ছেদ ক্রিয়া নির্বাহ হইর। शांक। कान ऋल मृक्ति शांनि धक करिया दार्थिल তাহাতে জল বায়ু ও উত্তাপ লাগিয়া অতা আল্গা এবং বিশেষ উর্বর। হইর। উঠে। যেমন স্টারকা নির্মিত গৃহের প্রাচীর বহুকালে বায়ু ও উত্তাপ সংলগ্ন ছও-শীত্র তাহা গলিয়া যায়, ক্লযকেরা এ সকল মৃত্তিকা ক্ষেত্রে ব্যবহার করিয়া থাকে এবং ইয়কৈ নির্মিত প্রাচী-

রের নিম্নভাগের ইফক সকল কার্কনিক এসিডসংযোগে কখন২ গুড়া হইয়া খদিয়া পড়িতে থাকেএবং মৃত্তিকা নিৰ্শিত প্রাচীরের নিম্নভাগেও কখন কখন র্জ প্রকারে মৃত্তিকা খসিয়া যাইতে দেখা যায়। পর্ব্বতের উপরিভাগে রুষ্টির জল পড়িলে ও ক্রমশঃ বায়ু সংলগ্ন হওয়াতে ঐ জল ও বায়ুর কার্ব্যণিক এসিড সহকারে প্রস্তর সকল স্তরে স্তরে কুদ্র২ অংশ হইয়া খিসিয়া পড়ে। সেই সকল তাংশ র্ফির জলের সহিত মিলিত হইয়া নিম্নভাগে আসিয়া উপস্থিত হইলে মৃত্তিকারপে পরিণত হয়। এইরপে পর্বতের উপরিভাগ ক্রমশঃ খসিয়া পড়াতে কোন কোন পর্বতের উপরিভাগে রহৎ গহ্বর উৎপন্ন হয়। অনন্তর উৎপন্ন নুতন মৃত্তিকার উপরিভাগে শৈবলাদি উৎপন্ন হইয়া যখন মরিয়া যায় তৎকালে ইহা-দিগের কার্বণ মৃত্তিকার সহিত মিশ্রিত হইলে এ মৃত্তি-কায় অন্যান্য উদ্ভিদ স্মচাক্রপে উৎপন্ন হইতে থাকে। কখন কখন ঐ নব মৃত্তিকার কিয়দংশ র্ফির জলের সহিত ধৌত হইয়া প্রান্তরে আসিয়া উপস্থিত হইলে ইহাদিগের উপাদান সংযোগে দেই স্থানের মৃত্তিকা উর্বরা শক্তি প্রাপ্ত হয় |

এই প্রকারে মৃতিকার উপরে র্ফিপাত হইলে ইহার উপরিভাগের যে সকল অংশ বায়ু ও উত্তাপ সংলগ্ন হও-য়াতে আল্গা হইরা ধূলার ন্যায় হইরাছিল। তাহা একণে জলের সহিত মিশ্রিত হইয়া স্থানে স্থানে বিভীর্ণ হইয়া পড়ে। পরে ইহার কতক অংশ যে স্থলে আদিয়া সঞ্চয় হয় নেই ভূমি অপেকারত শস্যশালিনী কল

এবং ইহার অবশিষ্ট ভাগ মৃত্তিকার ভিতর প্রবেশ করে। এইরপে অস্মাদশীয় আমের উপরিভাগ ধৌত হইয়া ধানা ক্ষেত্রে আসিয়া উপস্থিত হয়। এবং তদ্বারা এ ক্ষেত্র স্বাভাবিকী উর্বরা শক্তি প্রাপ্ত হয় ও তথায় অন্য কোন छेशांत्र कतियात आयमाक शांक ना। मृखिकांत्र जल शिष्ट्रल প্রথমে কাদার ন্যায় হইয়া উঠে পরে ইহার যে সকল অংশের যোগ বিচ্ছেদ হইয়াছে সেই সকল অংশ জলের সহিত মিশ্রিত হইয়া জল ঘোলা হইয়া যায়। এবং অবশিষ্ট অংশ কাদা হইয়া পড়িয়া থাকে। এই কারণ বর্ষাকালে অম্ব-(मानीश निनेत्र जल शिला इश। श्रत निनेत्र जल श् সকল ভূমি প্লাবিত হয়; ও সকল ভূমিতে নদীর জলের পলি পড়াতে বিশেষ উর্বর। হইয়া উচে। নদীর জলের পলি কোন স্থানে ক্রমশ আপসিয়া সঞ্চিত হইলে চর উৎপন্ন হয়। ঐ চরের মৃত্তিকা এরূপ উর্বরা হয় যে তথায় অক্ষাবস্থাতেই অনেক উদ্ভিদাদি স্বভাবিক উৎপন্ন হইয়া থাকে। পরে তথায় যে কোন উদ্ভিদ রোপণকরা যাইবে তাহা সুচারু রূপে উৎপন্ন হইতে পারিবে পুঞ্চর্ণির পঙ্ক এইরূপ মৃত্তিকা এই জন্য ইহার मश्यार्श द्रकानि द्रिक्षिनील इहेग्रा थारक। य श्वकर्णि उद् कालाविधि পलि मिक्षिङ इहेशा পরিপূর্ণ इहेश एक यनि मिहे পুষ্ণুণির পক্ষ কাটিয়া কোন উদ্যানে বিজ ন করিয়া দেওয়া যায়; তবে ঐ উদ্যানের উৎপাদিকা শক্তি রদ্ধি হইয়া উঠে। উত্যানের উপরি ভাগ হইতে বর্ষার জলে পলি গ্রেত হইয়া পাণারের ভিতর ক্রমশঃ সঞ্চিত হইয়া থাকে। এই জন্য প্রতি वरमङ भगोद्रित मृखिकां कार्षिया छेमाद्र फिलिटन के छेमा-

নের মৃত্তিকা তেজস্বর হয়। এই কারণে উন্নত স্থান অপেকা নিম্ন ভূমি সকল অপেকাত্তত তেজস্বর হয়।

পরে পলির যে অংশ মৃত্তিকার ভিতর যাইয়া প্রবেশ করে; তাহা মৃত্তিকার সকল স্তর আক্ষণ করিয়া লয় যেমন কয়লাতে জল মিশ্রিত কোন রঙ্গ পতিত হইলে কয়লা ले उक आकर्षन करिया नय अन्य किया वक लिए।-ইলে যে ছিদ্র বিশিষ্ট কয়লা উৎপত্তি হয়; তাহার যেমন রঙ্গ আক্র্ণ শক্তি অন্য ক্য়লা অপেক্ষা অধিক হইয়া থাকে; সেই রূপ উর্বার মৃত্তিকা অন্য মৃত্তিকা অপেক্ষা অধিক পলি গ্রহণ করিয়া থাকে। কয়লার রঙ্গ আকর্ষণ শক্তি যে রূপ खल्तत लन्। जाकर्गणिक मिरे थकात। काम लन्ग जल्म গুলিলে ইহার রসায়নিক গুণ কিছুই পরিবর্ত্তন হয় না। কয়লা कान तक जाकर्ग कतिल, भे तकत थन मकन ममजाव থাকে। যদি কয়লার আকর্ষণশক্তি জল অপেক্ষা অধিক হয়; তবে জল হইতে কয়লা সমূদয় রঙ্গ টানিয়া লয়। কিন্তু উভ-(য়র শক্তি তুলা হইলে ঐ রঙ্গ ছুয়ের মধ্যে বিভাগ হইয়া পড়ে। যে রঙ্গ কয়লার দ্বারা আকর্ষণ করা হয়, তাহার রসা-য়নিক গুণ কিছুই পরিবর্ত্তন হয় না; কেবল ইহা আর জল जावा इहेट भारत ना। किन्छ कोन वञ्च मश्यार्थ जलात আকর্ষণশক্তি র্দ্ধি করিলে কয়লার দ্বারা যে রক্ত আকর্ষণ कदा इहेशारहः जाङा र्छ जल ममूनय छोनिया लहेर भारत। य जल इरेट कशला तक आकर्षण कतिशाष्ट्रः मिरे जल यिन কোন এলকেলাই বা খার দ্রব্য মিশ্রিত করা যায়; তবে क्यला इहेट जल म्यूम्य दक्ष छे निया लय।

উর্বান মৃত্তিকা কয়লার সদৃশ। কোন সার ত্রব্য, যেমন গোবর কিম্বা অন্য কোন বস্তু; জলে গুলিয়া যদি এ মৃত্তিকার উপর ঢালিয়া দেওয়া যায়; তবে ইহা রজও গদ্ধ বিহীন হইয়া তলভাগে পতিত হয়। ইহার রজও গদ্ধ ও এমোনিয়া ও পোটাশ এবং ফশফরিক এসিড এ মৃত্তিকা টানিয়া লয়।

কয়লার আদৎ অবস্থায় যে রপ আকর্ষণশক্তি থাকে,
ইহাকে ওঁড়া করিলে সেই রপ শক্তি আর থাকে না। যে
প্রস্তারের যোগ বিচ্ছেদ হইয়া উর্বরণ মৃত্তিকা উৎপতি হয়;
যদি সেই প্রস্তার ওঁড়া করা যায়; তবে তাহার আকর্ষণশক্তি
কয়লার ওঁড়ার সদৃশ অতি অপা হইবে। যদি সেই প্রস্তার
ওঁড়াতে বিশুদ্ধ জল কিম্বা কার্ম্বণিক এসিড মিশ্রিত জল
ঢালিয়া দেওয়া যায়, তবে প্রস্তারের ওঁড়ার সিলিকেট অফ
পোটাশ সোডাও অন্য অন্য উপাদান ঐ জল টানিয়া
লইবে। কিন্তু জল হইতে উক্ত উপাদান সকল প্রস্তর ওঁড়া
কখনই আকর্ষণ করিতে পারে না।

মৃত্তিকার উপাদানের যোগত ইছার পোটান এমোনিয়া ও ফশফরিক এসিড আকর্ষণশক্তি এই ছয়ের বিশেষ কোন সংযোগ দেখিতে পাওয়া যায় না। যে মৃত্তিকায় এটেলের ভাগ অধিক আছে, তাহাতে কিঞ্চিং চুন শিশুত করিলে যে পরিমাণে ইহার আকর্ষণশক্তি রন্ধি হন্টার; যে মৃত্তিকায় চুণের ভাগ অধিক আছে, তাহাতে এটেল মৃত্তিকা কিঞ্চিং সংযোগ করিলে সেই রূপ আকর্ষণশক্তি হইবে। কিন্তু উক্ত মৃত্তিকাদ্বের মধ্যে উদ্ভিদসার থাকিলে এই আকর্ষণশক্তি পরিবর্ত্তন হইয়া যাইবে। আর বিশেষ রূপ নিরূপণ করিলে এই দেখিতে পাওয়া যায়, যে মৃত্তিকার অত্যন্ত কঠিন ও আল্গা গুণানুসারে এই আকর্ষ গশক্তি বিভিন্ন হইয়া থাকে। কঠিন এটেল ও অত্যন্ত আলগা মৃত্তিকার আকর্ষ গশক্তি অতি অপ্গ আছে। মৃত্তিকার আকর্ষণশক্তি অংশ ইহার সকল উপাদানে অবশ্য থাকিতে পারে।

যে প্রস্তুর গুড়া হইয়া উর্ব্যান মৃত্তিকা হইয়াছে; সেই প্রস্তুর ঐ উর্ব্যা মৃত্তিকার সম্বন্ধে যে রূপ কান্ঠ কার্চপচা সারের পক্ষে তর্জ্ঞপা

যে সকল কারণে অপা বৎসরের মধ্যে কার্চ পচিরা সার উৎপত্তি হয়, সেই সকল কারণ যদি প্রস্তারের উপর নিকেপ করা হয়; তবে বহু বৎসরে এ প্রস্তর গুঁড়া হইয়া ननी ११एडं अक उत्र डेर्क्र व्या मृजिक। डेर्शिव क्रित्र। अनर চারাদিগের পুর্ন্টির জন্য ইহার রাসায়নিক ও স্বাভাবিক ওণ উপযুক্ত পরিমাণে থাকিবে। করাতের ওঁড়া যে পরিমাণে কার্চ পদা সারের গুণ ধারণ করে, প্রস্তরের ওঁড়াতে সেই পরি-मार्। डेका त। मृज्यितात छ। मकलि जार्छ। कांत्र। कत्रारुत ওঁড়া পচিয়া সার উৎপত্তি হয়। এবং প্রস্তর ওঁড়া হইয়া উর্বামৃতিকা উৎপত্তি হয়, নানাবিধ প্রস্তর ওঁড়া হইয়া যে উর্বরণ মৃত্তিকা হইয়াছে; তাহাও জলদাব্য উপধাতু-দিগকে আকর্ষণ করিতে যে রূপ সক্ষম যে কাষ্ঠ পচিয়া সার রূপে পরিণত হইয়াছে, তাহার উদ্ভিদ সার বস্তু-দিগকে ধারণ করিবার শক্তি তজপ। ইহা কথিত হইয়াছে य कार्यमि जिक्न (भाषाभा किन्न। এমোনিয়ার জল হইতে অথবা কার্যণিক এসিড মিশ্রিত ফশফেট অফ লাইমের জল

উর্বেরা মৃত্তিকা পোটাশ এমোনিয়া ও ফশফরিক এসিড টানিয়া লয়। এবং তাহাতেও এ মৃত্তিকার উপাদানের কোন রসায়নিক পরিবর্ত্তন হয় না। এই বিষয়ে কয়লা অপেক্ষা উর্বরা মৃত্তিকার গুণ অতি প্রবল কারণ; ইহা পোটাশ এমো-নিয়া ইত্যাদি সকল বস্তুর যোগা বিচ্ছেদ করিয়া গ্রহণ করে অস্থি কয়লা ও উর্বরা মৃত্তিকা এই হুই তুলা অস্থি কয়লাতে ফশফেট সকল থাকাতে যে সকল বস্তুর যোগ বিচ্ছেদ করে, ফশফেট বিহীন উদ্ভিদ কয়লার দ্বারা দেই কার্য্য কখন নির্বাহ হইতে পারে না। উর্বরা মৃতিকায় চুণ ও ম্যাগ-নিসিয়া থাকাতে ইহার আকর্ষণ শক্তির কিছু অংশ অবশা রৃদ্ধি হইতে পারে। আমরা অনুমান করিতে পারি যে, মৃত্তিকার প্রমাণুর আকর্ষণশক্তি এমত প্রবল নহে ए, नाइद्विष्ठ ज्यक পোটাশের যোগ বিচ্ছেদ করিয়া নাইট্রিক এসিড হইতে পোটাশ সংগ্রহ করে। কিন্ত हेशांड लाहेम अ मार्गातनिया थाकांड नाहेंद्वेडे अक (भोडोर्गंद्र योगं विष्कृत कार्या अनाशंक्रा कहें छ भारत। এक मिर्क मुखिका (পाहानरक होनिया नय; जना मिर्क हुन मार्गानिका नार्डिक अभिएक आंकर्षण करत। किछ अरे কার্য্য কেবল একাকী মৃত্তিকার দ্বারা কখনই হউতে পারেনা।

উর্বান মৃত্তিকার দ্বারা কোন বস্তুর যোগ বিচ্ছেদ হইরা থাকে; এবং রাসায়নিকও অন্য অন্য উপায় দ্বারা সেই স্তুরব যোগ বিচ্ছেদ হয়। কিন্তু এই হুই প্রকারের মধ্যে বিভিন্ন এই মাত্র দেখিতে পাওলা যায় যে, দ্রাব্য বিহিন চুনের দ্বারা দ্রাব্য পোটাশের যোগ বিচ্ছেদ এমত প্রকারে নির্বাহ হয় যে তাহাতে পোটাশ জাব্য বিহীন ও চুন জাব্য হইয়া যায় ইহাতে অনুমান হইতেছে যে আর কোন আকর্ষণীশক্তি ইহার ভিতর থাকিতে পারে তদ্বারা এ রূপ পরিবর্তন হইয়া যায় যদি এক চোন্ধা মৃত্তিকা পরিপুরিত করিয়া তাহার উপর জল ও কার্বণিক এনিড মিশ্রিত ফশফেট অফ লাইম ঢালিয়া দিলে এ মৃত্তিকার উপরি ভাগের শুর প্রথমতঃ এ জল মিশ্রিত ফশফেট অফ লাইম হইতে ফশফরিক এসিড টানিয়া লইবে পরে এ জল দ্বিতীয় স্তরে যাইয়া উপস্থিত হইলে তথায় কিঞ্চিৎ অংশ ফশফরিক এসিড সঞ্চিত হইয়া থাকে এই রূপ নিমুস্থ স্তারে যত যাইতে থাকিবে ততই ফশফরিক এসিড বিস্তার্ণ হইয়া মৃত্তিকার এক এক প্রমাণুতে সমভাগো সঞ্চিত হইয়া থাকিবে যদি ফশফেট অফ লাইম রক্তবর্ণ " হইত ও মৃত্তিকা স্বচ্ছ হইত তবে সমুদয় মৃত্তিকা রক্তবর্ণ দেখাইত এই প্রকারে যদি কার্ব্যেট অফ পোটাশ জলে গুলিয়া মৃতিকা পূরিত চোস্থার উপর ঢালিয়া দেওয়া যায় তবে উক্ত প্রকারে ইহার পোটাশ মৃত্তিকা মধ্যে বিস্তীর্ণ হইয়া যায় এবং নিম্ন শুরে পোটাশের ভাগা অধিক সঞ্চয় इहेशा थारक।

উদ্তিদদিগের ভক্ষা দ্রব্য সকল উক্ত প্রকার মিশ্রিত অব-স্থায় থাকিলে শিকড় মৃত্তিকার যে স্থলে যাইয়া সংলগ্ন হইবে তথা হইতে ভক্ষা দ্রব্য সকল অতি সহজে গ্রহণ করিতে পারিবে ইহারা জল দ্রাব্য অবস্থায় যে ক্লপে গ্রহণ উপ-যোগী এই অবস্থাতে ও সেই রূপ হইয়া থাকে।

উর্মারা ও অনুর্যারা মৃত্তিকাতে এই ভেদ দেখিতে পাই

যে উর্করণ ভূমিতে ভক্ষা দ্রব্য সকল এমত আলগা ভাবে থাকে যে উদ্ভিদ সকল তাহা অনায়াসে গ্রহণ করিতে পারে কিন্তু অনুর্করণ ভূমিতে পোটাশ শিলিশিক এসিড শিলিকেটদিগের ভিতর এমত দৃঢ়হ বন্ধ থাকে যে শিকড় সকল সেই যোগ কোনক্রমে ভঙ্গ করিতে পারে না এই জন্য মৃত্তিকা খনন করিয়া রাখিলে শ্লুতু প্রভাবে উপধাতুদিগের যোগ বিচ্ছেদ হইয়া স্থানে স্থান সমান রূপে বিস্তীর্ণ হইয়া পড়ে।

যে ভূমিতে কোন কালে কোন উদ্ভিদ উৎপন্ন হয় না সেই স্থান কালেতে পরিবত্তন হইয়া ক্রমি কার্যোর উপযোগী হইয়া উঠে কিন্তু ঐ ভক্ষ্য স্তব্যের যোগ বিচ্ছেদ হইবার যে রূপ আপত্তি হইবে সেই অনুযায়ী উক্ত রূপ পরিবর্তন হই-বার বিলম্ব হইবে।

ভূমি যত কর্ষণ করা হইবে, ততই ইহার পুর্ফিকর দ্রবা সকল রাসায়নিক যোগ হইতে পরিবর্তন হইরা মিশ্রিত অবস্থা প্রাপ্ত হইবে। এবং উদ্ভিদ সকল তাহাতে রিদ্ধি প্রাপ্ত হইতে পারিবে, ভূমি শসাশালিনী করিতে হইলে, ইহার যে অংশে শিকড় সকল আসিয়া সংলগু হইবে, তথায় কিঞ্চিৎ মাত্র ভক্ষা দ্রব্য অবশ্য থাকিবে। মিশ্রিত অবস্থায় পুর্ফিকর দ্রব্য সকল যত পরিমাণে মৃত্তিকার থাকিবে। তদামুযায়ী ইহার উৎপাদিকা শক্তি হইবে যখন পুর্ফিতর দ্রব্য সকল ক্রমশঃ রোপিত চারার দ্বারা আকর্ষণ করিয়া লওয়া হয়; তথ্য অন্য অন্য উপাদান সকল রসায়নিক যোগে মৃতিকায় বিস্তৃত না থাকিলে, পূর্বকার মিশ্রিত অবস্থা কখনই পুন প্রাপ্ত হইতে পারে না।

যে সকল রক্ষের শিকড় মৃতিকায় অতি নিম্ন স্তর অবধি গমন করিয়া থাকে, তাহাদিগের দারা মৃত্তিকার উপরিভা-গের উৎপাদিকা শক্তি কিছুই হীনতা হয় না। কিন্তু তথায় শদ্যাদির চারা রোপণ করিলে, ছই চারি বৎসরের মধ্যে ইহার উর্বেরা শক্তি আর কিছুই থাকে না কিন্তু কিয়ৎ ভূমির ঐ রূপ উর্বর। শক্তির হীনত। কখনই চিরস্থারী থাকে না। যে চারার শিক্ড নিম্ন তার অবধি গমনকরে শা, তাহার পক्ष्म क्षेत्र किथा कथन छेथाराशी नरह, कांत्र नाहितिकन বিশিষ্ট যে ভক্ষা দ্রব্য তাহা ক্রমশঃ ঐ মৃত্তিকায় অভাব হওয়াতে ইহার উর্ফারা শক্তি আর কিছুই থাকে না। কোন ক্ষেত্রে এক জাতি চারা ক্রমশঃ রোপণ করিলে সেই জাতি চারার যে প্রধান ভক্ষ্য দুব্য, তাহার অভাব হইয়া পড়ে। এই জন্য ভজ্জাতীয় চারার পক্ষে দেই ভূমির উর্বরা শক্তি আর কিছুই থাকে না, যেমন কোন কোত্র ফশফরিক এসিড অভাব হইলে, এ দুব্য যে চারা অধিক পরিমাণে গ্রহণ করিয়া থাকে, তাহাদিগের পক্ষে এ ভূমি কখন উর্বরা গুণ প্রকাশ করিবে না। যে ভূমিতে পোটাশের ভাগ কিছু মাত্র मा शांक, यिन छारा छ जना छे भानान श्राह्म भित्रमान থাকে, তথাপি তাহাতে পোটাশ ভক্ষক চারা সকল কখনই উৎপত্তি হইতে পারিবে না।

মৃতিকা মিঞিত ফশফেট সকল, জল এবং কার্বণিক এদিড সংযোগে যে প্রকারে মৃতিকায় বিস্তীর্ণ হইয়া পড়ে তদ্বিরণ আমরা পূর্বে প্রকাশ করিয়াছি এক্ণণে ক্লোরাইড অব্ সোডিয়াম অর্থাৎ লবণ। নাইফেন্ট অব্ সোডা এবং এমোনিয়া ইতাদি সংযোগে লাইম ও ফসফেট সকল যে প্রকারে বিস্তার্গ হইয়া পড়ে তদ্বিরণ প্রকাশ করিতেছি কার্বনিক এশিড জলের সহিত মিশ্রত হইয়া মৃত্তিকার ভিতর ফশফেট দিগকে দ্রবীভূত করিয়া স্থানে স্থানে বিস্তর্গ করিয়া থাকে আর কতিপয় বস্তু আছে যাহাদিগের দ্বারা ঐ রূপ কার্যা নির্ব্রাহ হইয়া থাকে যেমন লবন নাইট্রেট অফ সোডা এবং এমোনিয়া কিন্তু লবন ও নাইট্রেট অব সোডা এই বিষয়ে যে রূপ কার্য্য কারি এমোনিয়া সেই রূপ শক্তিধারণ করে না কারন ইহা মৃত্তিকার ভিতর প্রবেশ করিবা মাত্র মৃত্তিকার প্রথমন্তর ইহাকে আর্কশণ করিয়া লয় এবং তাহাতে সেই স্থানে অতিশয় তেজক্ষর হয় এবং নিম্নন্থরে কিছুমাত্র যাইতে পারেনা কিন্তু অপর ত্লই বস্তুরকার্য্য নিম্ন স্তর্যার্থ যাইয়া থাকে।

# मृं खिका शतीका कतिवांत शृखं जाएशां जन।

মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ করিতে প্রবৃত্ত ছইবার পূর্বের যে সকল যন্ত্র ও বস্তু সংযোগে যোগ ভঙ্গ করিতে ছয়, তদ্বিরণ অগ্রে প্রকাশ করিয়া পরে অন্যান্য বিষয় লিখিতে আরম্ভ করিব। প্রথমতঃ, মৃত্তিকা ও ডাইয়া প্রস্তুত করিবার জন্য এক খানি খল আবশ্যক করে। ইহার দ্বারা মৃত্তিকাকে চূর্ণ করিয়া ধূলার ন্যায় করিতে হয়, দ্বিতীয়তঃ, নিক্তি অতি সূক্ষয়পে মৃত্তিকাকে ওজন করিবার জন্য আবশ্যক করে। ইহাতে টাকা ফেলিয়া ওজন করিতে ছইবে তৃতীয়তঃ, ধৌত করিবার পাত্র কাঁচের গ্রাম ছইলে অতি উত্তম ছইতে পারে। চতুর্থ

ছাকিবার যন্ত্র, বোতলে তৈল পুরিবার জন্য যে চুলি ব্যবহার হইয়া থাকে, তাহার সদৃশ এক কাচ চুলি প্রস্তুত করিতে হইবে। পরে ছাকনি নামে এক প্রকার কাগচ আছে, তাহা এ চুলির উপর বসাইয়া জল ছাকিতে হইবে। পরে লোহ নির্মিত হই তিনটি আংটা আবশ্যক করে। ইহাদিগের নিম্নভাগে তিনটি পায়া থাকিবে। পঞ্চম, মৃত্তিকা শুক্ত করিবার জন্য ছয়খানি চিনে সানকি আবশ্যক করে। এক-খানি সানকির উপর ভিজা মৃত্তিকা উক্ত আংটার উপর বসাইবে; এবং ইহার তলভাগে প্রদীপের উক্তাপ দিলে মৃত্তিকা শুক্ত হইয়া যাইবে। কিয়া এক লোহ নির্মিত বাটির ভিতর বালিতে পরিপূর্ণ করিয়া অগ্রের উত্তাপে উত্তাপিত করিবে। পরে ঐ মৃত্তিকা শুক্ত সানকি উহার উপর বসাইয়া রাখিলে মৃত্তিকা শুক্ত হইয়া যাইবে।

মৃত্তিকা জলে ফেলিয়া ও ছাকিয়া লইবার পর ইহার জন্য ২২টি কাচ নির্মিত অর্দ্ধ হস্ত পরিমাণ নল আবশ্যক করে। ইহাদিগকে এক খানি তক্তায় ছিদ্র করিয়া সাজাইয়া রাখিবে।

মৃত্তিকা গোলা জলে কোন অমু রস কিবা কোন খার দ্রব্য আছে কি না, নিরপণ করিতে হইলে দ্বই প্রকার কাগচ আবশ্যক করে। প্রথমতঃ, লিটমশ কাগচ, দ্বিতীয় টরমরিক। এই দ্বই কাগচ যে প্রকারে প্রস্তুত করিয়া বাজারে বিক্রেয় করে; তাহা এই স্থলে লিখিবার আবশ্যক করে না, একখানি কাগচে জবাফুল ঘসিলে ইহা নীলবর্ণ হইবে; এবং ইহাতে অমু রস লাগিলে লালবর্ণ হইবে এই কাগচকে লিটমশ কছে আর একখানি কাগচে হরিদ্রা লেপণ করিয়া রাখিলে কোন অমু নাশক দ্রব্য (যেমন চুন) ইহাতে লাগিলে লালবর্ণ হইবে; এই কাগচকে টরমরিক কহে।

মৃত্তিকা পোড়াইবার জন্য মৃতি আবশ্যক করে। প্রাটনম পাতু নির্মিত মৃতি অতি উৎকৃষ্ট; কিন্তু ইহা প্রস্তুত করিতে অধিক ব্যয় হইতে পারে; এই জন্য চিনে কাচের বাটিতে উক্ত কার্য্য নির্মাহ করিবে। মৃত্তিকাকে অন্য প্রকারে,পোড়াইতে হইলে, তামু নির্মিত এক বক্র চুলি আবশ্যক করে। স্থবর্ণ কার যে প্রকারে সোণা রূপা এক খানি কয়লার উপর রাখিয়া পোড়াইয়া থাকে; সেই প্রকারের এই চুলির দ্বারা মৃত্তিকাকে পোড়াইতে হইবে। প্রাটনম পাতুর তার যৎকিঞ্চিৎ আবশ্যক করে। মৃত্তিকা গোলা জল ছাকা হইলে, ইহার এক কোঁটা ঐ তারে লাগাইয়া প্রদিপের শিখায় পোড়াইলে যদি কিছু অবশিক্ত থাকে, তবে ঐ জল উত্তম রূপে ছাঁকা হয় নাই বোধু হইবে।

এই জগতের উপাদান সকল হুই শ্রেণিতে বিভক্ত হইরাছে, প্রথমতঃ, অমু বস্তু; (ইংরাজি ভাষায় ইহাকে এসিড
কহে) দ্বিতীয় অমুনাশক দ্রব্য (ইহাকে ইংরাজি ভাষায় এলকেলাই কহে) এই বায়ুর উপাদান অকশিজন বায়ু যে বস্তুর
সহিত মিশ্রিত হইবে, তাহাতে এক প্রকার অমু উৎপত্তি
হইবে। যেমন গন্ধকের সহিত মিশ্রিত হইরা দ্রানক উৎপত্তি
হইরাছে, কিন্তু অমুনাশক দ্রব্য সংযোগে ইহার অমুতা আর
কিছুই থাকে না; এই হুই প্রকার পদার্থ মধ্যে এক বস্তু অপর
আর এক বস্তুর সহিত এমত রসায়নিক সহদ্ধে আবদ্ধ আছে

যে উভয়ের সংস্পর্শ হইলে মিলিত হইয়া আর এক পদার্থ
উৎপন্ন হয়। যেমন মৃতিকার ভিতর দাবক আছে,
ইহাকে জলে গুলিয়া যদি ইহাতে বারিটা মিলিত কর্য
যায়; তবে দাবক বারিটার সহিত মিলিত হইয়া আর
এক পদার্থ হইবে। ইহাকে ছাঁকিলে মৃতিকার জল হইতে
বাহির হইয়া আদিবে। এই রূপ যে বস্তুর সহিত যাহার
সম্ম আছে, তাহার সংযোগে ইহার অপর বস্তুর যোগ
হইতে বিচ্ছেদ হইয়া অন্য প্রকারে পরিণত হইয়া বাহির
হইবে। অতএব বস্তু সকলের এই সম্ম কোন্ বস্তুর মহিত
আছে ও তাহারা কি প্রকার বস্তু এই সকল বিহয় আমরা
বিশেষ রূপে প্রকাশ করিব।

# मालकि डितिक् श्रीम ड्रावक।

ইহা আংগ্রাণিরি প্রদেশে লানেক প্রকার জালের ভিতর থাকে ইহার সভিত জন্য বন্ধ সংযোগ হইলে তাহাকে সলফেট্কাহ যেমন সলফেট্ অফ্লাইন অর্থাৎ চুনের সহিত সলফিউরিক এসিড মিশ্রিত হইরা উক্ত বস্ত হইরাছে। সলফেট্ অব পোটাশ অর্থাৎ ক্রাবক এবং পোটাশ; সলফেট অব সোডা জার্থাৎ মোডা এবং ক্রাবক এই তিন প্রকারে সলফেট সকল রক্ষনিগের ভিতর থাকে। সলফেট ত্রাব্য অবস্থার জলের ভিতর থাকিলে তাহাকে জানিবার জন্য ক্রোরাইড অফ বেরিরম জলে ওলিরা তাহাতে দিলে পালি রূপে পরিণত হইরা তলভাগে পতিত হইবে। এই পালি ভারি শেত বর্ণ ইহাকে সলফেট জফ ব্যারিটা কহে। যদি

ইহাকে করলার সহিত পোড়ান যায় তবে ইহার যোগ ভঙ্গ হইয়া সলফিউরেট অবস্থা প্রাপ্ত হয়, তাহাতে যদি হাইডুকোরিক এসিড দেওয়াযায়, তবে হাইডুাসলফিউরিক এসিড উৎপন্ন হইবে। এই বস্তর ডিম্ব পচা গদ্ধের দ্বারা জানা ঘায়। কোন কাগচ এশিটেট অফ লেডের জলে ভিজাইয়া উক্ত বস্তা তাহাতে লেপন করিলে কালি বর্ণ হইবে।

কোন যোগিক পদার্থে গন্ধক আছে কিনা নিরপণ করিতে হইলে ঐ বস্তু গুঁড়া করিয়া কান্টিক পোটাশ এবং জলের সহিত সিদ্ধ করিতে হইবে পরে ছাকিয়া ইহাতে একটি টাকা ফেলিয়া দিলে যদি ইহাতে গন্ধক থাকে তবে ঐ টাকা ক্ষমবর্ণ হইবে।

### गाइ हिक धिन छ।

নাইট্রেজন হুই ভাগ ও পঞ্চাগ অক্সিজন মিলিত হইয়া এই বস্তুর উৎপত্তি হয় ইহার অন্য বস্তুর সহিত যোগ হইলে তাহাকে নাইট্রেট কহে; যেমন পোটাশ ও নাইট্রিক এসিড মিলিত হইয়া নাইট্রেট অব পোটাশ বা সোরা হইয়াছে, মাগনেশিয়ার গোগে নাইট্রেট অব মাগনেশিয়ার হোগে নাইট্রেট অব লাইম ও নাইট্রেট অব সোডা হইয়াছে। এই চারি প্রকার অবস্থায় এই এসিড মৃত্তিকার ভিতর থাকে কিন্তু নাইট্রেট অব পোটাশ ও নাইট্রেট অব লাইম এই হুই অবস্থায় ইহা রক্ষের ভিতরে পাকে। ইহাতে ফেলিলে সকল বস্তু গলিয়া যায় কিন্তু

বিনকজাইড অব টিন এবং অকজাইড অব টিন ইহাতে দ্রব হয় না যদি তিন গুণ হাইডুক্লোরিক এসিড ও এক গুণ নাইট্রিক এসিড মিলিত করা যায় তবে তাহাতে সোণার পাত ফেলিবামাত্র গলিয়া যায়। জল মিল্রিত নাইট্রিক এসিড এক ফোটা ইম্পাতের উপর লাগাইলে সেই স্থান ক্ষম্বর্ণ হইবে, কিন্তু লোহার উপর পড়িলে এক রূপ পাটল বর্ণ হইবে।

যদি কোন জনীয় বস্তুতে নাইট্রিক এসিড থাকে তবে তাহাকে নিরপণ করিতে হইলে প্রথমতঃ ইহাকে শুষ্ক করিয়া ইহাতে সলক্ষিউরিক এসিড ও জন মিশ্রিত সলক্ষিউরেট অব আইরণ মিশ্রিত করিয়া দিলে নাইট্রিক এসিডের পরিমাণারুসারে ইহার বর্ণ অধিক কিন্ধা অপা রংড়াটিরা হইবে।

# श्रेषुक्षातिक अभिष्ठ।

ইহা আগ্রেয় গিরি প্রদেশে এমোনিয়ার সহিত মৃত্তিকার ভিতর থাকে; ইহা জন্ত দেহে পাকস্থলির ভিতর যে রস আছে তাহার এক প্রধান উপাদান। ইহার সংযোগে যে যেগিক পদার্থ হয় তাহাকে ক্লোরাইড কহে, যেমন রূপার সংযোগে ক্লোরাইড অব সিল্বর হইয়াছে। যদি ইহা কোন বস্তুতে থাকে তবে তাহাতে নাইট্টে অব সিলবর অর্থাৎ কাফকির জল দিলে এক রূপ পলি বহির্গত হইবে ইহাকে ক্লোরাইড অব সিলবর কহে। ইহা শ্বেত বর্ণ এবং বায়তে বাহির করিয়া রাখিলে কৃষ্ণবর্গ হয় এই দ্রা নাইট্রিক এসিডে জাব্য নহে কিন্তু এমোনিয়ার জলে দ্রব হইয়া যায়।

এই এসিডের প্রধান উপাদান ক্লোরিন যদি ইহা কোন বস্তুতে থাকে তবে তাহাকে বাহির করিতে হইলে কোমেট অব্পোটাশ ও বিশুদ্ধ সলকিউরিক এসিড এই জুয়ের দহিত নিখিত করিয়া উত্তাপিত করিলে এক প্রকার क डे। वर्ग गति में डेश्भन इया यिन धरे गति गांव करा যায় ত্রে রক্তবর্ণ এক রূপ তরল পদার্থ উংপন্ন হইবে। इश्टि अभितिशा मश्याभ कतिल श्विजावर्थ अभि इहेर्द, এবং পুন-5 ইছাতে কোন এসিড সংযোগ করিলে লালবর্গ প্রাপ্ত হই ব। যদি কোন বস্তুতে কাপা শিশা ও পার। থাকে তার ইছাকে জালে ওলিয়া হাইডুকোরিক এলিডের मिश्जिभिज कित्रिल क्षेप्री भाका छ भिभा भिल क्ष्रि পরিণত হইরা তলভাগে পতিত হইবে, রূপার সহিত मश्रागि (क्वांत्रेषे जन मिल्ड इक्ट्रा क्वांत्रा गर्ह दिन्ह आभागिता मश्यार्ग जारा इहेशा थार्क। শিশার সহিত সংযোগে ক্লোরাইড অব লেড হইবে ইহা धारमानियारा छोरा नाइ किन्छ छाल जिंछ अं। श्रीतिमार्ग দ্রাব্য হইয়া থাকে। পারার সহিত সংযেনে ক্লোরাইড जय भारतकति छे९शंत इत इंदा जला खारा नरह किन्छ এমে बिशा मः योगि क्रिय दर्ग था छ इश।

### এসিটিক এসিড।

জল কার্বন চারি ভাগ হাইডুজন তিন ভাগ অক্সিজন তিন ভাগ এই কয়েক বস্তুর সংযোগে এই এসিড উৎপন্ন হয়। ইহা একাকি কিন্তা পোটাশ লাইম এবং এমো-নিয়ার সংযোগে অনেক রক্ষের ফলের রসে থাকে কিন্তু মৃত্তিকার সহিত কখনই থাকে না। লেবুর রস তাড়ি ইহারা সকলি এসিটিক এসিড। ইহাতে অনেক এসিড, তামা, টিন শিশের সহিত মিশ্রিত হইয়া পাকে, এবং যাহার যে যোগ ভঙ্গকারি বস্তু তাহার সহিত সংযোগ করিলে ইহারা বাহির হইয়া আসিবে। যেমন সলফিউরিক এসিড থাকিলে ना। तिष्ठे। मश्राशार्श, मिछेति अधिक अभिष्ठ शांकिरल नारेरिष्ठे অব শিলভর সংযোগে বাহির হইবে।

#### টারটেরিক এসিড।

ইহা কেবল তেতুল আনারস ও আন্ধুর ইত্যাদি ফলের রদে থাকে; কিন্তু মৃত্তিকার ভিতর থাকে না। চুনের জলের সহিত এই বস্তু সংযোগ করিলে এক প্রকার শ্বেত বর্ণ পালি বহির্গত হয় তাহাকে টারটেট অব লাইম কছে; কিন্ধ সলফেট অব লাইমের জলে মিশ্রিত করিলে কখন পলি বহিৰ্গত হইবে না।

#### অক্জেলিক এসিড্।

ইহা তিনভাগ জল ও হুই ভাগ কার্বন ও তিন ভাগ অক্সিজন যোগে উৎপন্ন হইয়াছে কামরাঙ্গাও আমকল শাকে ঐ অম প্রচুর পরিমাণে থাকে কিন্তু মৃত্তিকার ভিতর থাকে।

ইহা থেত বর্ণ ও সতত দানাবিদ্ধিইরা থাকে।

ইহার সংযোগে এলুমিনা দ্রব হইয়া যায় এবং ঐ জল

শুক্ত করিলে হরিদ্রাবর্ণ স্বচ্ছ মিন্ট এবং কশা এক বস্তু

উৎপন্ন হইবে। ঐ বস্তুর সংযোগে লিট্ম্শ কাগজ লাল
বর্ণ হয়: অগ্নির উত্তাপে ইহা কুলিয়া উঠে এবং ইহার অম

নন্ট হইবা বায় এবং এলুমিনা বহির্গত হইয়া পড়ে ব্যারিটা
ও ব্লোনসিয়া বাহির করিতে হইলে ইহার দ্বারা হইতে পারে।

#### এমে। निशा।

এমোনিয়া এক প্রকার বায়ুবং পদার্থ, নাইট্রোজন ও হাইডুজন বোগে উংপর হইয়া থাকে। ইহা জল সংযোগে বাবহার বোগা হইয়া থাকে। আয়েয় গিরি প্রদেশে দলকেট্ অব্ এমোনিয়া ও মিউরিয়েট্ অব্ এমোনিয়া এই ছই অবস্থায় মৃত্তিকার ভিতর থাকে। উদ্ভিদ কিয়া কোন জন্ত পচিলে ইহার উৎপত্তি হইতে থাকে এবং জন্তুদিগের মৃত্র ও বিষ্ঠার ভিতর ইহা বহু পরিমাণে থাকে। ইহার বাঙ্গালা নাম নিশেদল। ইহার সংযোগে অক্জাইড্ অব্ এলুমিনা, অক্জাইড্ অব্ এলুমিনা, অক্জাইড্ অব্ কোমিয়ম্ এবং গেরক্জাইড্ অব্ আইয়ণ এই কয়েক বল্পর পলি বিছিত্ত হয় কিন্তু পোটাণ, চুন, সোডার পলি বহির্গত হয় না।

#### 

कार्गनिक अभिष्ठ अस्मानियात महिक मश्युक इहेग्रा के जना उर्शन हहेग्राष्ट्र हेहात मश्यास नगतिका, सोन- শিরা, চুন, এলুমিনা, জোমিরম, পরেকজাইড অব্ আই-রণের পলি বহির্গত হইয়া থাকে।

### मलकारेष वाया वायानियम।

সাভাবিক ইহা পচা জন্তর দেহ হইতে উৎপন্ন হইনা পাকে, প্রস্তুত করিতে হইলে হাইড্রো সলফিউরিক এমিড গালে এমোনিয়ার জলের ভিতর দিয়া চালনা করিলে উভয়ে মিশ্রিত হইরা এই দ্রব্যের উৎপত্তি হইবে, ইহার সংযোগে কোবালট, নিকল, ম্যাঙ্গেনিশ এবং দন্তার পলি বহির্গত হয়, ইহার বর্গ হরিদ্রা ও হরিত মিশ্রিত, হুর্গন্ধ এবং খাইলে ঝাল লাগে। ইহা বায়ুতে থাকিলে অক্সিজন আকর্ষণ করিয়া থাকে এবং ইহার তলভাগে গন্ধক জমা হয়।

#### ङ्गादां इं छ जव् अध्यानियम ।

হাইড্রারেক এসিড এবং এমোনিয়া সংযোগে উৎপন্ন হইরাছে, ইহা লবণ সদৃশ বস্তু, গোবরের ভিতর বহু পরি-মাণে থাকে, ঘুঁটে পোড়াইলে ইহার ধূমেতে উনুনের মৃত্তিকা লবণাক্ত হইরা যায়, ইহা শ্বেত বর্গ, উড়ে যায় এবং প্রদী-পের শিখায় পোড়াইলে দানাবন্ধি হয়, ইহার সংযোগে এলুমিনা, কোমিয়ম, লৌহ, দন্তা, ম্যাঙ্গেনিশ, নিকেল, কোবালট, ফশফেট অব্ এলুমিনা, ফশফেট অব্ আইরণ এই সকল বস্তুর পলি বহির্গত হয়। ক্ষার দ্রব্যের জলে এলু-মিনা থাকিলে ইহার সংযোগে এলুমিনার পলি ইহার এমোনিয়ার সহিত মিশ্রিত হইয়া বাহির হইয়া আদিবে, পরে ইহাকে জলে ধৌত করিয়া শুষ্ক করিলে বিশুদ্ধ এলুমিনা বাহির হইবে।

#### (भाषामा

সলফিউরিক্ এসিড, নাইট্রিক্ এসিড্ বা সিলিসিক্ এসিডের সহিত সংযুক্ত হইরা এই ক্ষার দ্রব্য মৃত্তিকার ভিতর বহু পরিমাণে থাকে। জন্তু দেহ অপেক্ষা রক্ষের ভস্মের ভিতর ইহা অধিক থাকে, ইহা শ্বেত বর্ণ। ইহা জলে ওলিলে উত্তাপ উৎপন্ন হয়। পোটাশ মিশ্রিত জল সাবানের ন্যায় বোধ হয়, ঐ জলে এলুমিলা দ্বে হইরা বায়।

## नाहरपुषे जाव (भाषामा।

ইহা মৃত্তিকায় উৎপন্ন হয়, ইহাকে বঙ্গভাষায় দোরা কহে।

#### क्तारमधे यव् পाछाभ।

কোমিক এদিত এবং পোটাশ এই ছই সংযোগে এই বস্তুর উৎপত্তি হয়। ইহার ভিতর কোমিয়ম নামক এক রঙ আছে ইহার দারা সংযোগিক বস্তুদিগকে বাদত করে এই বস্তু সংযোগে শিশা ও বিশমদের পলি বাহুর্গত হয়।

#### मलदक्षे अव् (भाषामा

দ্রাবক এবং পোটাশ এই গ্রহ বস্তু সংযুক্ত হইয়া ইছার উৎপত্তি হইয়াছে, ইহার সংযোগে ষ্ট্রোনসিয়ার পলি বহির্গত হইতে পারে আর কোন প্রকার জলের ভিতর যদি শিশার অংশ থাকে তবে ইহার সংযোগে বাহির হইতে পারিবে।

## क्ट्यामाइएयमाईफ जाव् পाछाभियम।

ইহার সংযোগে জলের ভিতর লোহের অংশ থাকিলে বাহির হুইতে পারিবে। এই পলি শ্বেত বর্ণ ও বাতাদে বাহির করিয়া রাখিলে নীল বর্ণ হুইয়া যায় কিন্তু যদি জলে তামা থাকে তবে ইহার সংযোগে লাল বর্ণ পলি বহির্গত হয়।

## माই য়েনাইড অব্পোটাশিরম।

ইহা নিকেল এবং কোবাল্টকে বিভিন্ন করিবার জন্য বাবস্থত হইরা থাকে। যে জলে এই ছুই দ্রব্য আছে তাহাতে হাইড্রোক্লোরিক এনিড কিঞ্চিৎ সংযোগ করিবে পরে এই দ্রব্য বহু পরিমাণে ঢালিরা নিবে, পরে ঐ জল সিদ্ধ করিরা হাঁকিবে ও তাহাতে কিঞ্চিৎ সলফিউরিক এনিড ঢালিরা নিবে। ক্ষণেক কাল পরে যদি ইবং হরিদা বর্ণ পলি বাহির হয় তবে ইহাতে নিকেল আছে নিশ্চয় হইবে; কিন্তু ঐ জলে কার্বনেট্ থাকিলে ইহা রাংডাটিয়া হ্রিদা বর্ণ পলি বহির্যত হইবে।

## कार्वरणि खव् (भाषाभा।

কার্যনিক এসিড ও পোটাশ সংযুক্ত হইয়া এই দ্রন্য

উৎপন্ন হয়, ইহার সংযোগে সলফেট অব্ম্যাগনেশিয়া হইতে শ্বেত বর্ণ এক প্রকার পলি বহির্গত হয়।

### कार्वरवि जव (भाषा।

কার্বনিক এসিড এবং সোডা এই ছই সংযুক্ত হইয়া এই দ্রব্য উৎপন্ন হয়, ইহার সংযোগে লেহি, ম্যান্থনিস্, নিকেল, কোবাল্ট এই কয়েক দ্রব্যের পলি বহির্গত হয়।

# नार्टिष्ठे जाव मिलजत।

নাইট্রিক এসিড এবং রূপণ সংযুক্ত হইরা এই দ্রব্য হয়, কোন বস্তুতে ক্লোরিন্ থাকিলে ইহার দ্বারা নিরূপণ হইতে পারে। যদি জলের ভিতর যৎসামান্য অংশ ক্লোরিন থাকে, তবে ইহার সংযোগে মেঘের ন্যায় পলি বাহির ছইবে।

## नारेरिषे छे चव् लिए।

নাইট্রিক্ এসিড্ এবং লেড্ এই ছই বস্তুতে ইহা হইয়া থাকে, যে জলে এই দ্রব্য থাকে তাহাতে ক্ষার পদার্থ সকল, কার্নটে সকল, সলফিউরিক এসিড কিছা সলফেট সকল ও কিরোসাইয়েনাইড পোটেশিয়ম সংযোগ করিলে শ্বেড বর্ণ পলি বহির্গত হয়; কোমেট অব পোটাশ এবং আইও-ডাইড অব পোটাশিয়ম সংযোগে হরিদ্রা বর্ণ পলি বহির্গত হয়। হাইড্রো সলফিউরিক এসিড কিয়া হাইড্রো সলফিউরেট সংযোগে কৃষ্ণবর্ণ পলি বাহির হয়।

## क्लातारेष व्यव (वित्रम्।

হণইজুক্লোরিক্ এসিড্ এবং বেরিয়ম্ এই হুই একত্র ছইয়া এই দ্রব্যের উৎপত্তি হইয়াছে, কোন বস্তুর ভিতর সলফিউ-রিক্ এসিড্ থাকিলে ইহার সংযোগে বাহির করা যাইতে পারে।

# পরফোরাইড অব্ প্রাটীনম্।

প্লাচীনন্ ধাতু ও হাইড্রাক্লোরিক এসিড একত্র হইরা এই দ্রোর উৎপতি হয়। কোন বস্তুতে পোটাশ থাকিলে ইহার সংযোগে বাহির হইতে পারে। পোটাশ কোন এসিড্ সংযুক্ত জলে থাকিলে ইহার দ্বারা হরিদ্রা বর্ণ পলি বহির্গত হয়।

## পরক্রোইড অব্ আইরণ।

লৌহ এবংহাইডুক্লোরিক এদিড একত্রিত হইরা এই

দ্রেরের উৎপত্তি হয়। ইহার সংযোগে ফশফেট অব্ লাইম

বিভিন্ন হইরা পড়ে। প্রথমতঃ ঐ ফশফেট্কে হাইডুক্লোরিক

এদিডের দারা দ্রব করিবে পরে তাহাতে এশিটেট্ অব্
পোটাশের জল সংযুক্ত করিবে পরে তাহাতে দুই চারি
ফোঁটা পরকোরাইড অব্ আইরণ দিলে ফশফেট লোহার

সহিত সংযুক্ত হইরা পলি রূপে পরিণত হইবে। কিন্তু চুন

ঐ জলের ভিতর থাকিবে। পরে ঐ জলে সলফাইড্ অব্

এমোনিরম সংযোগ করিলে ইহার ভিতর লোহের অংশ

ঘাহা থাকিবে তাহা তলভাগে পতিত হইবে। পরে ঐ জলে

অক,জেলিক এসিড দিলে যদি তাহার পালি উৎপন্ন হয় তবে চুন তাহার ভিতর আছে নিশ্চয় হইবে।

যদি কোন জলে ফশফরিক এসিড থাকে তবে তাহাতে যৎকিঞ্চিৎ হাইডুক্লোরিক এসিড সংযোগ করিবে পরে তাহাতে ছই চারি ফোটা পরক্লোরাইড অব্ আইরণ মিশ্রিত করিলে অবশেষে তাহাতে এশিটেট্ অব্ সোডা বহু পরিমাণে দিলে আটার ন্যায় শ্বেত বর্ণ পালি বহির্গত হুইবে।

#### পরক্লোরাইড অব্মার্কর।

হাইডুক্লোরিক এসিড এবং পারা একত্তিত হইয়া এই জব্যের উৎপত্তি হয়। যদি কোন জলে আইয়োডিড্ থাকে তবে ইহার সংযোগে লাল বর্গ এক রূপ পলি বহির্গত হয়।

#### (थारि) मनाकि ज्य जारेत्।

সলফিউরিক এসিড এবং লৌহ এই চুই সংযুক্ত হইয়া উক্ত বস্তুর উৎপত্তি হইয়াছে। কোন বস্তুতে যদি সোণা খাকে তবে তাহাকে জলে ওলিয়া এই বস্তু সংযুক্ত করিলে সোণার পলি বহির্ঘত হইবে।

## विभारपेषे चव (माडा।

এশিটিক্ এসিড্ এবং সোজা একতে মিজিত হইরা এই বস্তুর উৎপত্তি হইরাছে। যদি কোন কিরোসাইরেনাইড্ বস্তু হইতে লোহ বাহির করিতেহয়। প্রথমতঃ উহাতে কোন প্রকার এসিড্ এমৎ পরিমাণে মিজিত করিবে যে তাহাতে জায় ও জায় নাশক গুণ কিছুই থাকিবে না আর এশিটেট অব্ দোডা তাহাতে দিলে লোহ বহির্গত হইবে।

ফশফেট অব্লাইম্ ও ফশফেট অব্মাণানেশিয়া ছইতে অকজেলেট অব্লাইম্ বাহির করিতে হইলে ইহা-দিগকে হাইড্রোক্লোরিক্ এিসিডের জলে গুলিয়া উক্ত বস্তু সংযোগ করিলে চূর্ণের পলি বহির্গত হইবে। ইহাতে পর-ক্লোরাইড্ অব্আইরণ মিঞিত করিয়া ফশফরিক্ এসিড্ নিরূপণ করা হইতে পারে।

# প্রোটো নাইটে ট অব্মার্থার।

দশ অংশ পারা ও নয় অংশ নাইট্রিক এসিড্ সংযোগো এই বস্তুর উৎপত্তি হয়। ইহার দ্বারা এমোনিয়া ও ফশফেট্ অব্লাইম্নিরূপণ করা যাইতে পারে।

### मलदक्षे यव लाइम् वा शिशमम।

সলফিউরিক এসিড্ ও লাইম্ এই ছুই মিশ্রিত হইয়া ইহার উৎপত্তি হইয়াছে। ইহাকে এসিটিক এসিডের জলে মিশ্রিত করিয়া মৃত্তিকা হইতে ব্যারিটার পালি বাহির করা যাইতে পারে। যদি এই পালি তৎক্ষণাৎ বাহির হয় তবে সলফেট্ অব্ব্যারিটা আছে নিরূপিত হইবে, কিন্তু ইহাই নিরূপিত হইতে বিলম্ব হইলে তাহাতে টোনশিয়া আছে কিন্তু ব্যারিটা নাই। অকজেলিক এসিড্ নিরূপণ করিতে হইলে ইহার দারা এক রূপ পালি বহির্গত হয় তাহাকে অকজেলেট অব্লাইম্ কহে।

# 

নাইটিক এদিড এবং এমোনিয়া সংযুক্ত হইয়া এই বস্তুর উৎপত্তি হয়। কার্নেট অব্ এমোনিয়া সংযোগে এণ্টিমণি ও টিনের পলি বহির্গত হইলে এই বস্তু সংযোগে উহাদিগকে বাহির করা যাইতে পারে।

### ক্লোরাইড অব্ কেলসিয়ম।

চুন এবং হাইড্রোক্লোরিক এ সিড একত্র হইয়া এই দ্রবোর উৎপত্তি হইয়াছে। ইহার সংযোগে বোরেসিক, ফশফরিক, অকজেলিক ও হাইড্রোফ্লোরিক এসিডের পলি বহির্গত হয়, ইহার দ্বাবা এলকেলাইন কার্বনেট দিগকে নিরূপণ করা যাইতে পারে।

#### অক্রিজন।

ইহা বায়ুবং পদার্থ, জন্য বস্তুর সহিত সংযোগ হইলে অমের উৎপত্তি হয়। ইহা বায়ুর এক প্রধান উপাদান নাইটোজেন এবং কার্কাণিক এদিডের সহিত সংযুক্ত হইয়া বায়ুর উৎপত্তি হইয়াছে ইহার সংযোগে অগি প্রজ্বলিত হয়।

## रारे (जारकन।

ইহা অতিশার লঘু বায়ুবং পদার্থ অগ্নি সংস্পর্শ হইলে জ্বলিয়া উঠে এবং অক্সিজনের সহিত মিলিত হইয়া জল উৎপন্ন করে।

# नार्द्रोडकन।

ইহা বায়ুবং পণার্থ এমোনিয়ার ভিতর বল পরিমাণে থাকে এবং অক্সিজনের সহিত মিলিত হইয়া বায়ুর উৎপত্তি হইয়াছে।

#### ক্লোরিণ।

ইহা স্বং হরিদ্রা ও সরুজ বর্ণ কষা ও হুর্গন্ধ যুক্ত বায়ুবৎ পদার্থ, হাইড্রোজেনের সহিত মিলিত হইয়া হাইড্রোক্লোরিক এসিড উৎপন্ন হয়। ইহার সংযোগে নানাবিধ রং নফ্ট হইয়া যায় এবং এই বস্তু অক্সিজনের সহিত মিশ্রিত হইয়া ক্লোরিক এসিসড উৎপন্ন করে। যদি এই এসিড অন্য কোন বস্তুতে থাকে তবে তাহা হইতে ইহাকে বাহির করিতে হইলে জাবক সংযোগ করিবে পরে ক্লোরিক এসিড গ্রাশ হরিদা ও সরুজ বর্ণ হইয়া বাহির হইবে।

### द्यामिन उ शहे जुद्यानिक अभिछ।

ইহা সমুদ্র জলে বহু পরিমাণে থাকে, এ জল সিদ্ধ করিলে দানাবন্ধি হইয়া লবণ বহির্গত হয় এবং অবশিষ্ট অংশে ক্লোরিন সংযোগ করিলে ব্রোমিন বাহির হইয়া পড়ে।

#### वारे उं जिन।

ইহা দানাবদ্ধি কোমল বস্তু শীদ্র ভাঙ্গিয়া যায় ইহার পাংশুও ক্লফ বর্ণ কোন বস্তুর ন্যায় চক চক করে ইহার স্বাদ ঝাল অতি হুর্গন্ধ, সমুদ্র জন্ততে ইহা বহু পরিমাণে থাকে যে জলে এই পদার্থ থাকে তাহাতে নাইট্রিক এসিড ও ফার্চ সংযোগ করিলে নাল বর্ণ হয়।

# জোরিন ও হাইড ফোরিন এসিড।

কুর্নির সহিতহাইড্রাজেন মিশ্রিত হইয়াহাইডুফ্রেরিন এসিডের উৎপত্তি হয়। যদি অন্য কোন বস্তুর সহিত মিশ্রিত থাকে তবে ইহাকে সল্ফেট অব্ পোটাসের সহিত মিশ্রিত করিয়া এক কাচের চুলির ভিতর পূরিবে পরে তাহাতে উত্তাপ সংলগ্ন করিলে ইহা বাহির হইয়া আসিবে এই বস্তু কোন প্রকার কাঁচে লাগিলে অঙ্কিত হইবে।

#### मिलिक्न।

এই বস্তুর সহিত অক্সিজন মিশ্রিত হইয়া সিলিকা বা সিলিশিক এসিড উৎপন্ন হয়। ইহা বালির সার অংশ কেবল হাইড্রোফ্রোরিক এসিডে দ্রব হয় কিন্তু যদি ইহা কোন ক্ষার পদার্থের সহিত মিশ্রিত থাকে তবে জলে দ্রব হইতে পারে।

#### কাৰ্ন।

ইহার সহিত অক্সিজেন মিশ্রিত হইয়া কার্বণিক এসিড উৎপন্ন হয়, ইহা কয়লার সার অংশ যদি কোন বস্তুতে কার্বণিক এসিড থাকে তবে তাহা নিরূপণ করিতে হইলে এক চুলির ভিতর রাখিয়া তাহাতে হাইড্রেলারিক এসিড মিশ্রিত করিলে গ্যাশ উদ্ভব হইবে এ সময় এ চুলির মুখ অঙ্গুলির দ্বারা বদ্ধ রাখিবে পরে অন্য আর এক চুজি
চুনের জলে অর্দ্ধ পূর্ণ করিয়া তাহার ভিতর এ গ্যাশ
ছাড়িয়া দিলে ইহা চুনের জলের সহিত মিত্রিত হইয়া
এক রূপ শ্বেত বর্ণ পলি বহির্গত হইবে ইহাকে কার্বনেট অব্
লাইম কহে।

#### ফশফরস্ ৷

এই বস্তু বাহার ভিতর প্রচুর পরিমাণে থাকে তাহাই জ্যোতির্মন্ন হয় যেমন জ্যোৎমা পোকা। ইহা জন্তু দেহে অধিক পরিমাণে থাকে কিন্তু উদ্ভিদ ও মৃত্তিকা মধ্যে অতি অপপ পরিমাণে আছে, ইহা খেত বর্ণ ও বানুতে বাহির করিয়া রাখিলে প্রজ্বলিত হইয়া উঠে কিন্তু জলে ডুবাইনা রাখিলে সমভাবে থাকে। এই বস্তু যদি এক কাচ পাত্রে পোড়ান যার তবে ইহা হইতে যে ধূম উদ্ভব হয় তাহা ঘনীভূত করিলে ক্ষণফরিক এদিডের উৎপত্তি হয়। যদি এই এদিড কোন ক্ষার পদার্থের সহিত (যেমন দোডা) মিপ্রিত থাকে তবে তাহা নিরপণ করিতে হইলে ইহাকে জলে গুলিন্না তাহাতে চূর্ণ, সীসা কিম্বা বাারিটা সংযুক্ত করিলে খেত বর্ণ পলি বহির্গত হইবে, নাইট্রেট অব্ দিলভর যোগে হরিদ্রা বর্ণ পলি হইবে ক্লোরাইড অব ম্যাগনেশিয়া যোগে খেত বর্ণ দানাবন্ধি পলি বাহির হইবে ইহার মিপ্রিভ অবস্থাকে ফ্শক্ষেট কহে।

#### वादिण।

ইহা থেত বর্ণ লবন সদৃশ বস্তু পোটাশ সংযোগে ইহার থেত বর্ণ পলি বহির্গত হয়। দ্রাবক, কার্নটে এলকে-লাইশ এবং ফশফেট অব্ সোডা সংযোগে উক্ত রূপ পলি বাহির হইরা থাকে কিন্তু ক্রোমেট অব্ পোটাশ সংযোগে হরিদ্রা বর্ণ পলি বাহির হয়।

## लारेम अर्थाए हुन ।

পোটাশ, দ্রাবক, কার্বনেট এলকেলাইশ সংযোগে ইহা হইতে শ্বেত বর্গ পলি বাহির হয়।

# खुनिशा।

উক্ত কয়েক বস্তু সংযোগে ইহার শ্বেত বর্ণ পলি বাহির হয়।

#### ম্যাগনেশিয়া।

ইহা চুনের সদৃশ শ্বেত বর্ণ বস্তু কিন্তু চুনের ন্যায় গুণ ইহার কিছুই নাই।

#### এলুমিনা।

আটাল মৃত্তিকার সার ভাগকে এলুমিনা কহে, বিশুদ্ধ অবস্থায় ইহা শ্বেত বর্ণ কিন্তু যথন ইহাকে শুদ্ধ করা যায় তখন ইহা হরিদ্রা বর্ণ থাকে। ইহার মিশ্রিত অবস্থা হইতে বাহির করিতে হইলে কার্টিক পোটাশ ও ফশফেট অব্ সোডা সংযোগে ইহার শ্বেত বর্ণ পলিবাহির হয়।

#### गागिरशिन्।

প্রোটকজাইড অব্ ম্যানগেনিশ ধূসর সরুজ বর্ণ কিন্তু জল মিশ্রিতাবস্থায় ইহা শ্বেত হইয়া থাকে। ইহাকে লবণ সদৃশ করিলে মলিন গোলাপি বর্ণ হয় ইহার জল দ্রাব্য অবস্থায় কার্টিক পোটাশ বা এমোনিয়া সংযোগ করিলে শ্বেত বর্ণ পলি বহির্গত হইবে। যদি কোন বস্তুর ভিতর ম্যানগেনিশ অতি অপ্প পরিমাণে থাকে তবে ইহাতে প্রাটিন্ম ডাকে লাগাইয়া কার্বনেট অব্ সোডা এবং যৎ-কিঞ্চিৎ নাইট্রেট অব্ পোটাসের সহিত পোড়াইলে নিরূপণ করা যাইতে পারে।

দন্তা, লোহা, সীসা, স্বর্ণ, রোপ্য, রাঙ, তামা, পারা ইহাদিগের বিষয় বিশেষ রূপ লিখিবার আবশ্যক করে না কারণ ইহাদিগের বিষয় সকলে অবগত আছেন।

#### धार्मिनिक वा (मँदका।

যদি কোন বস্তুর যোগে আর্শিনিক থাকে তবে তাহা জলে গুলিয়া তাহাতে চুনের জল দিলে খেত বর্ণ পলি বাহির হইবে। ইহা চুন এবং আর্শিনিক মাত্র।

#### मुखिकात (याश विष्क्रम कतिवात श्रकत्।।

উদ্তিদ দিগের ভক্ষ্য দ্রব্য যে পরিমাণে ইহারা গ্রহণ করিয়া থাকে এবং মৃত্তিকায় যে যে অবস্থার এ সকল বস্তু পাওয়া যাইতে পারে ইত্যাদি সমস্ত বিষয় নিরূপণ করিয়া এক্ষণে কোন্ উদ্ভিদ কোন্ উপাদান বিশেষ রূপে ভোগ

করিয়া থাকে ও কোন মৃত্তিকায় কোন উদ্ভিদের ভক্ষা দ্রব্য প্রচর পরিমাণে আছে তাহা নিরপণ করিতে হইলে উদ্ভিদ দিগের ভন্ম এবং মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ করিতে হইবে এই ছয়ের যোগ যে প্রকারে বিচ্ছিন্ন করিতে হইবেক তদ্বিয় লিখিতে প্রবৃত্ত হইলাম। ভাষ্মের যোগ বিচ্ছেদ করিলে যে উপাদানের ভাগ এ ভক্ষের ভিতর অধিক থাকিবে তাহাই এ উদ্ভিদের প্রধান ভক্ষা দ্রারা বলিয়া পরিগণিত হইবে। যাস জাতীয় উন্তিদ দিগের ভিতরে मिलिकां र जाश अधिक পातिमारिं। थारिक खुडदां शिलिकां रे ঘানের প্রধান ভক্ষা উবা। নারিকেল রক্ষের ভন্ম জলে शुनिशा ९ পরে ছাকিয়া ছই চারি ঘণী রাখিলে ভশের ज्यानिक योश र्ज जल थोकित राहे ममून उन जारा পতিত হইবে। পরে এ জল অগ্নিতে শুষ্ক করিলে লবণ বহিৰ্গত হইবে অতএৰ ভশান্থিত লবণ দেখিয়া অনুমান रहेट एक या नवर्ग अरे इस्कित विस्थित कका प्रवा अवर नवर्ग य ऋल ना थारक उथांत्र এই त्रक कथनई छे९ शन इहरड পারে না। সরিষার ভিতর গন্ধকের ভাগ অধিক পরিমাণে আছে এই জন্য যে স্থলে গন্ধক কিছুমাত্র নাই তথায় সরিষা কখনই উৎপন্ন হইতে পারে না।

মৃত্তিকাও ভন্মের যোগ বিচ্ছেদ করা প্রায় এক প্রকার।
অতএব মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ করিতে পারিলে ভন্মের
যোগ বিচ্ছেদ করা কখনই কঠিন হইতে পারে না এই
জ্ঞান্য তদ্বিষয় না লিখিয়া কেবল মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ
করিবার প্রকরণ লিখিতে প্রব্ত হইলাম। কোন ক্ষেত্রের

মৃত্তিকা পরীক্ষা করিতে প্ররুত্ত হইবার পূর্বে প্রথমে ঐ মৃত্তিকার স্বাভাবিক গুণ সকল পরীক্ষা করিয়া দেখিতে इहेर्त। आभामिराव এই দেশে কোন স্থানের মৃতিকার চিক্কণ ও বালির অংশ সম পরিমাণে থাকে কোথায় বালির অংশ অধিক কোথায় চিক্কণের অংশ অধিক থাকে, কোন স্থানের মৃত্তিকা রুষ্ণ বর্ণ কোন স্থানের রক্ত বর্ণ কোন স্থানের মৃত্তিকায় রদের ভাগ অধিক পরিমাণে থাকে কোথায় অতি অপ্প, এই রূপ নানা স্থানের মৃত্তিকা নানা গুণ বিশিষ্ট হইয়া এই প্রদেশে রহিয়াছে। আমাদিগের কলিকাতা অঞ্চলে গন্ধার তীর সন্নিহিত প্রদেশে যে মৃত্তিকা দেখিতে পাওয়া যায় তাহা ঈষৎ শ্বেত বৰ্ণ ইহাতে শ্বেত বর্ণ বালির ভাগ অধিক আছে এবং চিক্কণের অংশ অতি অপপ পরিমাণে আছে কিন্তু গঙ্গার তীর হইতে যত পশ্চি-মাভিমুখে গমন করা যায় ততই শেত বর্ণ দিকতাময় মৃত্তিকা আর দেখিতে পাওয়াযায় না। এ অঞ্লে ঈষৎ হরিদ্রা বর্ণ বালুকাময় মৃতিকা দেখিতে পাওয়া যায় যেমন মগরার वालि এই मृखिकांत तम वर्ष्य लाशित्ल इतिया वर्ग मुखे इय এই রং ঈষৎ অক্সিজেন মিশ্রিত লৌহ হইতে উৎপন্ন হইয়া थारक, পরে ক্রমশঃ পশ্চিমাভিমুখে যাইলে দামোদর ও দারকেশ্বরের তীরে এ রূপ মৃত্তিকা সকল দেখিতে পাওয়া যায়। দারকেশ্বর হইতে আরও পশ্চিমাভিমুখে গমন করিলে কঠিন চিক্কণ মৃত্তিকার অংশ দেখিতে পাওয়া যায় इशांड नार्तिकल उ कमली त्रक छे० भन्न इश्व भारत ना किन्छ जना त्रक यथा जाख कांश्राल हेजानि जा यरज इह

একটি উৎপন্ন হইয়া থাকে। শীতকালে এই মৃত্তিকা এমত কাটিয়া যায় যে তাহাতে এ রক্ষ দিগের শিকড় ছিড়িয়া ছিড়িয়া খণ্ড২ হইয়। পড়ে কিন্তু বর্ষার জলে এ মৃতিকা কাদার ন্যায় হইয়া যায় এই জন্য বর্হার ফদল ধান্য ইত্যাদি উত্তম রূপে জম্মে এবং রবি ফদল কিছুমাত্র হয় না এইরপে যত পশ্চিমাঞ্জল গমন করিবে ততই ঐ রূপ দেখিতে পাইবে কেবল পর্বত প্রদেশে সুর্কির বর্ণ মৃত্তিকা দেখিতে পাওরা যায়। যদি বর্দ্ধনান অঞ্জের উত্তর পশ্চি-মাভিমুখে গমন করা যায় তবে তথায় উক্ত রূপ হরিদ্রা বর্ণ মৃতিকা ও ঘুটিং অধিক পরিমাণে দেখিতে পাওয়া যায়। পर्वा अति अति दो जगहल, भेशों ७ जगोगा स्थान भेगन करितल क्रमण नेयर लाल वर्ग मृजिका, शूरिंश अ अखब मिथिए পাওয়া যায় কিন্তু মুঙ্গের হইতে ব্রোণদী পর্যান্ত প্রস্তর পাহাড়াদি কিছুই দেখিতে পাওয়া যায় না এই সুান গদার জলে বর্থাকালে সময়ে সময়ে প্লাবিত হওয়াতে এমত প্রাচুর রূপে পলি পড়িয়া থাকে যে তাহাতে বর্ষা ও রবি শতা উত্তম রূপে জিমিতে পারে। পাটনা হইতে গঙ্গা পার হইয়া যদি ত্রিহুত জেলায় গমন করা যায় তবে ৰজ দেশের সদৃশ মৃত্তিকা দেখিতে পাওয়াযায় িত্ত মোজাফর-পুর অঞ্চলের মৃত্তিকায় খড়ির ভাগ অধিক দেখিতে পাওয়া যার এবং ঐ অঞ্চলে সোরা উৎপন্ন হইরা থাকে। এই ভূমিতে রবি এবং বর্ষার ফদল স্থচারুরপে জম্মে, জঝলপুর অঞ্চলে কোন কোন পর্ব্যতের উপর শ্বেত, পীত, ক্লফ্ত ও লোহিত বর্ণ মৃত্তিকা দেখিতে পাওয়াযায়। খেত বর্ণ

যৃত্তিকা বিশুদ্ধ খড়ি জ্ঞান হয় এবং লোহিত মৃত্তিকা বাহাকে বন্ধভাষায় গেরিমাটি কহে, পীত ও রক্ষবর্ণ মৃত্তিকা বোধ হয় লোহ হইতে উৎপন্ন হইয়াছে। পর্বতের নিকট কোন স্থানে সাবানের সদৃশ এক প্রকার খেত বর্ণ মৃত্তিকা দেখিতে পাওয়া যায় ইহা রুষিকার্য্যের উপযোগী নহে কিন্তু ইহাতে বন্ধ্র পরিষ্কার করা যাইতে পারে, সাজীন্মাটী পর্বত প্রদেশে উৎপন্ন হইয়া থাকে; ইহাও রুষিকার্যের উপযোগী নহে ইহাতে কেবল কাপড় ধৌত করা যাইতে পারে। এই ভারতবর্ষের হিমালয় হইতে কুমারীকা অন্তরীপ পর্যান্ত যেন্থানে গমন করিবে তথায় উক্ত কয়েক প্রকার মৃত্তিকার মধ্যে কোন না কোন রূপ মৃত্তিকা দেখিতে পাওয়া যাইবে।

ভারতবর্ধের যে যে স্থানে যে যে রূপ মৃত্তিকা দেখিতে
পাওয়া যায় তাহা লিখিয়া একণে যে প্রকারে মৃত্তিকা
পরীক্ষা করিতে হইবে তরিয়য় লিখিতে আরম্ভ করিলাম।
কোন ক্ষেত্রের মৃত্তিকা পরীক্ষা করিতে হইলে প্রথমে তাহার
কাভাবিক গুণ নিরূপণ করিবে অর্থাং ঐ মৃত্তিকায় সিকতা
কিন্তা চিক্রণের অংশ অবিক আছে; অথবা উহা শ্বেত,
পীত, রুফ্চ, লোহিত ইত্যাদি কোন বর্গ বিশিক্ত এবং রুসের
ভাগা কি পরিমাণে বা আছে ইত্যাদি সমন্ত বিষয় নিরূপণ
করিতে হইবে এবং উক্ত গুণামুসারে যে মৃত্তিকায় যেরূপ
উদ্ভিদ রোপণ করিতে হইবে তাহা আমরা পূর্বে লিখিয়াছি
এক্ষণে যদি মৃত্তিকার স্থাভাবিক গুণ সকল কেবল দর্শনে
নিরূপণ করা না যায় তবে সামান্ত এই রূপ পরীক্ষা

করিবে। প্রথমে এ স্থান হইতে এক সের ওজনে মৃত্তিকা লইয়া ইহাকে শুষ্ক করিবে পরে ইহাকে ওজন করিলে যে অংশ কমিয়া যাইবে, তাহাই রসের ভাগা হইবে। তৎপরে ইহাকে এক লোহ পাত্রে রাখিয়া অগ্নিতে পোড়াইয়া লাল করিবে পরে ওজন করিলে ঘে অংশ কমিয়া যাইবে তাহাই সারের ভাগ হইবে। যদি এ মৃত্তিকায় জন্তু পচা সার থাকে তবে উহাকে পোড়াইবার সময়ে হুর্গন্ধ বাহির इहेर्न, किन्नु উদ্ভिদ সার থাকিলে সোদা গন্ধ বাহির ছইবে। পরে অবশিষ্ট যে মৃত্তিকা থাকিবে তাহা জলেতে গুলিলে ইহার চিক্কণের অংশ জলের সহিত মিশ্রিত হইয়া যাইবে এবং বালির ভাগ তলভাগে পতিত হইলে এ জল আতেং অন্য পাত্রে ঢালিবে পরে তলভাগের বালুকা সকল উত্তম বালুকা শুষ্ক করিয়া গুদ্ধন করিলে বালুকার ভাগা নিরূপিত হইবে এবং অবশিষ্ট যাহা থাকিবে তাহাই চিক্রণের তাংশ इहर्व ।

এ মৃত্তিকায় চুনের ভাগ কি পরিমাণে আছে তাহা
জানিতে হইলে এই মৃত্তিকা অগ্নিতে পোড়ান হইলে ইহাকে
এক কাচের প্রামে রাখিয়া ইহার ছই গুণ হাই বুক্লোরিক
এদিড ইহাতে ঢালিয়া দিবে এবং এদিড যত ২২বে তাহার
চারি গুণ জল ইহাতে ঢালিয়া দিবে পরে এক ঘণ্টা প্র
বস্তু কাঠি দিয়া ঘাঁটিয়া এক ছাঁকনি কাগজে এই বস্তু
ছাঁকিবার জন্য কাচ নির্মিত এক ফনেল বা তৈলের চোলার
উপর ছাঁকনি কাগজ কিয়া তদভাবে বলাটিং কাগজ স্বচাক-

क्रां वमारेश मिर्व श्रेष्ठ के क्रिका এक विश्व छेश्र চোষ্পার ভিতর জল আন্তে আন্তে দিবে এবং পরিষ্কার জল ছাকনি কাগজকে ভেদ করিয়া পড়িতে থাকিবে এইরপে मगूनग्न जन পতिত इहेल कानांत य अश्म जल जांचा इग्न নাই তাহা ছাকনি কাগজের উপর থাকিবে এবং দ্রাব্য অংশ বোতলের ভিতরে পতিত হইবে পরে ছাঁকনি কাগজের উপর যে মৃত্তিকা আছে তাহা শুষ্ক করিয়া কাগজ সহিত अजन कदित পরে কাগজ ও জল বাদ দিলে যাহা থাকিবে তাহাই মৃত্তিকার ওজন হইবে পরে দ্রাব্য অংশ জল এবং এসিডের সহিত ওজন করিয়া এসিড এবং জল যে পরিমাণে আছে তাহা বাদ দিলে দ্রাব্য অংশের ওজন পাওয়া যাইবে এবং ক্রাব্য ও ক্রাব্যবিহীন অংশের ওজন একত্র করিলে যাহা কমিয়া যাইবে তাহাই চুনের অংশ হইবে। অবশেষে কাগজিস্ত জাব্যবিহীন অংশ, যাহা শুষ্ক করিয়াও জলযুক্ত করা হইয়াছে, তাহা এক প্লাদে রাখিয়া জলে গুলিতে इहेर्य। श्रेत कर्णक काल खित इहेरल हेहांत्र कियमः भ তলভাগে পতিত হইবে, এবং অবশিষ্ট জল দ্রাবা হইয়া शाकिता এই ममाय छेक जन आखि आखि छोनिया এक ছাকনি কাগজে ছাকিলে জল বাহির হইয়া যাইবে কিন্তু কাদার তাংশ কাগজে থাকিবে। পরে গ্লাসের ভিতর যে অবশিষ্টাংশ থাকিবে তাহা পুনশ্চ জল ঢালিয়া গুলিতে হইবে এবং উক্ত প্রকারে স্থিত হইলে ছাঁকিয়া লইবে এই রূপ তিন চারি বার করিলে, গ্রাদের ভিতর বিশুদ্ধ বালি বাহির

হইয়া পড়িবে। এই বালি শুষ্ক করিয়া গুজন করিলে বালি যে পরিমাণে ছিল, তাহা নিরপণ হইবে এবং ছাঁকনি কাগজে যে সকল কাদার অংশ থাকিবে, তাহা শুষ্ক করিয়া গুজন করিলে কাদার অংশ নিরপণ হইবে।

যদি ক্লষক মৃত্তিকা হইতে চুন বিশুদ্ধ অবস্থায় বাহির করিতে ইচ্ছা করেন তবে নিম্নলিখিত উপায় অবলম্বন করিতে হইবে। চারি শত কিন্তা পাঁচ শত এেণ মৃত্তিকা লইয়া অগ্নির উত্তাপে শুষ্ক করিবে; পরে এক রহৎ কাচপাত্তে রাখিয়া জল দিয়া গুলিতে হইবে। পরে ইহাকে উত্তমরূপে ঘাটিয়া জলের সহিত মিশ্রিত করিলে, ইহাতে পুনশ্চ অধিক পরিমাণে জল দিতে হইবে এই কাদা মিশ্রিত জল কিঞ্ছিৎ কালের জন্য স্থিত হইতে দিলে, মৃত্তিকার জাব্য অংশ জলের সহিত মিশ্রিত হইবে, এবং দ্রাব্য বিহীন অংশ मगुन्त उल्लाटिश পতिउ इहेर्य। अक्राल उपितिलार्शत এ জল সাইফন দারা পাত্র হইতে নির্গত করিলে কিয়া সাইফন অভাবে আন্তে আতে ঢালিয়া অন্য পাত্ৰে ঘোলা অংশ ফেলিয়া পুনশ্চ উক্ত পাত্ৰে জল ঢালিয়া ঐ মৃত্তিকা উত্তমরূপে গুলিতে হইবে এবং কিয়ৎকাল স্থির হইলে श्रनत्रोत शृर्खांक थकादा जाना जान निक नेन कतिता। ছই চারি বার এই রূপ করিয়া যখন জলের সহিত মিশ্রিত হইয়া কোন বস্তু এক মূত্র্ত থাকিতে পারিবে না জল णिनियोगोज मगूमग्न **उम**जार्ग পতिত इहेरत।

এই জল মিশ্রিত মৃত্তিকার দ্রাব্য অংশ এই সময়ে এক বার ওজন করিয়া, ছাকনি কাগজে ছাকা যাইতে পারে

কিন্তু তাহা হইলে স্থবিধামত হয় না এই জন্য ইহাকে এক রহৎ বোতলে ঢালিয়া রাখিবে। পরে যখন আবশাক रहेरव उथन हेरांक होकिया ७ एक कित्रा रेरांत्र मकन निज़िंश कितिरा। यिन ओ मृक्तिशं को नांत जाश्न जिशिक থাকে তবে ইহা বোতলের তলভাগে স্থিত হইতে কিছু দিবস বিলম্ব হইবে। পরে ইহা তলভাগে স্থিত হইলে ইহার উপরিভাগের পরিষ্কার জল সাইফন দ্বারা কিম্বা তদভাবে আন্তেং ঢালিয়া ফেলিবে, কিন্তু মৃত্তিকার যে অংশ দ্রাব্য হয় নাই তাহা ঐ বোতলের তলভাগে কিঞ্চিৎ জলের সহিত মিভিত হইয়া থাকিবে একণে ইহাকে উত্তম क्रिं यो छिया এक अजन कर्ता कार्रा का का किरल देश इहेर अ পরিষ্কার জল বাহির হইয়া যাইবে। যদি এ জল পরিষ্কার রূপে বাহির নাহয় ভবে ইহাকে পুনশ্চ ঐ বোডলে ঢালিয়া जारा विशेष जश्म मकल উত्তम ऋ्प (धोठ क्रिय़) र्ख ছাকিৰি কাগজে ঢালিয়া দিবে। একণে ছাঁকনি কাগজের অতি স্কা ছিজ সকল পূর্বস্থিত কাদার প্রমাণ দারা পরিপুরিত আছে এই জনা ইহার ভিতর দিয়া পরিষ্কার জল অবশা বাহির হইবে। যখন সমুদয় জল বাহির হইয়া যাইবে তখন এ ছাঁকনি কাগজ ও কাদা শুষ্ক করিতে হইবে। যে প্রকারে ইহাকে শুষ্ক করিতে হইবে তাহার বিবরণ এই— এক ক্ষুদ্র লৌহ কিশ্বা মৃত্তিকা পাত্র বালিতে পরিপুরিত ইহার নিম্নভাগে এক প্রদীপের শিখার উত্তাপ সংলগ্ন করিলে উপরিভাগের বালি উত্তাপিত হইয়া উঠিবে। ছাকনি কাগজ ও কাদা শুষ্ক করিতে হইলে, এ উত্তাপিত বালির উপর রাখিলে শীত্র শুক্ত হইরা যাইবে, পরে ছাঁকনি কাগজের ওজন বাদ দিলে দ্রাব্য বিহীন অংশের ওজন নিরূপণ হইবে মনে কর এই ওজনের পরিমাণ যেন ঘ রহিল।

দ্রাব্য বিহীন অংশ হইতে যে পরিষ্কার জল বাহির হইয়াছে তাহার ভিতর কেবল দ্রাব্য ও লবনের অংশ রহিল ইহার নাম শ রাখা হইল।

যে পাত্রে প্রথমে মৃত্তিকা গোলা হইয়াছিল তাহা হইতে দ্রাব্য অংশ অন্য পাত্রে ঢালিয়া রাখিলে ঐ প্রথম পাত্রের তলভাগে কেবল বালি ও অন্যান্য দ্রাব্য বিহীন স্থুল অংশ থাকিবে। এক্ষণে ঐ পাত্র ধ্যেত করিয়া সমুদয় জল ও দ্রাব্য বিহীন অংশ এক ওজন করা ছাঁকনি কাগজে ছাঁকিলে ইহার সমুদয় অংশ বাহির হইয়া যাইবে এবং অবশিষ্ট যাহা কাগজের উপর থাকিবে তাহা শুক্ষ করিয়া ওজন ক্রিবে পরে কাগজের ওজন বাদ দিলে দ্রাব্য বিহীন অংশের ওজন নিরপণ হইবে ইহা নাম গ রাখা হইল।

এই মৃত্তিকায় রদের অংশ যাহা ছিল তাহার নাম ক রহিল।

একণে অংশ থ মন্তরে রাথিয়া দ্রাব্য কিইনি সুল অংশ এক লৌহ পাতে রাখিয়া পোড়াইলে ইহার সার ভাগ নফ হইয়া থাইবে। পরে ইহাকে ওজন করিলে থাহা কমিয়া থাইবে তাহা তাহার সারের অংশ হইবে, ইহার নাম চরহিল।

এই সুল অংশেতে একণে কোন স্ক্রা অংশ নাই এই জন্ম ইহাকে ভিন্ন প্রকার চালনীতে চালনা করিলে ভিন্ন প্রকার গুড়া বাহির হইবে এই চালনি যদি তারে নির্মিত হয় তবে এক ইঞ্চ মধ্যে দশ তার থাকিবে এবং দ্বিতীয় চালনীর এক ইঞ্চ মধ্যে ৪০ তার থাকিবে কিন্তু তৃতীয় চালনী অতি স্কা মলমল কাপড়ে প্রস্তুত করা আবশ্যক, ইহার এক ইঞ্চ मर्था ১०० जांत्र थाकिर्व। अथम ठाननीरक ठानिरन अ মৃত্তিকার ঢেলা সকল উপরিভাগে থাকিবে এবং দ্বিতীয় চালনীতে চালিলে মৃত্তিকার সুল অংশ সকল ইহার উপর থাকিবে পরে তৃতীয় চালনীতে চালিলে মৃত্তিকার বালি অংশ সকল উপরে থাকিবে এবং তলভাগে অতি স্ক্র বালি সকল পতিত হইবে। মৃত্তিকার উক্ত চারি অংশ (एल), जून जश्म, नांनि धवर स्का नांनि नांदित इहेत এ মৃত্তিকার স্বভাব কিরপ জানা যাইতে পারিবে পরে ঐ मकल जश्म (य (य डेপ्यांजू, मश्राता डेल्प्रें इहेग्राह् তাহাদিগকে নিরূপণ করিতে হইলে তাহাদিগের লক্ষণ দারা ধার্যা করিতে হইবে। যদি ইহাদিগের ভিতর কোয়ার্জ প্রস্তারেয় গুড়া থাকে তবে ইহার দ্বারা জানা যাইতে পারিবে ম্রাসের উপর ঘর্ষণ করিলে ইহার কিয়দংশ ক্ষয় হইয়া यादेरिय। किन्छ यमि मृखिका इय उट्य देशांक পোড़ाइयात পর ইহার বর্ণ সুবর্ণ সদৃশ হরিদ্রা বর্ণ স্থিতি স্থাবক হইবে।

যদি ইহা ফেলপার হয় তবে কোয়ার্জ অপেক্ষা কোমল হইবে এবং ছুরি দারা ইহাকে চাঁচিতে হইলে কঠিন বোধ হইবে। একাকি অবস্থায় পোড়াইলে ইহার ধারল কোন সকল কেবল জ্বলিতে থাকিবে কিন্তু কার্বনেট অব্ সোডার সহিত পোড়াইলে দানাবন্ধি কাচের সদৃশ হইরা পুড়িবে বোরের সহিত পোড়াইলে স্বচ্ছ হইরা পুড়িবে। যদি ইহা চুন যুক্ত বালি কিন্তা স্থূল অংশ হয় তবে ইহা ছুরিতে অনায়াসে চাঁচা যাইতে পারে এবং ইহাতে কোন প্রকার এসিড ঢালিয়া দিলে বিশ্ব উদ্ভব হইতে থাকে এবং ইহাকে ভিজাইয়া গ্রো লিটমশ কাগচে সংলগ্ন করিলে নীলবর্ণ দাগ হইবে।

যদি সমুদর স্থুল অংশের ভিতর কি পরিমাণে চুন আছে তাহা নিরপণকরিতে হয় তবে চালনিতে চালিবার পুর্বের ঐ ममूमरा चूल वाश्रानर वाकेष्ट्राङ्गातिक अभिष् गोलिया हरनत ভাগ নির্পাণ করিবে কিন্তু চুন কি পার্যান্ত বিভাগ হইরা रिमा यून अश्म वानि अ स्का वानित ভिত्त आहि छोरा निक्षभाग करिएं इरेल इरोनिएगेव अकर जार्म राहेफ-কোরিক এসিড ঢালিয়া পরীক্ষা করিতে হইবে, এই চারি অংশের মধ্যে যে অংশের পর কা প্রাক্ষা প্রাথমে করিতে হইবে তাহা হইতে ৫০ গ্রেণ লইয়া তাহাতে হাইডুক্লোরিক এসিড ঢালিয়া দিবে মৃত্তিকা যত হইবে তাহার দ্বিওণ এসিড দিতে হইবে এবং ইহার চারি গুণ জল ভাহাতে মিভিত করিতে হইবে পরে ইহাকে উত্তমরূপে ঘাটিরা ক্ষা । কাল স্থিত হইতে দিবে। এসিডের ভাগ অধিক পরিমাণে আছে কি না তাহা লিটমশ কাগতে পরীক্ষা করিয়া দেখিবে এই কাদা शोलां जल अकर्ष हां किल हेरांत सोवा अश्म उनजारां পতিত হইবে এবং দ্রাব্য বিহীন অংশ ছাঁকনি কাগচেৱ छे भरत्र थो किर्व भरत्र छो वा विशेष अश्य छेख्य ऋ भ धि করিয়া এসিড হইতে মুক্ত করিবে, পরে শুক্ত করিয়া ওজন করিয়া ছাকনি কাগচের পরিমাণ বাদ দিলে যাহা থাকিবে তাহাই দ্রাব্য বিহীন অংশের পরিমাণ নিরূপণ হইবে এবং व्यविक ममूम्य कावा व्याप्त व्याप क्रिक व्याप मश्रांभ करिवांत পরে যদি বিশ্ব উদ্ভব হয় এবং এ জল যদি বৰ্ণ বিহীন হয় তবে তাহাতে কাৰ্বনেট অব্লাইম ছিল वित्वहर्गा क्रिट्ड इहेर्द।

ঢেলা বালি ও স্থান বালি ইত্যাদি যে প্রকারে এসিড (गार्श পরोक्षा कর। इहन मिहे श्रकारत मृखिकांत जांचा विशेष जाश्म घ প্रक्रिक कित्र इहेर्व। श्रथिप हेश्क পোড়াইয়া ইহার সার বস্তু নয় করিবে পরে এসিড সংযোগে ইহাতে চুন কি পরিমাণে আছে তাহা নিরূপণ করিবে অবশেষে কেবল উপধাতু সকল ইহার ভিতরে थांकिता এই क्रथं मकल अश्मंत श्रीका करा इहेल छोहा-দিগের পরিমাণ নিম্নলিখিত প্রকারে এক কাগজে লিখিতে इस्ति, यश्री ३----

- ১ ক— তাং বায়ুতে শুষ্ক করিলে ইহার ভিতর রস কি পরিমাণে জিল তাহা লিখিবে।
  - २ थ-जन जोता जश्म।
- ৩ গ—ঢেলা বালি এবং স্থক্ষ্ম বালি ইত্যাদি সকলের পরিমাণ এবং ইহাদিগের ভিতর চুনের অংশ।
  - 8 घ—जावा विशेन जाश्म এवश हेश्त हुत्नत जारा।
  - ৫ চ—मारतत जारा धर डेलधाजूत जारा।

্ সৃত্তিকার ভিতর চুন কি পরিমাণে ছিল তাছা বিশেষ জানিবার আবশাক হইলে এই জল দ্রাব্য অংশে হাইড্-ক্লোরিক এসিড ঢালিয়া দিলে ইহার চুনের অংশ হইতে কার্ব্যণিক এসিড বহির্গত হইয়া যাইবে এবং হাইড্র-ক্লোরিক এসিডের ক্লোরিন চুনের সহিত মিশ্রিত হইয়া ক্লোরাইড অব্লাইম হইয়া থাকে। यদি ইহাতে এমোনিয়া অধিক পরিমাণে ঢালিয়া দেওয়া যায় তবে ইহা হইতে এক রূপ পলি বাহির হইবে এই পলির ভিতর অকজাইড অব্ আইরণ, এলুমিনা এবং ফশফরিক এসিড থাকিবে একণে এই পলি ছাকিয়া বাহির করিবে পরে ইহাকে জলে ধৌত করিবে। যদি উহাতে কাফীকি দিলে শ্বেত বর্ণ মেঘের ন্যায় পলি বাহির হয় তবে এই প্রকারে কাষ্টকি সংযোগে উক্ত এসিডের সমুদয় ক্লোরিন বাহির করিয়া দিবে। পলি ছাকিয়া नहेल य जन थाकित ठाहा ए চून, गार्शनिया ও ম্যানগোনেসি থাকিবে, এক্ষণে ঐ জলের ভিতর এমো-নিয়া ভিন্ন অবস্থায় আছে তাহা হরিদ্রা লেপন করা কাগজে পরীক্ষা করিয়া দেখিবে পরে ইহাতে হাইডুক্লোরিক এদিড ঢালিয়া ইহার অম নাশক গুণ নষ্ট করিয়া কিয়ৎ ক্ষণ রাখিবে। এক্ষণে ইহাতে অকজেলেট অব এমোনিয়া मः योगं कतिल इक्षवर পान विदर्शक इहेट । धरे शनि ছাকিয়া তৎক্ষণাৎ বিভিন্ন করা যাইতে পারে না কারণ ইহা কাগজের ছিদ্র দিয়া বাহির হইয়া যায় এই জন্য ইহাকে রাত্রিতে অগ্নির উত্তাপে রাখিয়া প্রাতঃকালে ছাকিলে ঐ পলি বাহির হইয়া পড়িবে।

সলকার বা গন্ধক প্রস্তারের ভিতর অবস্থিতি করে এবং আগ্রেয় গিরি হইতে সলফিউরস এসিড গাস উদ্ভব হয় কিন্তু সলফিউরিক এসিড একাকি কিন্তা যৌগক অবস্থার পাওয়া যাইতে পারে। আগ্রেয় গিরি প্রদেশে জলের ভিতর দেখিতে পাওয়া যায় হাইড্রো সলফিউরিক এসিড গ্যাশ মৃত্তিকা ও সলফিউরস জল হইতে উদ্ভব হইয়া থাকে। উদ্ভিদ দিগের মধ্যে এই কয়েক য়েক্ষ (গন্ধক, সলফেট অব্লাইম, সলট পোটাশ, সলট অব্ সোডা এই তিন অবস্থার দেখিতে পাওয়া যায়) লিলিয়েসি জাতি মধ্যে রস্থনের ভিতর ক্রুকর্ষিকরি বা সরিষা মধ্যে অম্বিলফরি বা ধনে জাতির মধ্যে হিংকের মধ্যে আছে এই বস্তু জলে জাব্য মহে কিন্তু এলকোহল ও ইথরে কিঞ্চিৎ পরিমাণে জাব্য হয়।

কোন বস্তুতে গদ্ধক আছে এমত সন্দেহ হইলে ইহা কোন এসিডের সহিত মিঞিত করিয়া বক যন্ত্রের ভিতর রাখিয়া উত্তাপ সংলগ্ন করিলে এক প্রকার গ্যাস উদ্ভব হইবে এই গ্যাস যদি এসিটেট অব্লেডের জলের ভিতর দিয়া চালনা করিলে ক্লম্ব বর্ণ পলি উৎপন্ন হইবে কিম্বা প্রবিদ্ধ কাষ্টিক পোটাশের এবং জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া ছাকিয়া লইলে যে জল থাকিবে তাহাতে টাকা কিম্বা উজ্জল এক থণ্ড রোপ্য ফেলিয়া দেওয়া যায় তবে ঐ জলে গদ্ধক থাকিলে রোপ্য ক্লম্ব বর্ণ হইয়া যাইবে এবং যদি গদ্ধক না থাকে তবে যেমন উজ্জ্বল রোপ্য তদ্রপ থাকিবে।

## क्रिमर्भग।

ভকার গুণ পরীক্ষা করা হইলে ইহাতে চিক্কণ বালি সার এবং রসের ভাগ কি পরিমাণে আছে তাহা জ্ঞানা যাইতে পারিবে কিন্তু মৃত্তিকার উক্ত বস্তু সকল উপযুক্ত পরিমাণে থাকিলেও যদি ইহা কোন উদ্ভিদের প্রতি ইহার উর্বরতা গুণ প্রকাশ না করে তবে সেই কারণ নিরপণ করিতে হইলে রাসায়নিক পরীক্ষা দ্বারা মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ করিতে হইবে। মৃত্তিকা যোগিক পদার্থ উহা নানাবিধ উপাদানে স্ফ ইইয়াছে, এই উপাদান সকল সংখ্যাতে ষট পঞ্চাশতের অধিক হইবে। ইহারা বিশুদ্ধ বস্তু কিন্তু কখনই বিশুদ্ধ অবস্থায় থাকে না ইহারা তিন শ্রেণীতে বিভক্ত হইয়াছে।

दानुवर পদार्थ।	ধাতু।	উশধাতু।
> অক্সিজন	১ স্বৰ্	> গন্ধক
২ হাইডুজেন	২ রৌপ্য	২ সোরা
० नाइट्ट्रोजन	৩ তাত্র	৩ চুন
	৪ লৌহ	
	व द्रार	

এই সকল বস্তু পরস্পর স্থানতে থাকাতেই ভৌতিক কার্য্য সমস্ত স্থাকরপে নির্বাহিত হইতেছে এবং ইঃ দিগের যোগ বিচ্ছেদই কি সচেতন কি অচেতন তাব ভৌতিক দেহের লয় হইতেছে যেমন এক অট্টালিকা ভাঙ্গিয়া যাইলে তত্পাদানে কলাপ দারা অন্য অট্টালিকা নির্মাণ হইয়া থাকে সেই রূপ এক দেহের ধংশে অন্য দেহ উৎপন্ন হইয়া প্রকৃতির আশ্চর্য্য লীলা প্রকাশ ক্রিতেছে। এই সকল উপাদানেয় যোগ হুই প্রকার, মিল্লিত ও
রসায়নিক। যখন এক বস্তুর প্রমাণু সকল অন্য বস্তুর
পরমাণুর সহিত কেবল মিলিত হইয়া থাকে তখন তাহাকে
মিল্রিত যোগ কহে। হুদ্ধ এবং জল ইহাদিগের পরক্ষার
একত্রে যোগ উহা মিল্রিত যোগা, কারণ ঐ রপ যোগা
কেবল উভয়ের পরমাণু একত্রিত হইয়া থাকে। তাত্র এবং
দন্তা একত্রে মিল্রিত হইয়া পিতল হয়। অক্সিজন এবং
নাইট্রোজন মিলিয়া বায়ুর উৎপত্তি হইয়াছে, চিনির পানা
ও জল মিল্রিত জাবক এমত সমস্ত মিল্রিত পদার্থ যোগিক
নহে কিন্তু হুই বস্তুর পরমাণু রসায়ণিক আকর্ষণে বন্ধ হইয়া
যদি যোগিক পদার্থ উৎপত্তি হয় তবে তাহাকে রাসায়নিক
যোগ কহে।

অক্সিজন ও হাইডুজন একত্রে যুক্ত করিলে জল উৎপাদন করে ইহাতে অক্সিজন ও হাইড্রোজনের পরমাণু সকল নির্দিন্ট পরিমাণানুসারে যুক্ত হইরাছে কিন্তু যদি উপযুক্ত পরিমাণ না থাকিত তবে কখনই জল উৎপন্ন হইত না, গন্ধক এবং অক্সিজন উপযুক্ত পরিমাণে যুক্ত হইরা জাবক হয়। সোডিয়ম ও অক্সিজন যোগে সোডা উৎপন্ন হইনয়াছে এই সকল যৌগিক পদার্থের নাম আইড ও ইউরেট প্রত্যয়ান্ত করিয়া প্রকাশ করিতে হয়। যেমন অকজাইড অর্থাৎ অক্সিজন যাহার সহিত যুক্ত হইয়াছে তাহাকে অকজাইড কহে এইরপ ক্লোরাইড, ব্রোমাইড, আয়ওডাইড এবং আয়ওডিউরেট, সলফিউরেট, কার্কিউরেট, ফসফিরেট অর্থাৎ ক্লোরিন, ব্রোমান ও ফ্লোরিন ইত্যাদি বস্তুতে অন্য

ৰস্ত্ৰ সকল আসিয়া যুক্ত হইলে উক্ত নামে আখ্যায়িত হয়।

দ্বিযোগিক পদার্থে অক্সিজন থাকাতে যদি অমগুণ প্রকাশ করে তবে ইক এবং অস প্রত্যয়ান্ত করিয়া প্রকাশ করিতে হয়। যদি এক ভাগ গন্ধক ও চুই ভাগ অক্সিজন থাকে তবে অস প্রতায়ের দ্বারা প্রকাশ করিতে হয়, যেমন সলফিউরস এসিড কিন্তু এক ভাগ গন্ধক তিন ভাগ অক্সি-জন থাকিলে ইক প্রত্যয়ের দ্বারা প্রকাশ করিতে হয় যেমন সলফিরিক এসিড এবং এক ভাগা নাইট্রোজেন ও তিন ভাগা অক্সিজেন মিশ্রিত করিলে নাইট্রস এসিড হয় এবং এক ভাগ नार्द्वोष्टिन ও পঞ্জাগ অক্সিজেন একত্রে মিগ্রিত করিলে नारे कि अनिए रहा, धारे योशिक भनार्थ मकल दियाशिक, ত্রিযোগিক ও চতুর্যোগিক পর্যান্ত হইয়া থাকে। গন্ধক এবং অক্সিজন একত্রে মিশ্রিত হইয়া যদি দ্রাবক উৎপন্ন হয় তবে তাহাকে দ্বিযোগিক কহে কিন্তু যদি দ্রাবক ও সোডা একত্র इहेग्रा मनाएक जिक मांजा किया कार्वाविक अमिछ ও नाहेग কার্বনেট অফ লাইম হয়, তবে তাহাকে ত্রিযোগিক কহে। যদি চারি প্রকার পরমাণুর যোগে এক বস্তু হয় তবে তাহাকে চতুর্যোগিক কহে। যেমন সলফেট অফ লেম্মনা বা ফটকিরিও সলফেট অফ পোটাশ ইত্যাদি।

নানা বস্তুর পরমাণু ওজনে নানাপ্রকার হইরা থাকে। পরমাণু পরিমিত হাইড্রোজনের সহিত পরমাণু পরিমিত অক্সিজন মিশ্রিত হইলে জল উৎপন্ন হয়, কিন্তু হাইড্রোজেন এমত হাল্কা বস্তু যে ১০০ রতি পরিমিত :১.১ রতি হাই- ড্রোজেন থাকে এবং ৮৮,৮ অক্সিজন থাকে অর্থাৎ হাইড্রোজন যে পরিমাণে এক হইবে অক্সিজন দেই পরিমাণে অফ্
হইবে এবং ইহাই ইহাদিগের রাসায়ণিক যোগের তুল্য
পরিমাণ হইবে। এই পরিমাণ না হইলে কখন জল উৎপন্ন
হইবে না এইরপ এক বস্তুর উপাদান অন্য বস্তুর উপাদানর সহিত যোগ হইবার এক রপ বিশেষ পরিমাণ
আছে তাহা না হইলে যোগ হইবে না যেমন ১০০ ভাগ
হাইডুক্লোরিক এসিড ৯৭,২৬ ক্লোরিন ২,৭৪ হাইড্রোজেন
১০০ ভাগ হাইড্রো সলফিউরিক এসিড ৯৪,১ গন্ধক ৫০৮
হাইড্রোজেন ১০০ ভাগ হাইড্রোওডিক এসিড ও আইওডিন
৯৯,২৮ হাইড্রোজেন ০০০৭।

কোন রাসায়নিক যেগিক বস্তুর এক উপাদানের স্থানে অন্য উপাদান স্থাপন করিতে হইলে যে পরিমাণে ইহারা যোগ হইরা থাকে, সেই পরিমাণ না হইলে ঐ বস্তুর কখনই স্থাপন করা যাইতে পারেনা। যেমন অক্সিজনের মিশ্রিত কোন যেগিক পদার্থের যদি অক্সিজন বহির্গত হইয়া যায় এবং তাহার স্থানে যদি হাইড্রোজন স্থাপন করিতে হয়, তবে অফ্ট অংশ অক্সিজনের স্থানে একাংশ হাইড্রোজন স্থাপন করিতে হয়, তবে অফ্ট হইবে এবং ৩৫,৪ রতি পরিমিত কোরিন ৬ রতি পরিমিত কার্ম্বন ১৬ রতি পরিমিত গল্পক ইহারা প্রত্যেকে এক রতি পরিমিত হাইড্রোজনের তুল্য হইবে।

এই জগতের উপাদান সকল ও যে প্রকারে ইহাদিগের যোগ হইরা থাকে ভাহা সমুদর অবগত হইরা রুষক এক্ষণে ও যোগ যে প্রকারে বিচ্ছেদ করিতে হয় তাহাই করিতে

প্রবৃত্ত হইবেন, যে ক্লেত্রের মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ করিতে হইবে, তথাকার চারি ভিন্ন স্থান হইতে এক এক সের মৃত্তিকা কিঞ্চিৎ নিম্ন ভাগ হইতে গ্রহণ করিতে হইবে, পরে ইহাদিগকে মিশ্রিত করিয়া পুনশ্চ ইহাদিগকে ভিন্ন২ চারি সমান অংশ করিবে, পরে এক অংশ লইয়া রৌদ্র কিন্তা অগ্নিদ্বারা সম্পূর্ণরূপে শুষ্ক করিবে পরে ইহাকে বিলোড়ন করিয়া উত্তমরূপে মিশ্রিত করিবে এবং স্থাম চালনিতে চালিয়া গুড়া সকল বহির্গত করিবে এবং ঢেলা প্রস্তুর ভঙ্গ বা খোলা কুচি ইত্যাদি চালনির উপর থাকিবে পরে উক্ত ত্রই অংশ ওজন করিয়া ওঁড়া অংশ কত হইল ও ঢেলা ইত্যাদি অংশ কত হইল তাহানিরপণ করিবে, অনন্তর মৃত্তি-कांत्र एला मकल लहेश। अङ्गूलिए स्थर्भ कतितल यिन कर्ठिन ও করকরে বোধ হয় এবং কাঁচের উপর ঘর্ষণ করিলে যদি ইহাতে রেখা অন্ধিত হয়, তবে ইহাতে বানির তাংশ আছে নিরূপণ হইবে। আর যদি অন্ধুলিতে টিপিলে অতি সহজে ভাঙ্গিয়া যায় কিন্তা ছুব্লিতে কাটিলে অতি সহজে কাটিয়া যায়, তবে ইহার ভিতর কঠিন চিক্লণের অংশ অধিক আছে निक्र भे । इहेरव। यनि छेक एक्ता गकन अक कार्फा भ्रास রাখিয়া তাহাতে ভিনিগর কিম্বা হাইডে ক্রারিক এসিড তালিয়া দিলে বিশ্ব উন্তব হয় তবে ইহাদিগের ভিতর কার্ব-(न हे अफ ल किंग आहि श्रित करा इहेर्व।

যৃত্তিকার গুঁড়া অংশ সকল চালনিতে চালিয়া যাহা বাহির ও ওজন করা হইয়াছে তৎসমুদয় লইয়া চোয়ান জলে গুলিতে হইবে এবং ঐ জল এমত পরিমাণে দিতে

इहेरव (य डोइरेड डलडोर्शक ममूनम मृखिको छिलिशो পাতলা হইয়া যাইবে। পরে ঐ মৃত্তিকা গোলাজল ২০ মিনিট অবধি অগ্নিতে সিদ্ধ করিবে পরে ইহা স্থির হইলে জল থাকিবে তাহা লইয়া এক প্রকার ছাকনি কাগজ আছে তাহাতে হুই বার ছাকিতে হইবে, পরে কাদার অংশ যাহা কিছু ইহার ভিতরে থাকিবে তৎসমুদয় ঐ ছাকনি কাগজের উপর থাকিবে এবং পরিষ্কার জল বহির্গত হইবে কিন্তু এই জলের ভিতর কাদার অংশ আছে কিনা তাহা সপ্রমাণ করিবার জন্য ইহার ছুই তিন ফোটা এক প্লাটিন্ম পাতে রাখিয়া অ্যতে শুষ্ক করিলে যদি ইহাতে কোন দাগ লাগিয়া থাকে তবে অনুমান হইবে যে ইহার ভিতর कामा वां नवर्णंत्र अश्मं आर्छ। आत्र क्षांिक्य भारत थ जन শুষ্ক করিলে যদি কোন দাগ না থাকে তবে ইহার পরীক্ষা ভিতর গিপদম অর্থাৎ সল্ফেট অফ লাইম থাকে তবে এ পরীক্ষা অত্যন্ত কঠিন বোধ হইবে এই জন্য অকজেলেট व्यक्त नाइम मश्यार्थ हुन वाहित्र कत्रिल এवर वितिष्ठे। मश-যোগে জাবক বাহির করিলে পরীক্ষাতে অন্য অন্য অংশ সহজ হইয়া যাইবে পরে সমুদার জল অগ্নিতেশুক্ষ করিয়া ঘন করিবে। কিন্তু এমৎ সাবধান ছইতে ছইবে যে তদ্বারা मगूमग्र जल एक इरेग्रा किहूरे छिउ इरेट ना পाति यिन औ जन क्रक्षवर्ग इय उत्व अनुमान इरेड भीदि य ইহার ভিতর কোন প্রকার সার বস্তু আছে এই জন্য প্র

সমুদয় জল প্লাটনম কিন্তা কাচের বাটিতে রাখিরা আমতে শুক্ষ করিবে পরে ঐ শুক্ত মৃত্তিকা এক মুচিতে রাখিরা আমিতে পোড়াইলে ঐ মৃত্তিকায় রুফবর্ণ আর থাকিবে না কিন্তু বায়ুতে উড়ে যায় এমৎ কোন বল্ল যথা নাইট্রিক র্যাদিড কিন্তা এমোনিয়া থাকে তাহা হইলে আমি সমস্পর্শে নফ হইরা বাইতে পারে এই জন্য দকল বস্তু নিরীক্ষণ করিতে হইলে যে মৃত্তিকা পোড়ান হয় নাই তাহা লইয়া উক্ত হই বস্তু পরীক্ষা করিবে আর সকল মৃত্তিকার ভিতর ক্লোরাইড অবশ্য থাকিতে পারে এই জন্য আর মৃত্তিকা পোড়াইবার সময়ে অমি যত কম হইবে ততই ক্লোরাইড সকল নফ হইয়া যাইতে পারিবে না।

মৃত্তিকা পোড়াইয়া ইহার সার বস্তু নই ইংলে ইহাকে জল মিপ্রিত নাইট্রিক এসিডের সহিত মিপ্রিত করিবে। যদি ইহাতে এমৎ কোন বস্তু থাকে যে তাহা ঐ র্যাসিডে ত্রব না হর তবে ইহা সিলিকা নিশ্চয় হইবে পরে সেই সিলিকা ছাকিয়া ফেলিয়া ঐ র্যাসিড মিপ্রিত জলে এমোনিয়া এত পরিমাণে ঢালিয়া দিতে হইবে যে তাহাতে র্যাসিডের অন্ন শুণ কিছু না থাকে এবং এমোনিয়ার শুণ কিছুই না থাকে। অন্তর্ম প্রমাণ করিবার জন্য লিটন্মন কাগচ আবশ্যক করে। এবং অন্ন নাশা গুণ প্রনাণ করিবার জন্য ট্রমরিক বা হরিদ্রা লিপ্ত কাগজ আবশ্যক অন্ন লিটনমন কাগজে ও অন্ননাশক ত্রব্য হরিদ্রা লিপ্ত কাগজে বাক্ষাক অন্ন লিটনাক কাগজে ও অন্ননাশক ত্র্য হরিদ্রা লিপ্ত কাগজে আবশ্যক অন্ন লিটনাক কাগজে ও অন্ননাশক ত্র্য হরিদ্রা লিপ্ত কাগজে আবশ্যক অন্ন লিটনাক কাগজে ও অন্ননাশক ত্র্য হরিদ্রা লিপ্ত কাগজে প্রজাগজে দিলে কাগজ লাল হইয়া উঠে যদি উভয় কাগজে ঐ জলে কিলে লাল না হয় তবে ঐ জলে অন্ন ও

অন্ননাশক দ্রব্য কিছু মাত্র নাই এই জল হুই গুণ বিছীন হুইলে পরীক্ষার যোগ্য হুইবে পরে এ জল লইরা যে পরীক্ষা করিতে হুইবে তাহা হুই প্রকার প্রথমত গুণ পরীক্ষা দিতীয় পারিমাণিক পরীক্ষা।

## छन भद्रीका।

এই পরীক্ষার দ্বারা মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ করিয়া যদি কেবল গুণের দার। ইহার উপাদান সকল নিরূপণ করিতে হয়, তবে তাহাকে গুণ পরীক্ষা কহে। যদি এ মৃত্তিকায় নাই-টেট সকল থাকে তবে এ মৃত্তিকাকে শুক্ষ করিয়া পোড়াইলে পট পট শক উৎপন্ন হইবে কিন্তু বিশেষ রূপ সপ্রমাণ করিতে হইলে যখনই মৃতিকা শুষ্ক করা হইয়াছিল তখনই ইহাতে জাবক ও গ্রিন প্রোটসলফেট অফ আইরণ জল মিশ্রিত করিয়া দিলে উহাতে যে পরিমাণে নাইটিক য়াসিড থাকিবে তত পরিমাণে ইহা কটা বর্ণ হইয়া উঠিবে। নাইটেট অর্থাৎ নাইটিক য়্যাদিড যাহার সহিত মিশ্রিত থাকে থেমন নাইট্রিক য়্রাসিড্ পোটাসের সহিত মিশ্রিত হইয়া সাল্টপিটর বা সোয়ারার উৎপত্তি হইয়া মৃত্তিকার ভিতর কোন কোন স্থানে দেখিতে পাওরা যায়। নাইটেট অফ (माण ना अकलाइम, ना अक मार्गिनिमिय़ा এই সকল পৃথিবীর নানাস্থানের মৃতিকায় দেখিতে পাওয়া যায়। কিন্তু রক্ষের ভিতর নাইট্রেট অফ্ লাইম এবং নাইট্রেট অফ পোটাশ দেখিতে পাওয়া যায় না। নাইট্রিক য়্যাসিড জলের সহিত মিশ্রিত করিলে উত্তাপ বহির্গত হয়। এবং যে শিশির ভিতরে ইহা থাকে ইহার ছিপি খুলিলে খেতবর্ণ ধুম বহির্গত হয় ইহা আমাদিগের চক্ষুর কোন স্থানে লাগিলে সেই স্থান হরিদ্রাবর্ণ হইয়া যায় স্বর্ণ এবং প্লাটিনম ভিন্ন অন্য কোন ধাতুর সহিত মিপ্রিত করিলে ইহার অক্সিজনের কিয়দংশ ঐ ধাতুর সহিত মিপ্রিত হইয়া যায় ইহা তদবস্থায় নাইট্রুম অকজাইট রূপে পরি-ণত হইয়া থাকে। এই বস্তুতে বায়ু সংলগ্ধ হইলে লালবর্ণ হইয়া যায়।

বিনকজাইড অফ টীন ও অকজাইড অফ এণ্টিমণি বাতিত আর সকল ধাতু ইহাতে তাব হইয়া থাকে। স্বৰ্ণ এবং প্লাটিননম ইহার সংযোগ কিছু পরিবর্ত্ত হয় না। এই জন্য নাইন্ট্রিক র্যাসিড সংযোগে উক্ত ছই ধাতুতে অন্য কোন ধাতু মিত্রিত থাকিলে তাহা তাব হইয়া যায় এবং স্বৰ্ণ ও প্লাটিনম তদবস্থায় থাকে কিন্তু যদি চারি অংশ হাইড্রোক্রোরিক এসিড এবং এক অংশ নাট্রিক র্যাসিড মিত্রিত করা যায়, তবে এক তাব্যকর বস্তু প্রস্তুত হইবে। ইহাকে একোয়ানির বিজিয়া কহে। ইহার সংযোগে স্বর্ণ ও প্লাটিনমের পাতা দ্রব হইয়া যায়।

যদি পূর্ব্ব উক্ত নৃত্তিকায় এমোনিয়া থাকে তার প্রস্তুত করা জল এক কাচের চুন্ধিতে রাথিয়া ইহাতে প্রাণা কিষা কাফিকপোটাশের জল মিশ্রিত করিয়া অয়ির উত্তাপ সংলয় করিলে এমোনিয়ার গন্ধ বহির্গত হেইবে কিন্তু যদি ঐগন্ধ বহির্গত না হয় তবে কাচের ছড়ি হাইড্রোক্লোরিক এসিডে ভিজাইয়া এই চুন্ধির মুখে ধরিলে ধুম উদ্ভব হইতে

থাকে এবং গ্রে লিটমশ কাগজ ইহার মুখে ধরিলে নীলবর্ণ হইবে এবং চূঙ্গির মুখ হইতে ঐ কাগজ অপাদারিত করিলে ইহার স্বাভাবিক বর্ণ প্রাপ্ত হইবে।

যদি ঐ জলে দ্রাবক কোন মিশ্রিত অবস্থায় থাকে তবে এ জলের এক অংশ অন্য চুঙ্গিতে রাখিয়া তাহাতে নাই-ট্রেট অফ ব্যারিটা সংযোগ করিলে শ্বেতবর্ণ পলি বহির্গত इहेल এবং তাহা ছাকিয়া লইলে সলফেট অফ ব্যারিটা দেখিতে পাওয়া যায় কিন্তু মদি ঐ জলে কোন প্রকার কারব্যনেট থাকে তবে পলি বহির্গত হইবার অনেক প্রতি বন্ধকতা হইতে পারে এই জন্য ব্যারিটা সংযোগ করিবার পূর্ব্বে এ জলে তুই চারি কোটা নাইট্রিক র্য়াসিড তালিয়া नित्न के প্রতিবন্ধকতা আর থাকিবে না যদি के জলে ক্লোরিন কিন্তা হাইড্রোক্লোরিক য়্যাসিড থাকে তবে ইহার এক অংশ এক কাচের চুন্ধিতে রাখিয়া তাহাতে প্রথমে ত্বই চারি ফোটা নাইট্রিক য়াসিড ঢালিয়া দিবে পরে ইহাতে নাইট্রেট অব সিলভর বা কাফকির জল মিশ্রিত করিলে সরের ন্যায় বস্তু উপরে বাহির হইবে এই সর আলোতে বাহির করিলে কৃষ্ণবর্ণ প্রাপ্ত হইবে ইহা নাইট্রিক র্যাসিডে দ্রাব্য নহে কিন্তু এমোনিয়াতে দ্রব হইয়া থাকে ক্লোরাইড অফ সোডিয়ম বা লবণ প্রায় সকল মৃত্তিকায় थर्क এই জন্য ना रेष्ट्रिंगे अक मिन जात्र मश्यार्थ जरकार কিঞ্চিৎ ঘোরবর্ণ দেখায় কিন্তু আলোতে বাহির করিয়া त्राथित्न क्रक्षवर्ग श्री अ इहेर् यानि श्री क्रांतन कार्यत्न मकन থাকে তবে তাহাতে কাৰ্কনিক র্যাসিড থাকা প্রযুক্ত হাই- ভ্রোক্লোরিক য়াসিড সংযোগে বিশ্ব উদ্ভব হয় কিন্তু কার্বানেট সকল অতি অপপ পরিমাণে থাকিলে বিশ্ব উদ্ভব হয়
না কারণ ইছা অতি অপপ প্রযুক্ত জলে দ্রব হইয়া থাকে
যদি চ্নের জল ইছাতে মিশ্রিত করা যায় তবে ইছা কার্বানেটদিগের সহিত মিশ্রিত হইয়া শ্বেত্বর্ণ পালি বহির্নাত
করিবে এই কার্বাণেট অফ লাইম য়াসিডে দ্রব হইয়া যাইবে।

যে সকল বস্তু পরেতে পরীক্ষা করিতে হইবে তাহাদিগের জন্য ঐ জল ভিন্নং পাত্রে রাখিয়া উপযুক্ত বস্তু সংযোগে তাহাদিগকে বাহির করিতে হইবে কিন্তু ঐ জলের
যে বস্তু প্রথমে না করিলে অন্য সকল বস্তু কখনই বাহির
করা যাইতে পারে না। তাহাদিগকে অত্যে বাহির করিবার
একটি প্রণালি অবলম্বন করিয়া পরীক্ষা কার্য্য নির্মাহ
করিতে হইবে অর্থাৎ যে বস্তু অত্যে বাহির করা আবশ্যক
তাহার জন্য পরীক্ষা অত্যে করিতে হইবে এবং দিতীয়
তাহার পরে বাহির করিবে এই রূপ ক্রমশঃ একটির পর
আর একটা বাহির করিতে হইবে। এই পরীক্ষার জন্য উক্ত
জল অধিক আবশ্যক করে এবং ইহাতে সার বস্তু কিছুমাত্র
থাকে না।

যদি পূর্বের পরীক্ষার নিরপণ হয় যে এ জলের ভিতর দাবক আছে তবে ইহাতে ক্লোরাইড জফ বেরিটা ক্রমণ সংযোগ করিয়া সমুদর গন্ধকের ভাগ বহিষ্কৃত করিবে পরে ইহার পলি ছাঁকিয়া লইলে যে জল থাকিবে ইহাতে অধিক পরিমাণে এমোনিয়া সংযোগ করিলে যদি ইহার বর্ণ ভাত্রের ন্যায় হইয়া উঠে তবে ইহাতে পরেক

জাইড অফ আইরণ আছে নিরূপণ হইবে এবং বায়তে বাহির করিলে যদি ইহ। অধিকতর রুষ্ণবর্ণ হয় তবে ইহাতে मानिरानिमि जाए निक्र भन इरेर किन्छ यिन रेश (शंजवर्ग আঠার ন্যায় হয় তবে ইহার ভিতরে এলুমিনা বা ম্যাগনে-দিয়া আছে অথবা এই ছুই বস্তুই আছে বুঝিতে হইবে কিন্তু যদি ইহাতে উক্ত চারি বস্তুই থাকে তবে ঐ জলের রঙ্গ কিছু ঘোর বর্ণ হইবে যদি এই জলে হাইডোক্লোরিক য়াসিড এবং এমোনিয়া অধিক পরিমাণে সংযোগ করা হয় তবে ম্যাগনৈ সিয়া ওম্যানগোনিসি দ্রব হইয়া যাইবে কিন্তু এলুমিনা ও পরেকজাইড অফ আইরণের পলি বহির্গত रहेता। ५३ পिलिक भीख हाँ किया के हा किनी त छे भव छे छम রূপে চোরান জলে ধেতি করিবে যদি ঐ পালি মিভিত জলে কাফিক পোটাশ অধিক পরিমাণে ঢালিয়া দেওয়া যায় তবে এলুমিনা দ্রব হইয়া যাইবে এবং পরেকজাইড অফ আইরণ বহির্গত হইবে একণে ইহাতে জল ঢালিয়া নিবে নতুবা কাষ্টিক পোটাশ দ্বারা ছাকনি কাগজ नसे इरेशा यारित পরেকজাইড তাফ্ আইরণ এই क्र.भ विভिन्न इहेश। পড়িলে অविभिष्ठे জল याद्रा (পोरोम मश्योरो सव इहेशाइ जोहाउ हाहेए। का-রিক এসিড এমৎ পরিমাণে সংযোগ করিবে যে তাহাতে পোটাশের অস্ত্রনাসক এবং য়্যাসিডের অস্ত গুণ কিছুমাত্র থাকিবে না এবং তাহা পূর্বোক্ত হুই প্রকার কাগজে পরীক্ষা क्रिया (मिथित পরে এ জলে এমোনিয়া সংযোগ ক্রিলে শ্বেতবর্ণ আঠার ন্যায় এলুমিনার পালি বহির্গত হইবে যদি

জলে ফদফেট দকল থাকে তবে পরেকজাইড অফ আই-রণ এলুমিনার ফশফরিক এশিডের সহিত সংযুক্ত হইয়া थाकित। इंशानिगरक रा थकार्त वाश्ति कतिए इंश्व তাহা পরে লিখিব। এলুমিনা বাহির করিবার জন্য এমো-নিয়া সংযোগে যে জল অমনাশক হইয়াছে তাহাতে পুনশ্চ হাইড্রোক্লোরিক য়্যাসিড এমৎ পরিমাণে যোগ করিবে যে তাহাতে এমোনিয়াও য়াসিডের গুণ কিছুমাত্র থাকে না পরে इश्टा मलका इंड जक अया निया मश्या मं क्रिल मल एक है অফ ম্যানগোনিসের পলি সকল মাংসবর্ণ ধারণ করিরা বহি-ৰ্গত হইবে। যদি এই বস্তু অতি অপা হয় তবে যদব্ধি উহা স্থিত না হয় তদবধি ইহা দেখিতে পাওয়া যাইবেনা। পরে रेश हाँ किला मन कि छे (इं वे अक मानिशानिम विर्शिष रश এবং অবশিষ্ট যে জল থাকিবে যদি তাহাতে চুন থাকে তবে তাহাতে হাইড়োক্লোরিক য়্যাসিড সংযোগ করিয়া অগ্নি উত্তাপ সংলগ্ন করিলে সলফাইড অফ এমোনিরম हरें जनिक छेर बे हे विष्णु जन शक्त दि श्रिं हे हैं। श्रि श्रे গন্ধ নিবারণ হইলে যদি এ জল ঘোলা বোধ হয় তবে গন্ধকের পলি পড়িয়া এরপ হইয়াছে ইহাকে ছাঁকিলে গল্পক বহি-ৰ্গত হইয়া যাইবে। পরে অবশিষ্ট যে জল থাতি ৰ তাহাতে এমোনিয়া সংযোগ করিলে কিঞ্চিৎ অমনা জ্ঞ হইবে এবং ইহাতে অকজেলেট অফ এমোনিয়া দিলে অকজেলেট অব लाहेरमत शिल विशिष्ठ इहेरत। हेहा उएक्नाए हैं। किर्ल কখনই বহিৰ্গত হইবেনা। কিঞ্ছিৎকাল ইহাকে উত্তপ্ত স্থানে রাখিয়া ছাকিলে পলি নির্গত হইবে পরে এ জল সাবধানে

এক কাচের কিম্বা প্লাটিনম পাত্রে মাখিয়া উত্তাপ দ্বারা एक कतित्व धार्मानियात अश्म नके इहेश यहित । भारत रेर्राट जल जोलिया नित्न ममूनोय छिलिया यारेत यनि ইহার কোন অংশ জলে দ্রবনা হয় তবে দুই চারি ফোটা रारेष्ड्राद्भाविक ग्रामिष रेराउ मिल मगूम्य जब ररेष পরে যে লাল অকজাইউ অফ মর করিতে নাইট্রিক য়্যাসিড কিয়া অন্যকোন দ্রব্য মিশ্রিত নাই তাহা ঐ জলের সহিত মিশ্রিত করিয়া শুষ্ক করিবে পরে ইহা জলে গুলিলে ম্যাগ-নেসিয়া ও অকজাইড অফ মরকরি দ্রব হইবে না কিন্তু পোটেসিয়ম ও সোডা দ্রব হইরা যাইবে পরে ঐ জল ছাকিলে যে পালি বহিৰ্গত হইবে তাহা ধৌত করিয়া অগ্নিতে শুষ্ক করিলে অকজাইড অফ মরকরি নফ হইয়া যাইবে এবং ম্যাগ্নেশিয়া বহিগত হইবে। ম্যাগ্নেশিয়া বহিগ্ত হইলে অবশিষ্ট যে জল থাকিবে তাহা অগ্নিতে শুক্ক করিয়া ইহার কিয়দংশ প্লাটিনম তারে সংলগ্ন করিয়া অগ্নির শিখায় ধরিলে যদি ইহা হরিদ্রাবর্ণ হয় তবে ইহাতে সোডা আছে নিরূপন হইবে কিন্তু পোটাশ বহির্গত করি-বার জন্য ইহাকে পুনশ্চ জলে গুলিতে হইবে এবং তাহাতে টারটেরিক য়াসিড সংযোগ করিলে ইহাতে পোটাশ थाकिल इंश्व পलि मकल माना वाधिया वाहिषात्रि जक পোটাশ রূপে পরিণত হইবে কিয়া পরক্লোরাইড অফ প্লা-টিনম সংযোগ করিলে হরিদ্রাবর্ণ পলি সকল পূর্বস্থিত ত্বই চারি ফোঁটা হাইডোক্লোরিক য়াসিড সহকারে ক্লোরা-ইড অফ পোটাসিয়ম এবং প্লাটিনম উৎপন্ন হইবে।

সোডার পলিজযুক্ত অবস্থায় বাহির হইতে পারে বাইটারট্রেট অফ পোটাশ ছাঁকিয়া লইলে অবশিষ্ট যে জল
থাকিবে তাহাতে কঠিক পোটাশ সংযোগ করিলে ইহা
অম নাশক ও অমকর গুণ হইতে বিরত হইবে পরে ইহাকে
ছাঁকিলে বাইটারট্রেট বিভিন্ন হইয়া যাইবে এবং ইহাতে
জল মিজিত এণ্টিমণিয়েট সোডা বহির্গত হইবে ইহা বাই
টারট্রেট অফ পোটাশের সদৃশ।

যদি প্র মৃতিকায় কসকরিক য়্যাদিড বাহির করিতে হয় তবে পূর্বেতে প্র মৃতিকা পোড়াইয়া যে প্রস্তুত করা হইয়াছিল তাহার এক অংশ এক কাঁচের চুপিতে ঢালিয়া তাহাতে পরক্রোরাইড অফ আইরণ মিজিত করিবে যদি পূর্বেকার পরীক্ষায় নিরপণ হইয়া থাকে যে পরেকজাইড অফ আইরণ ও এলুমিনা অতি অপ্য পরিমাণে আছে তবে তাহাতে এমানিয়া অধিক পরিমাণে ঢালিয়া দিলে পলি বহির্গত হইবে এবং অবশিষ্ট জল আত্তে আতে ঢালিয়া ফেলিবে পরে ইহাতে চোয়াম জল ঢালিয়া ফেলিবে এবং ইহাতে এমিটিক য়য়িসিড যোগ করিলে যদি প্র পালির কোম অংশ এব মানিয়া তবে কমফরিক এমিড় জালিয়া ফেলিবে এবং ইহাতে এমিটিক য়য়িসিড যোগ করিলে যদি প্র পালের কোম অংশ এব মা হয় তবে কমফরিক এমিড় আছে নিরপণ হইবে।

যদি সৃত্তিকার ভিতর তাম্র বেরিটা প্রভৃতি অন্যান্য বস্তু থাকে তবে ইহাদিগের পরীক্ষার জন্য যে সকল বস্তু ইংরাজী রাসায়নিক এত্থে অবধারিত আছে তাহাদিগের সংযোগে উক্ত বস্তুদিগকৈ নিরূপণ করিবে পরে সকল বস্তু নিরূপণ করা হইলে তাহাদিগের নাম এবং তাহাদিগের পরীক্ষায় যে সকল সিদ্ধান্ত হইয়াছে তাহা সমুদয় লিখিয়া রাধিবে।

## পরিমাণিক পরীক্ষা 1

গুণ পরীক্ষার দ্বারা মৃত্তিকায় যে সকল উপাদান নির-পণ হইবে তাহারা মৃত্তিকার ভিতর কি পরিমাণে আছে তাহা অবগত হওয়া অত্যন্ত আবশ্যক। এই পরীক্ষায় मृजिकात प्रहे जाश्म लहेरिय। এक जाश्म जन जावा अवश অন্য অংশ জল দ্রাব্য নহে। অর্দ্ধ কিম্বা এক পেণ্ডি মৃত্তিকা পুর্বেবিক্তরপে চোয়ান জলে গুলিয়া দিন্ধ করিবে পরে ছাকিয়া কেবল ইহার জল দ্রাব্য অংশ লইবে। কিন্তু দ্রাব্য বিহীন অংশ শুষ্ক করিয়া ওজন করিলে ছুই অংশের পরি-মাণ জানা জাইতে পারিবে, পরে জল দ্রারা অংশ এক কাচের কিন্তা প্রাটিনম নিমিত্ত এক মুচিতে রাখিয়া অগ্নির উত্তাপে শুষ্ক করিলে ইহার ভিতর যে সকল উদ্বায়ু দ্রব্য আছে তৎসমুদয় বহিৰ্গত হইয়া যাইবে কিন্তু ইহাতে উদ্ভিজ ও জন্তু পচা সার থাকিলে তাহা ঐ সামান্য উত্তাপে নম্ভ इरेटन ना। এই दूरे नक्ष अर्थाए मात्र जना अ छेषात्र नक्ष नारे-(हें छे मकल এমোনিয়া ও লবণের পরিমাণ ভিন্ন ভিন্ন রূপে জाना याहेट পाরিবে না। এই জন্য ইহাদিয়ের পরিমাণ একত্রে ধরিয়া লইতে হইবে। মুচির ভিতর যে শুক্ষ মৃত্তিক। আছে তাহা পোড়াইয়া লাল করিবে এবং যে অবধি ইহার কৃষ্ণবর্ণত্ব না যায় ভদবধি অগ্নিভে রাখিতে হইবে। পরে

আমি হইতে ইহাকে স্থানান্তরিত করিয়া ওজন করিলে যাহা
কিছু কমিয়া যাইবে তাহাই সার এবং উদায়ু বস্তুর পরিমাণ
হইবে, পরে যে সকল পরীক্ষা করিতে হইবে তাহাতে
ছাকনি কাগচের পরিমাণ বাদ দিতে হইবে এই জন্য
গ্রেফিন সাহেবের রুত যে ছাকনী কাগজ আছে তাহাই
এই সকল পরীক্ষায় ব্যবহার করা কর্ত্ত্বা। এই সকল
কাগজ গোলাকার ও ওজনে সকলের পরিমাণ সমান
আছে। যধন ছাকনী কাগজে ছাঁকা দ্রব্য সহিত পোড়াইতে হইবে তখন প্রথমে ঐ কাগজের কিনারণ সকল একক্রিত করিয়া ঐ ছাঁকা দ্রব্য সকল এক মুচিতে ঢালিতে
হইবে এবং অবশিক্ত যাহা কিছু কাগজে লাগিয়া থাকিবে
তাহা ঐ কাগজ সহিত এক চিমটাতে ধরিয়া অগ্নির শিখার
পোড়াইয়া ইহার ভন্ম সকল ঐ মুচিতে রাখিবে।

মৃতিকার জল জাবা অংশ পোড়াইয়া ইহার সার বল্প
নাট করিয়া ওজন করা হইলে যদি ইহার ভিতর বালির
অংশ কিছু মাত্র থাকে তবে ইহাতে হুই চারি ফে টা নাইটিক য়াসিড সংযোগ করিয়া তাহাতে কিঞ্চিৎ জল মিশ্রিত
করিবে। পরে উত্তাপ সংলগ্ন করিলে যদি জাব্য বিহীন
কোন বল্প থাকে তবে তাহা বালির অংশ হইবে সন্দেহ
নাই, পরে ইহাকে ছাকনি কাগজে ছাতিকা পৃথক করা
হইলে অবশিফাংশকে ধৌত করিবে অনন্তর পোড়াইয়া
ইহার কাগজের ভন্মের ওজন গ্রহণ করিবে পরে
অবশিষ্ট যাহা কিছু থাকিবে তাহা তরল অবস্থায় কিয়া শুক্ষ
অবশ্বায় ওজন করিয়া তিন সমান অংশে বিভাগ করিবে।

উক্ত তিন অংশের মধ্যে এক অংশ লইয়া ইহার ভিতর
সলকিউরিক য়াসিড আছে কি না তাহা নিরপণ করিবার
জন্য ইহাতে নাইটেট অফ বেরিটা ওজন করিয়া সংযোগ
করিলে যদি ইহাতে সলফিউরিক য়াসিড থাকে তবে সাদ্
মান্য উত্তাপ সংলগ্ধ করিলে বেরিটা গল্পকের সহিত মিশ্রিড
হইয়াপলি বহির্গত হইবে।এই পলিকে সলফেট অফ বেরিটা
ক:হ, পরে এই জল ছাকনী কাগজে ছাঁকিলে পলি সকল
বাহির হইবে এবং পলি সহিত কাগজ পোড়াইয়া ভন্মের
পরিমাণ বাদ দিলে পলির পরিমাণ নিরপণ হইবে, পরে
ইহাকে .৩৪৩০২ গুণ করিলে সলফিউরিক য়াসিডের পরিমাণ নিরপণ হইবে।

ক্লোরিণ – ছাকনি কাগজে ছাকিয়া অবশিষ্ট যে জল গাকিবে তাহাতে নাইট্রেট অফ সিলবর অর্থাৎ কাষ্টকির জল সংযুক্ত করিয়া অগ্নিতে ছুই চারি মিনিট সিদ্ধ করিলে যদি ইহাতে ক্লোরিণ থাকে তবে পলি বহির্গত হইবে পরে ঐ পলিকে ছাকিয়া ধেতি করিয়া শুদ্ধ করিবে এবং ছাকনী কাগজ হইতে এক কাচের মুচিতে ঢালিয়া পোড়াইবে পরে ওজন করিয়া কাগজের পরিমাণ বাদ দিলে যাহা অবশিষ্ট থাকিবে তাহাকে .২৪৬৯৫ দারা গুণ করিলে ক্লোরিণের পরিমাণ নিরূপণ হইবে। অকজাইড অফ আইরণ—অবশিষ্ট থে জল থাকিবে তাহাতে নাইট্রেট অফ বেরিটা ও নাইট্রেট অফ সিলবরের অংশ কিছু থাকিতে পারে কিন্ত ইহাদিগকে বাহির করিয়া নিবার জন্য যদি ঐ জলে হাইড্রোক্লোরিক হাটিড ঢালিয়া দেওরা যায় তবে সিলবার পৃথক হইবে

এवर किछिए मलिक देतिक ग्रामिक जालिया मिल (वितिषे) স্থানাস্তরিত হইবে। উক্ত হুই র্যাসিড ঐ জলে মিলিত করিয়া উত্তাপ সংলগ্ন করিলে পালি বহির্গত হইবে এই পালি मकल ছाकिश्रा जल धिंठ कतिशा लहेत श्रेत जनिक যে জল থাকিবে তাহাতে এমোনিয়া সংযোগ করিলে ইহার ভিতর যে নাইট্রিক য়্যাসিড উৎপত্তি হইয়া থাকিবে তাছার অমগুণ সমুদর নফ ছইয়া যাইবে এবং নাইটেট অঞ धरमानिशा छे९ পতি इहेशा गानिशानिम अ गार्शानिशाद পলি বহির্গত হইতে নিবারণ করিবে। পরে যদি ঐ জল অধিক পরিমাণে এমোনিয়া ঢালিয়া দেওয়া যায় তবে অক-জাইড অফ আইরণ ও এলুমিনার পালি বহির্গত হইবে। উক্ত পলি ছাকনি কাগজে ছাকিয়া কাচ পাত্রে সংস্থাপন করিবে এবং যাহাতে ইহার মধ্যে বায়ু প্রবেশ করিতেনা পারে তজ্জনা অন্য একখণ্ড কাচের দারা তৎক্ষণাৎ আরত করিয়া রাখিবে পরে ওজন করিয়া মিউরিয়েটিক য়্যাসিড দারা কাগজ হইতে এ পলি দ্রুব করিয়া অন্য পাত্রে রাখিবে এবং ইহাদিগের ছাকনি কাগজ জল মিশ্রিত য়াপিড দারা ধৌত করিয়া ঐ পাত্তে ঢালিয়া রাখিবে পরে এ মিউরিয়েটিক ক্লামিড মিশ্রিত জলে কঠিছ পোটাশ मश्युक्त कतित्व व्यधिक পोिडोरमद द्वारा अध्याना जाना পরে ইহাকে ছাকিয়া ধেতি করিবে অনন্তর অগ্নাতাপে শুষ্ক করিয়া ওজন করিবে।

অকজাইড অফ আইরণ ছাকিয়া অবশিষ্ট যে জল

था किरव তাহাতে হাইডে । ক্লোকে বিক ব্যাসিড ঢালিয়া ইহার অস্ত্রনাশক গুণ সমুদ্য নফ্ট করি:ব। তৎপরে কার্কনেট অফ এমোনিয়ার জল ইহাতে ঢালিয়া দিলে এলুমিনার পলি বহিৰ্গত হইবে কিন্তু এই পলিতে পোটাশ থাকিতে भारत। এই जना भनि ছाकिया (धोठ कतिरव এवर श्रेनक ইহাতে হাইডোক্লোরিক য়্যাসিড সংযোগ করিলে উহা जित इहेश याहरत जित्र के छाकिन काग्रे क्षिड क्रिश তাহার জল উহাতে সংযুক্ত করিবে পরে ইহাতে কার্বনেট অফ এমোনিয়া সংযুক্ত করিলে এলুমিনার পলি বহির্গত इरेट्न। श्रेट्र इंश क्रांकिय़। धोठ क्रिल विस्क এলুমিনা বহির্গত হইবে। এই এলুমিনা শুষ্ক করিয়া পোড়া-ইলে শ্বেতবর্ণ হইবে এবং ইহাকে ওজন করিয়া ছাকনি কাগজের ভস্মের পরিমাণ বাদে ইহার পরিমাণ জানা যাইতে পারিবে। লাইম অর্থাৎ চুন— যে জল হইতে এলু-মিনা ও অকজাইড অফ আইরণ বহির্গত হইয়াছে। তাহাতে जकरक्राल हे जक अपानिया मश्याभ करितल य शिल वहि-र्गठ इहेर व जाहा जक जिल्ला विकास नाहिय। हेहारक ३२ घणे। উত্তাপিত স্থানে রাখিয়া ছাকনি কাগজে ছাকিয়া খৌত করিয়া শুষ্ক করিবে। পরে অগ্নিতে পোড়াইয়া কাগজের ज्या अ कार्काता ज्या नाहम अहे इहे अजन वाम मिला याहा অবশিষ্ট থাকিতে তাহাকে ৫৬৬৫৭ দিয়া গুণ করিলে চুনের ওজন জানা যাইতে পারিবে।

অকজাইড অফ মাানগোনেসি—অকজেলেট অফ লাইম বাহির করিলে অবশিষ্ট যে জল থাকিবে তাহাতে সল- काइंड अक अभानिया मश्यां क्रिल ए श्रील विदर्शंड करेत्व जारा मलक्छित्ब है अव गान्तातिम रेशांक हाकनि কাগজে ছাকিয়া জলে ধেতি করিবে পরে ইছার আত্র অবস্থায় ইহাতে হাইডোক্লোরিক য়্যাসিড ঢালিয়া ইহাকে কাগজ হইতে পৃথক করিবে এবং কাগজ ধৌত করিয়া জল এমং পরিমাণে দিতে হইবে যাহাতে ঐ য়াসিডের কার্যা नियांत्र इहेरव। यमि ले शिम मिश्रिक अतम मनकि देवरिष श्राह्म अधिक विद्या कर्ष कर्म करिया। এ গন্ধ নিবারণ করিবে এবং গন্ধকের কোন অংশ যদি ইহাতে গাকে তবে তাহা ছাকিয়া পৃথক করিবে। পরে এ পলি মিশ্রিত জল এক কাচের বাটিতে রাখিয়া ইহাতে অধিক পরিমাণে কার্বনেট অব পোটাশের জল মিশ্রিত করিয়া সমুদর শুষ্ক করনান্তর তাহাতে গ্রম জল মিঞ্জিত क्रिल मगूम्य ज्याना वस ज्य रेरेया कार्याम ज्यान-श्तिमि विदर्शं इरेरिव के शिल कि कि उक्त करों इंकिनि কাগজেজমা করিয়া ধৌত করিবে এবং শুক্ক করিবে পরে এক কাঁচের কিন্তা প্লাটিনম মুচিতে রাখিয়া পোড়াইলে অকজাইড অব ম্যানগোনিসি বহির্গত হইবে পরে ইহাকে एक्न करियों . ১००८२ मिया छन करितन देशांव পरियान পाইবে পরীকার জন্য জল মিগ্রিড মৃত্তিকা ভিন অংশে निजाग करा इहेशां जिल छाइने र माधा क्षथम जाश्म इहेर छ করেক উপাদান বাহির করা ছইয়াছে তাহা সংগ্রহ করিয়া এক্শে শ্রিতীয় অংশ হইতে আর কএক উপাদান वाहित्र कवित् इहेर्व।

ম্যাগনেসিয়া ও অন্যান্য এলকেলাই অর্থাৎ অন্তর্নাশক দ্রব্য সকল ক্লোরাইড হইয়া থাকিলে অতি সহজে পৃথক করা বাইতে পারে যদি এই পরীক্ষার্থ জলে দ্রোবক থাকে তবে ইহাকে বিভিন্ন করিবার জন্য ক্লোরাইড অব বেরিয়ম এমৎ পরিমাণে দিতে হইবে যাহাতে কেবল সমুদ্য দ্রাবক বিভিন্ন হইয়া পড়িতে পারে। এই জন্য ক্লোন্রাইড অফ বেরিয়ম জল মিশ্রিত করিয়া অপ্প অপ্প করিয়া উহাতে দিবে যদি অধিক পরিমাণে মিশ্রিত হয় তবে ইহাকে বিভিন্ন করা স্বক্ঠিন হইবে।

ম্যাগনৈসিয়া এবং এলকেলাই ভিন্ন অন্য যে সকল বস্তু থাকিবে তাহাদিগকৈ বিভিন্ন করিবার যে সকল উপায় আমরা পূর্ব্বে প্রকাশ করিয়াছি তাহা অবলম্বন করিয়া উহাদিগকে বিভিন্ন করিতে হইলে এমত সাবধান হইতে হইবে যে ইহারা বিশুদ্ধরূপে ও নিশ্চিত পরিমাণে বিভিন্ন হইতে পারে এবং তাহাতে ম্যাগনেসিয়া ও এলকেলাই-দিগের কোন অংশ নম্ভ হইতে পারে না।

উক্ত উপাদান সকল বিভিন্ন ক্রিবার পরে ঐ জলে কেবল ম্যাগনেসিয়া ও এলকেলাই ক্লোরাইড সকল থা-কিবে। এক্ষণে ঐ জল শুক্ত করিয়া এক মুচিতে রাশিয়া পরে পোড়াইয়া ইহা এমং অপ্প লাল করিবে যে তাহাতে কেবল ইহার উদ্বায়ু বস্তু নষ্ট হইয়া যাইবে এবং ক্লোরাইড সকল এক্ষণে অভি অপ্প জলে গুলিয়া যাইবে। যদি ইহাতে ম্যাগনিসিয়ার কোন অংশ না গুলিয়া যায় তবে ইহাতে হই চারি কোঁটা হাইড্রাক্লোরিক য়াগিসড ঢালিয়া জব করিয়া

দিবে পরে সমুদয় একত্রিত করিবে এই জলে লাল অকজাইড অফ মরকরি মিশ্রিত করিয়া শুষ্ক করিবে পরে ইহাকে পুনশ্ত ধেতি করিবে যে তাহাতে ক্লোরিণ কিছুমাত্র থাকিবে না। এক্ষণে এই জলে মাগিনেসিয়া ও অকজাইড অফ মারকরি আছে এই জল শুষ্ক করিয়া পোড়াইলে ইহার পারার ভাগ তাহা হইতে কাগজের ওজন বাদ দিলে মাাগনেসিয়ার अखन नित्रर्भन इहेर्त। এই প্রকারে ফসফেট অফ मािजा मश्यार्ग मार्गानिमा वर्गाहत क्रिए इहरव डेल कल क्रांत्रोहेड जक अर्गानियम अगर প्रिमार्ग गर्रगंग করিতে হইবে যাহাতে এমোনিয়া সংযোগ করিলে পলি বহির্গত হইবে না। পরে ঐ জলে এমোনিয়া অধিক পরি-মাণে ঢালিয়া নিবেও তাহাতে ফদফেট অব সোডা কিঞ্জিৎ পরিমাণে মিভিতে করিবে। ইহাকে উত্তমরূপে নাড়িতে ও বিলোড়ন করিতে হইবে পরে স্থিত হইলে ফসফেট অব ম্যাগনেশিয়া এবং এমোনিয়ার পালি বহির্গত হইবে এই পলির ভিতর শতকরা ৩৫,৭ পরিমাণে ম্যাগনেসিয়া शंकिट्य।

পোটান এবং সোডা—ম্যাগনেদিয়া বাংগত হইলে যে জল থাকিবে তাহা একণে শুষ্ক করিয়া অগ্নিতে পোড়া-ইলে মারকরির যে কিছু অংশ থাকিবে তৎসমুদয় নইট হইয়া যাইবে এবং এলকেলাইন ক্লোরাইড নকল অধিক ভাগ্নি উত্তাপে কিয়দংশ নই হইয়া যাইতে পারে এই

खना हेशिनगरक अञ्जल (পाए।हेट इहरन। अकरन ले মিত্রিত ক্লোরাইড অব পোটাশিয়ম ও সোডিয়ম ওজন করিতে হইবে। পরে ইহাদিগকে বিভিন্ন করিতে হইলে ইহারা ওজনে যত হইবেক তাহার ৩০,৭৫ পরিমাণ প্লাটিনো বাইক্লোরাইড অব সোডিয়ম সংযুক্ত করিয়া मित्व भित्र मिखिङ खत्वा किश्विष् छल मिल्ल श्वित्रा योहत्व পরে ইহাতে অপ্প উত্তাপ সংলগ্ন করিয়া শুষ্ক করিবে এবং र्थ एक वखराज धनरकां इन जोनिया निर्त मकन वख जव হইয়া যাইবে কেবল প্লাটিনো বাইক্লোরাইড অব পোটা-मिश्रम ज्ञ बहर्तिक ना। श्रात हैशांक छाकिशा ज्वर এলকোহোল দিয়া ধৌত করিয়া ইহাতে অণ্প অগ্নির উত্তাপ দিলে ইহার পরিমাণ আর কমিয়া যাইতে পারিবে না এই বস্তা ওজনে যাহা হইবে তাহাকে .১৯৩০৭ দিয়া গুণ করিলে পোটাদের পরিমাণ নিরূপণ হইতে পারিবে। কিম্বা ৩০৫৩৫ দিয়া গুণ করিলে ক্লোরাইড অব পোটাসিয়মের পরিমাণ নিরূপণ হইবে পোটাসের পলি বহির্গত হইবার পূর্বের্ঘদি সমুদয় ক্লোরাইড দিগের ওজন হইতে ক্লোৱাইড অব পোটাদিয়মের ওজন বাদ দেওয়া যায় তবে সোডার পরিমাণ নিরূপণ হইবে যে ক্লোরাইড অব সোডিয়ম উপস্থিত আছে তাহা .৫৩০০০ দিয়া গুণ করা যায় তবে দোডার পরিমাণ নিরপণ হইবে। পরীকার তৃতীয় অংশ জল হইতে ফসফরিক য়াপিড বাহির করিতে इहेर वह जन वमर পরিমাণে नहेर इहेर य है हो इहेर उ পুলি বাহির হইলে তাহা ওজন করা হইতে পারিবে যদি

পূর্বকার পরীক্ষায় নিরূপণ হইয়া থাকে যে ইহার ভিতর লাহ আছে তবে ইহাতে লোহ মিশ্রিত করিবার আব-শাক নাই। কেবল ইহাতে হুই চারি ফোটা নাইটি ক য়াসিড সংযুক্ত করিয়া অগ্নিতে সিদ্ধ করিলে পূর্বের অক্সিজন মি-ত্রিত লৌহ রক্ষিত হইবে কিন্তু যদি ইহার ভিতর না থাকে তবে ইহাতে এসিটেট অব পরেকজাইড অব আইরণ মিশ্রিত করিয়া অধিক পরিমাণে এমোনিয়া ঢালিয়া দিলে পनि বাহির হইবে এ পনি ধৌত করিয়া এদিটিক য়াসিডে ভিজাইয়া রাখিলে সকল উপাদান দ্রুব হইবে কেবল कमरक छ जार जारेतन जरर जलूमिना छत रहेरत ना जरे ফসফেট দিগকে ধৌত করিয়া শুষ্ক করিবে। পরে পোড়া-ইয়া ওজন করিবে। অনন্তর এই মিশ্রিত ফশফেট দিগকে কষ্টিক পোটাদের জলে ভিজাইয়া রাখিলে ফদকেট অফ এলুমিনা এবং ফশফেট অব আইরণের অধিক অংশ ফস-ফরিক এসিডে দ্রব হইয়া যাইবে পরে জল মিশ্রিত করিয়া ছাঁকিয়া ধৌত করিলে পরেকজাইড অফ আইরণ বহির্গত হইবে কিন্তু এই সকল কার্যের পর ইহার ভিতরে ফসফরিক शामिष थात्क এই जना हैशात्व राहे पुराक्षातिक शामिष ঢালিয়া কাগজ হইতে পৃথক এবং ছাক্নি কাগা 🕸 (धोड করিয়া য়াাসিড হইতে মুক্ত করিবে পরে ঐ য় সিড জলে এমোনিয়া এবং সলকাইড অফ এলুমিনম সংযোগ করিয়া ইহার অন্নত্তণ হইতে রহিত করিলে লোহ সলফিউরেট কিন্তা সলফাইড হইয়া পালি বহিৰ্যত হইবে এক্ষণে ঐ मगुनत छला कर्नकोल मोगोना छेखोर्भ मश्लध क्रिल

সমুদয় সলফিউরেটে তলভাগে দ্বিত হইবে যদি জল সরুজ
না হইয়া হরিদ্রাবর্ণহয় তবে ইহা তলস্থ হইয়াছে যানা যাইতে
পারিবে এক্ষণে ঐ সমুদয় সলফিউরেট এক ছাকনি কাগজে
ঢালিয়া জমা করিবে এবং সলফাইড অব এমোনিয়ার জলে
ধৌত করিয়া পরে সম্পূর্ণ রূপে ধৌত হইলে ঐ আর্দ্র
অবস্থায় ইহাতে হাইড্রোক্লোরিক য়্যাসিড ঢালিয়া কাগজ
হইতে পৃথক করিবে এবং ঐ কাগজকে ধুইয়া সেই জল
দিবে। এক্ষণে ঐ য়াসিড মিশ্রিত জলে উত্তাপা সংলয়্ম
করিয়া সলফিউরেটেড হাইড্রোজেনের গন্ধ নিবারণ করিবে।
পারে ছাঁকিয়া গন্ধককে বিভিন্ন করিবে এবং কাগচকে ধৌত
করিয়া পরিক্ষার করিবে। পরে অবশিষ্ট জলে ছই চারি
ফোটা নাইট্রিক য়্যাসিড সংযোগ করিয়া সিদ্ধ করিলে
লোহ অক্সিজনের সহিত আরও মিশ্রিত হইবে।

এক্ষণে ইহাতে অধিক এমোনিয়া সংযোগ করিলে পরেকজাইড অব আইরণের পালি বিশুদ্ধ অবস্থায় বাহির হইবে। পরে সমুদয় জলে উত্তাপ সংলগ্প করিলে পালি সকল পৃথক হইবে এই পালি সকল ছাকিয়া ধৌত করিবে পরে শুদ্ধ করিয়া পোড়াইলে বায়ুতে বাহির করিয়া গুদ্ধন করিবে এবং কাগজের ভন্ম বাদ দিয়া যাহা থাকে তাহাই পরেকজাইড অব আইরণ হইবে। পোটাসের দ্বায়া যে ফসফেট অফ এলুমিনা দ্রাব্য হইয়াছিল এক্ষণে পরীক্ষার দ্বারা তাহা হইতে এলুমিনার ভাগ নিরপণ করিতে হইবে এই জন্য ইহাতে সিলিকেট অব পোটাসের জল মিশ্রিত করিয়া শিদ্ধ করিলে সিলিকেট অব এলুমিনা পৃথক হইতে

পারে এ জল ছাকিয়া পলি বাহির হইলে ইহাকে ধেতি করিবে পরে উহাকে হাইডোক্লোরিক য়াদিডের সহিত মিশ্রিত করিয়া সাবধান পূর্বাক শুষ্ঠ করিলে শিলিকা मकल सावा विशेष णाकादि পরিবর্ত্তন হইবে। এই শুষ অবশিষ্টাংশ যৎকিঞ্চিৎ হাইডোক্লোরিক য়াসিডের সহিত ভিজাইয়া ক্ষণেককাল স্থিত হইলে ইহার দ্রাব্য অংশ জলে ধেতি করিবে। একণে এলুমিনা ঐ জলদ্রাব্য অংশের ভিতর ফদফরিক এসিড হইতে বিভিন্ন হইয়া থাকে ইহাতে कार्यान जिया अधानिया निल পनि विश्वि इहेरि। अहे পলিকে ধ্যেত করিয়া শুষ্ক করিবে পরে অগ্নিতে পোড়াইয়া उज्जन कतिरवं। এই तर्भ लोश এवং এলুমিনার ওজন যাহা পাওয়া হইল তাহা মিশ্রিত ফদফেট হইতে বাদ দিলে ज्ञविक योश थे। विद्व जोशेर कमकदिक ग्रामिएड अञ्ब इक्ट्रेंग

জল দ্রাব্য অংশের পরিমাণিক পরিক্ষা যে প্রকারে করিতে হইবে তৎসমুদয় সমাপ্ত করিয়া দ্রাব্য বিহীন অংশের পরিক্ষা যে প্রকারে করিতে হইবে তাহার বিষয় এই স্থলে লিখিবার প্রয়োজন অভাব কারণ এই শ্রীক্ষায় উক্ত সকল করিতে হইবে কেবল ভিন্ন প্রকরণ করে।

### माद्रित विषय १

যে বস্তু মৃত্তিকার সহিত মিখিত হইলে মৃত্তিকার উৎ-পাদিকা শক্তি রৃদ্ধি পায় তাহাকে সার বলা যায়। এবং भाज, डेलभाज डे खिन् छछ हे जानि नाना विथ वस्तु विक्र इहेश। সাররপে পরিগণিত হয়, এই জন্য সার নানা প্রকার। ক্রি-কার্য্যে সার ন্যবহারের প্রয়োজন এই যে উদ্ভিজ্ঞের মৃত্তিকার রস পান করিয়া থাকে কিন্তু উহাদের গতিশক্তি না থাকার স্থানান্তর হইতে পানীয় বস্তু সংগ্রহ করিতে অক্ষম তৎ-প্রয়ুক্ত মূলদেশে সার প্রদান করিলে তদাব সহকারে তত্রতা মৃত্তিকার রস র্দ্ধি পাইয়া উদ্ভিজ্জিদিগকে পরিতৃপ্ত করে। সার উদ্ভিজ রুদ্ধির প্রাণান কারণ। যদিও কোন কোন त्रक्षमृत्न गांत ना मित्न ७ छोरा वर्षि इरेट मृष्टे হয় কিন্তু জীত্মকালে তাহাদের বহুসংখ্যক পত্র তলায় পতিত হইয়া বর্যাকালে জলে পচিয়া মৃতিকার সহিত মিশ্রিত হইরা থাকে তাহাতে তথাকার রস রিদ্ধি পায় এবং জল প্রধান সার, তাহা বর্ষাকালে নিরন্তর মূলদেশে সংলগ হওয়াতে তাবদস্ততেই রস যোজিত হয়।

#### জন্তর সার।

জন্তর চর্মা, মাংস ইত্যাদি পচিয়া উত্তম সার হয়।
এতদ্যতিরিক্ত রক্ষ্যুলে রক্ত প্রদান করিলে তাহাও উক্ত
রপ সার হইয়া উঠে। যে হেতু রক্তই চর্ম মাংসের মূল
এই নিমিত্ত চারার পক্ষে সকলেই সমান উপযোগী। অন্তি
শৃদ্ধ, নখ, ইত্যাদিরও উক্তরূপ গুণ আছে।

জন্তর দেহ, মংস্যা প্রভৃতি পচাইয়া সার করিতে হইলে তাহাদিগকে গর্কে ফেলিয়া ত্ররায় জীর্ণ হইবার নিমিত্ত তাহার উপরিভাগে চূণ ছড়াইয়া তহুপরি মৃত্তিকা দিয়া প্রিয়া রাখিবে পরে হুই তিন মাস গত হইলে তাহা তুলিয়া হুর্গন্ধ নিবারণ জন্য পুনর্কার চুণ দিয়া ক্ষেত্রে ছড়া-ইয়া দিবে।

অন্ধি সকল ধূলার ন্যায় অত্যন্ত চূর্ণ করিয়া দিলে প্রথম বংসর বিশেষ উপকার ক হয় কিন্তু দ্বিতীয় বংসর তাদৃশ হয় না একারণ উহাদিগকে তাদৃশ চূর্ণ না করিয়া প্রস্তরোপরি রাখিয়া লোহ নির্মিত কঠিন বস্তর আঘাত দ্বারা কিছু স্থূল রাখিয়া ওঁড়া করিবে, পরে তাহা এক বংসর ক্ষেত্র মধ্যে ছড়াইলে বহুকাল সমান উপকার হইবে। এই সার অন্যান্য শস্যাপেক্ষা ইক্ষু এবং গেঁড়ু হইতে যে সকল উদ্ভিক্ত উৎপান হয় তাহাদের পক্ষে অভান্ত উপযোগী। ইহার বিশেষ গুণ এই যে ইহার সংসর্গে মৃত্তিকা অত্যন্ত আলগা থাকে। যে ক্ষেত্রের মৃত্তিকা সভাবতঃ আল্গা ও উত্তাপিত তাহার পক্ষে ইহা মহোপকারক। কিন্তু যে ক্ষেত্রে চিক্কণ মৃত্তিকার অংশ অধিক তাহাতে অপেক্ষাক্রত অধিক দিতে হইবে তাহা না দিলে অধিক উপকার দৃষ্ট হয় হা। বালুকাময় ক্ষেত্রে এক বংসর এই সার ক্রমাগত ছড়াইলে ত্নই তিন বংসর উত্তম শস্য হইতে পারে।

শ্রের ওঁড়া এবং খড়মের বৌল কুঁদিলে যে সকল অবশিষ্ঠ ওঁড়া থাকে তাহা অস্থি গুড়া অপেকা উৎক্লঃ, তাহার ব্যবহার করিতে হইলে অগ্রো তাহাকে গর্ভ মধ্যে পূর্বোক্তরূপ পঢ়াইতে হইবে।

অস্থি ভন্ম ও সিদ্ধা করিয়া দার করিলে তাহার মেহ দ্রব্য এবং অন্যান্য সারাংশ ন্ট হওয়াতে তাদৃশ উপ-কার দর্শে না, এই নিমিত্ত তাহা না করিয়া গুড়া করাই সর্বতোভাবে বিধেয়।

মৃত দেহ, অস্থি ইত্যাদি সংস্পর্শ করা হিন্দু শাস্ত্র বিরুদ্ধ এই সকল ব্যবহার এদেশে প্রচলিত নাই, কিন্তু ক্ষবিকার্য্যের উন্নতি বিধানে ক্ষকগণের ইহার ব্যবহার করা কর্ত্ব্য।

### উদ্ভিজ্জ সার।

রক্ষের পত্র, শাখা প্রভৃতি গর্ত্ত মধ্যে পচাইলে গোম-রের মত তেজস্বর সার হয় ক্ষিকার্য্যে তাহার ব্যবহার অত্যন্ত আবশ্যক।

মৃত্তিকার অনেক অধোডাগে যে বোধ মৃত্তিকা আছে তাহাও চারার পক্ষে অশেষ উপকারক। ঐ মৃত্তিকা রক্ষের পত্র, শাখা, প্রকাণ্ড, ইত্যাদি পিচিয়া উৎপাদিত হয়, ইহার বিষয় ভূতত্ত বিদ্যায় বিশেষ বর্ণিত আছে।

পুষ্করিণী খনন করিয়া উদ্যান করিতে হইলে অগ্রে ঐ মৃত্তিকা সমভাবে চারাইয়া পশ্চাৎ চারা রোপণ করিবে ঐ মৃত্তিকার সংসর্গে উদ্যান ভূমির উৎপাদিকা শক্তি সাতিশয় রিদ্ধি পাইয়া চারাদিগকে অনায়াদে পরিপুষ্ট করে। অন্যান্য সার অপেক্ষা ইহার বিশেষ গুণ এই যে চারার মূলদেশে পচা পত্র গোঁময় প্রভৃতি সার প্রদান করিলে উই প্রভৃতি কয়েক প্রকার কীট উৎপন্ন হইয়া চারার অভিনব কোমল শিকড় সকল কাটিরা ফেলে, তাহাতে উন্যান সমূলে বিনফ হইবার বিলক্ষণ সন্তাবনা। কিন্তু বোধ মৃত্তিকা দিলে তাহার কোন শক্ষা থাকে না। এই নিমিত্ত গামলায় বীজ বপন করিতে হইলে অন্য সার না দিয়া বোধ মৃত্তিকা চিক্রণ মৃত্তিকা এবং বালি সমান অংশে মিপ্রিত করিয়া তাহাতে বীজ বপন করিবে। যখন এ মৃত্তিকা উদ্যানস্থ অন্য চারার মূলে দিতে হইবে তখন তাহাকে উত্তম গুড়া করিয়া দিবে।

উদ্ভিক্ত সারের মধ্যে খোল সর্বাপেকা উৎক্রয়। ক্লম্বল খোল প্রদান করিলে তাহাতে তৈল থাকায় তত্রত্য মৃতিকার উৎপাদিকা শক্তি অতিশর উত্তেজিত হয়, বিশেবতঃ নাম্থ্যরিক চারা খোল সম্পর্কে তরায় করি পার। ক্রিকার্য্যে খোল ব্যবহার করিতে হইলে প্রথমতঃ ইহাকে শুক করিয়া ওড়া করিতে হইলে প্রথমতঃ ইহাকে শুক করিয়া ওড়া করিতে হইবে। পরে যে ক্লেত্রে চাস দেওয়া হইয়াছে তাহাতে ঐ ওড়া ছড়াইয়া তাহার উপরিভাগে পুনর্বার লাজল দারা যাহাতে খোল চাপা মাত্র পড়ে, এইয়প অপা চাম দিবে। ঐ খোলের ওড়া মুটের শুড়ার সহিত মিশ্রিত করিয়া ছড়াইলে বিশ্রম উপকার দর্শে। অনন্তর র্ফির দারা বা জল সেচন করিয়া ঐ মৃতিকা ভিজাইয়া রাখিবে। কিছু দিন তদবস্থায় রাখিয়া যখন চারা রোপণ করিতে হইবে তখন পুনর্বার কিছু খোল ছড়াইতে হইবে, পরে চারা সকল বাড়িলে পুনর্বার কিছু খোল দিতে হইবে। এইয়প তিন বার খোল দিলে

মূল দারা ভূমির উৎপাদিকা শক্তির আধিক্য দেখিতে পাওয়া যাইবে। কিন্তু খোলের অংশ অধিক হইলে চারা নফ হইবার সম্ভাবনা, এই নিমিত্ত বিহা প্রতি এক মণ বা আবশ্যক হইলে হুই মণের অধিক কখন দিবে না।

মানিনার খোল তিল বা সর্বপ খোলের তুল্য। তেরা-ভার খোল সর্ব্বাপেক্ষা উত্তম। উহার রস আকর্ষণ শক্তি অপেক্ষারত অধিক থাকার উদ্ভিজ্ঞের মূল দেশে অধিক রস যোগাইয়া তরার পরিবর্দ্ধিত করে এবং উহার সংসর্গে রক্ষের মূল সকল অপেক্ষারত বড় হইরা থাকে। দোষের মধ্যে আস্বাদের বৈলক্ষণ্য হয়। আলু ক্ষেত্রে উক্ত খোল দিলে আলু সকল আকারে বড় এবং শ্বেত্বর্গ হয়, কিন্তু তাহার তাদৃশ আ্বাদ থাকে না।

#### शाकु माद।

ধাতু সারের মধ্যে জল প্রধান বলিয়া গণ্য করিতে ছইবে। কারণ জল ব্যতীত কবি কার্য্য কোনরূপেই সম্পন্ন ছইতে পারে না। জলের বিষয় পূর্কে সবিস্তার বর্ণন করি য়াছি তরিমিত্ত তদ্বনি কান্ত না ছইয়া যৎ কিঞ্চিৎ প্রকাশ করে। রফির জল শিশীর ও নদীর জল এই তিন প্রকার বিশেষ সারের গুণ প্রকাশ করে। রফির জলে ও শিশীরে যে এমোনিয়া আছে এই জন্য ইহায় এমোনিয়ার গুণ সহকারে সারের কার্য্য করে তরিমিত্ত রফি পজিলে উদ্ভিদ সকল রিদিশীল হর কিন্তু শীতের প্রতাবে রফি পতন হয় না। কেবল শিশীরের জলে উদ্ভিদসকল জীবিত থাকে। পরে গ্রীম্ব আসিয়া উপস্থিত হইলে রফি ও শিশীর অভাবে

देखिन সকল गृতवर इश शूर्वकोल धोना स्मज সকল ननीत जल भाविक इहेक जवर जे जल्ब भिन्न भेषारक मृक्किव উষ্যোশক্তি এমৎ প্রবল হইত যে তাহাতে প্রতি বৎসর সম পরিমাণে শস্য উৎপত্তি হইতে এবং সার দিবার প্রথা প্চলিত ছিল না। খাতু সকল নানা প্রকার কিন্তু এদেশে সমগ্ররপে ত্রপ্রপা হওয়ায় তাবতের নাম উল্লেখ मा कित्रा (कवल हूर्णत विवय लिबिए ध्रख इडेलोम, শীত প্রধান দেশে মৃত্তিকার কার্চিন্য হেতু উৎপাদিকা শক্তির রিদ্ধি হয় না। তাহা বাড়াইবার জন্য দেই দেশে চুণ ব্যবহার করা আবশ্যক। বঙ্গরাজো মৃত্তিকায় বালির তাংশ অধিক থাকায় চুণ অব্যবহার্য্য, নহে কিন্তু যে ক্ষেত্র বহু কাল পতিত থাকে তাহাতে কৃষিকাৰ্য্য সম্পাদন জন্য অত্যে लाजन मारा कर्यन करिया गुडन हुन इड़ारेया नित्व शत्य তত্পরি ভাগে পুনর্কার এমত চাস দিয়া মই দারা মৃতিকা চারাইবৈ যাহাতে চুণ মৃত্তিকার অধিক নিম্পত না হয় এবং এক বংসর তদবস্থায় রাখিলে চুণের প্রভাবে ঘাস প্রভৃতি অকর্মণা উদ্ভিক্ত সকল বিনষ্ট হইয়া যাইবে পরে ভান্য দার দিয়া কবিকার্যা করিলে ক্রমাগত ২৩ বৎসর नमान नमा जगाहिए भारत। हुत्वत विस्नार अन धरे य मुखिका एक इरेल वायु इरेट ब्रमाकर्यन का बया मुखिकारक সরস করে এবং মৃত্তিকা নিরন্তর জল সংসর্গে ছবিত হইলে রস আকর্ষণ পূর্ব্যক তাবৎ দোধ বিনষ্ট করে।

বিঘা প্রতি কত পরিমাণে চুণ দিতে ছইবে তাহা ভূমির দোষ গুণ বিবেচনা করিয়া ধার্য্য করিবে।

### মিশ্রিত সার।

জন্ত সার, উদ্ভিদ্ধ সার কিয়া ধাতু সার একত্রিত হইলে মিশ্রিত সার বলা যায়। জন্তনিশের বিষ্ঠাই স্বভাবতঃ মিশ্রিত সার। তদ্যতীত মনুযোরা হুই তিন প্রকার সার একত্রিত করিরা মিগ্রিত সার করিয়া থাকে। এদেশে গো, গদ ভ, ঘোটক, মেষ, শ্কর এবং কপোত প্রভৃতি কতক-গুলি জন্তুর বিষ্ঠা মিশ্রিত সারের মধ্যে প্রধানরূপে প্রচলিত আছে। ইহাদের মধ্যে গোময় অতি প্রসিদ্ধ। কিন্ত প্রথমাবস্থায় উহার মধ্যে অনেক অপরিপক বস্তুর অংশ थाकात्र न। পচाইलে कृषिकार्यंत डेशयात्री इहेट शास्त्र ना, একারণ প্রথমতঃ এক গর্ভ খনন করিয়া তাহার অধোভাগ इक्किनि द्वारा वाक्षिश अकिक अल्किक किन्न राथिए পরে ঐ গর্ত্ত গোময়ে পূর্ণ করিয়া কিছু দিন রাখিলে যে সকল রস ক্রমশঃ অপফত হইয়া নিম্ন ভাগে একত্রিত হইবে তাহা তুলিয়া ক্ষেত্র মধ্যে ছড়াইবে। গোময় শুফ হইলে किया जा जा ज প जिल्ला (जिल्ला की महा, अहे निमिल (य श्रांत (दों ज लांशिए नांशिए त अगड खांत दुन कतिर्द, अवश मर्था मर्था जङ्गिति शोगूज जोलिशो निर्व।

সাতিশয় পচিবার সন্তাবনা ইইলে দিন থাকিতে তুলিয়া জলে গুলিয়া ক্ষেত্র মধ্যে ছড়াইলে বিশেষ উপকার জন্মায়। বিশেষতঃ গামলায় যে সকল চারা থাকে তাহাদিগের মুলে ঐ সারদিলে ঐ সকল চারা আশু বর্দ্ধন শীল হইয়া উঠে।

(भाग्रज श्रोलित एए। जयर यथांत्र भाग्रानि श्रोह

তথাকার মৃত্তিকা মিশ্রিত করিয়া ক্ষেত্রে ছড়াইলে ভূমির অত্যন্ত উৎপাদিকা শক্তি জন্মাইয়া চারা সকলকে বরায় পরিপুষ্ট করে।

এই সার ক্ষেত্রে দিবার পূর্বের্ব লাজল দ্বারা ভূমি কর্ষণ করিয়া মই দ্বারা তাহার মৃত্তিকা সমানরপো চারাইবে। উন্নতানত থাকিলে এই সার তরলতা প্রযুক্ত উন্নত স্থান হইতে নিম্ন স্থানে আদিয়া একত্রিত হইবার সম্ভাবনা। পরে বোমা দ্বারা ছড়াইয়া বিদা টানিয়া সর্বত্র সমভাবে মৃত্তিকা বিলোড়িত করিবে।

গোসূত্রে অর্দ্বপূর্ণ এক কলস রক্ত, মাংস কিয়া মৎসা দারা পরিপূর্ণ করিয়া তাহার মুখ বন্ধ করিয়া রাখিবে, ইহাতেও এক প্রকার মিশ্রিত সার হইতে পারে। পরে এ৬ মাস গত হইলে মুখ উদ্ঘাটন পূর্বক ঐ সার জলের সহিত গুলিয়া চারার মূলভাগে ঢালিয়া দিবে। এই সার উদ্যান কার্য্যে মহোপকারক।

গোস্তের ন্যার অপর জন্তর প্রস্রাবন্ত শদ্যের প্রতি উপকার জনক, কিন্তু প্রথমাবস্থার ইহার তেজ হঃসহ, চারার দিলে জ্বলিয়া যাইতে পারে। অতএব উহাকে কিছু দিন কল্যে রাধিয়া পচাইবে,পরে তাহার চতুর্ত্ত গ জ্বানের সহিত মিপ্রিত করিয়া ভূমিতে ছড়াইলে যে মৃত্তিকা অভাবতঃ আল্গাতাহার পক্ষে প্রতিক হইবামাত্র মৃত্তিকার অধ্যাতাগে প্রবিক্তি হইবামাত্র মৃত্তিকার অধ্যাতাগে প্রবিক্তি হইবা চারার মূল দেশে সংলগ্ন হওয়ায় চারা সকল অপানকালের মধ্যেই তেজন্দী হইয়া থাকে। যে ক্ষেত্রের মৃত্তিকা

অতি কঠিন তাহার পক্ষে তাদুশ উপকার দর্শে না।

মনুষ্যের বিষ্ঠা অতি চমৎকার সার। ইহা মৃত্তিকায় প্রদান করিলে তত্ত্বস্থ রক্ষ সকল অতি শিঘু রিদ্ধিলি হয়। প্রথম অবস্থায় ইহা অতি অনিষ্টকর বস্তু কিন্তু পচাইয়া মৃত্তিকাস্যাৎ করিলে অতি উত্তম সার হইতে পারে।

धरे **इंट्रिक्स मादित वि**रह यद्कि विश्वर्ग कतिहा। धक्कर्ण . কোন সময়ে ও কি প্রকারে উহাদের ব্যবহার করিতে হইবে ডিছিয়ে কিঞ্ছিৎবর্ণন করিতে প্রেত্ত হইলাম। বীজ বর্ণন করিবার পূর্বের লাজল দ্বারা ক্ষেত্র কর্যণ পূর্বেক সার इ एं रेश पूनर्यात लोक्स ७ मरे घोता मृ विका मादित महिं মিশ্রিত করিয়া এমত চাপা দিবে তাহাতে এ সার মৃত্তি-কার অত্যন্ত নিম্নাত না হয় এবং নিতাত উপরি ভাগে না থাকে। যদি তাথিক নিম্পাত হয় তবে চারার মূল আপাততঃ তত হুর যাইতে না পারায় সারের রস আকর্ষণ করিতে অক্ষম হইয়া থাকে। যদিও উপরিভাগে থাকায় इिंग्डिज काल गिलिशे। मृखिकांत जिंग्डित প্রবিষ্ট হইতে পারে কিন্তু অধিক রৃষ্টি হইলে তাহার অধিকাংশই ভাসিয়া यादेवांत्र दिलक्षण मद्यावना। এই मकल विद्युष्टना कतिया যে ক্ষেত্রে সাস্বৎসরিক চারা রোপণ করিতে হইবে তাহাতে চারা রোপণের পুর্বের চাস দিয়া একবার, রোপণ সময়ে একবার এবং চারা বড় হইলে একবার, এই তিন বার সার দিতে হইবে। তদ্বাতীত পূর্ব্বোৎপন্ন চারার দার দিতে হইলে নিতান্ত গোড়ায় না দিয়া তাহার চতুদ্দি কৈ কিয়-দ্ধরে অর্থাৎ মূল হইতে বহির্গত শিকড় সকলের অপ্রভাগ

পার্থ বর্তী হইয়া যে যে স্থানে বিস্তীর্ণ হইয়াছে সেই স্থান সকল খনন করিয়া সার দিতে হইবে।

মৃত্তিকা কোন দোষে দূষিত হইলে অগ্রে পূর্বোক্ত প্রকারে সংশোধন পূর্বাক তাহাতে নার প্রদান করিবে नजुरा मात्र मानित कान कल मुखे इहेर ना। यहमद्रव मधा मृक्तिकां राज निवांत इहे मनग जाइ। वर्षात्र খন্দের জন্য বর্ষার পূর্বের এবং রবিখন্দের জন্য বর্ষার অব-শানে সার নিতে হইবে কিন্তু অন্য সময়ে দিলে তাহা कार्याकत इहेरव ना। मृज्ञिकांत्र मात्र श्रामान कतिल हैहां তৎক্ষণাৎ কার্যাকারি হয় না কিন্তু পরে ইহার উপাদানের (यांगे एक इरेश यथन जलामां वा रश उथन रेशिनिश्त দোব্যাবস্থার মৃতিকা শোষণ করিয়া লয়। যে মৃতিকা আলগা যেমন বালুকাময় ভূমি তাহা অধিক পরিমাণে এ উপাদান সকল টানিয়া লয় কিন্তু কঠিন মৃত্তিকা যেমন এটেল ইহার ভিতর ঐ উপাদান সকল অতি অপে পরি-মাণে প্রবেশ করিতে পারে। এই জন্য উর্বরা শক্তি অতি অপ হইয়া থাকে আর মৃত্তিকা কর্ষণ না করিয়া যদি সার দেওয়া যায় তবে তাহাতে কার্যাকারি হইতে পারেনা কারণ ইহার ভিতর এ সার দ্রব্য যাইয়া প্রবেশ করি : পারে না धरे जना मृजिका कर्रण करिया मात्र नित्न रेश मर्का व বিস্তীর্ণ হইয়া পড়ে এবং পুনশ্ত কর্মণ করিলে মৃত্তিকার मकल পরমাণ্র मহিত দার মিগ্রিত হইয়া যায় কিন্তু রক্ষ वित्नंव मृष्टिका कर्य । कदिवाद डाए शर्य जाइ (य गक्न রক্ষের শিকড় বহুদূর নিমে গামন করে ভাহাদিগার জন্য

ততদূর অবধি কর্ষণ করিয়া সার উপস্থিত করিয়া দিবে যদি সার কেবল মৃত্তিকার উপরি ভাগে থাকে তবে উক্ত চারা-দিগের শিকড় যখন রন্ধি হইয়া ঐ সারময় উপরিভাগের মৃত্তিকা অতিক্রম করিয়া নিম্নগামী ইইবে তখন সারাভাব थ्ययुक्त कथन द्रिक्तिनील इहेर्द ना। (यमन धाना हरकत শিকড় মৃত্তিকার উপরি ভাগের চতুদিগে বেষ্টন করিয়া থাকে ইহাদিগের জন্য অপা কর্যণ ক্রিয়া সার প্রদান ক্রিলে প্রচুর পরিমাণে ধানা উৎপত্তি হইবে কিন্তু কলাই সুটির শিকড় বহুদূর নিয়ে গামন করে এই জন্য অধিক দূর অবধি সার যাইয়া উপস্থিত না হইলে কখনই উৎপত্তি হইবে না যদি ভূমি কোন রক্ষের পক্ষে উক্রো না হয় তবে ইহার শিকড় কতদূর অবধি গামন করেও সারময় মৃত্তিকা ইহার কোন স্থানে আছে তাহা নিরপণ করিলে কি কারণ প্রযুক্ত এ ভূমি অনোকার। হইয়াছে তাহা ধার্যা হইবে। বিক্ষাপ্রতি সার কত পরিমাণে দিতে হইবে তাহা নিশ্চয় করা যাইতে পারে না যদি সার অপা কিমা রাশিকত দেওয়া यांग्र ज्र विश्व श्रे श्रे श्रेकार्त कार्याकान्नि इहेरवना। किन्छ छे श्रयुक्त श्रियां । श्रीहेल छे ९ क्रिक्ष फ म न जिन् । इहेर व धहे উপযুক্ত পরিমাণ আমরা কথায় বলিতে পারি না কিন্ত কার্য্যকালে বুঝিতে পারি। মৃত্তিকায় সার দিবার প্রোজন এই যে ইহার যে উপাদানের ভাগ অতি অপ আছে তাহাই মৃত্তিকায় প্রদান করিলে সারের কার্য্য অবশ্য করিবে কিন্তু যে উপাদানের ভাগ অধিক পরিমাণে আছে তাহা थमान कतिल कान कार्या मर्भित ना यमि मृखिकांत्र পোটাশের ভাগ অপে থাকে ও চুনের ভাগ অধিক থাকে তবে এ মৃত্তিকায় চুন প্রদান করিলে কখনই উকরে। হইবেনা কিন্তু সামান্যরূপে পোটাশ দিলে তাহাতে প্রচুর পরিমাণে শ্যা উৎপন্ন হইবে।

### চারা উৎপত্তির বিষয়।

খতু পরিবর্তনে জল, বায়ু এবং উত্তাপ এই কয়েক বস্তুর কখন রুদ্ধি কখন ছাল ছইরা থাকে। তদনুযারী উদ্ভি-(क्रिंद्र) खीश खीश खलावानुगात डेशयुक मगग्र शाहरलह উৎপন্ন इहेर्ड भारत। याङ्चि जिथिक छल এবং বামু मङा করিতে পারে তাহার। বর্ধাকালে ভাষায়। এবং যাহার। अधिक জল लाशिएल পতিয়া যায় ভাছার। भोडकाएल উৎ-भन्न इरेश थाति, এर जना क्रिकार्या हरे अकात। किन्छ णिडिदिङ हरेल क्रिकार्शित जनभा वाघां हरेड भारत, একারণ তাহাদিগের কি পরিমাণে এবং কি প্রকারে বাব-ছার করিলে পর্যাপ্ত হইতে পারে তাহা পুর্কে কহিয়াছি; একণে উদ্ভিজনিগের জীবনোপযোগী ক্রিয়ার সহিত উহাদিগের কি मशक, তদিবগ লিখিতে **প্র হইলাম।** এই সকল বাহা বস্তুর সহিত উদ্ভিদ্দিগের হঙাবতঃ এমং প্রিরতর সম্বন্ধ আংছে যে তদ্বাতিরেকে উদ্ভিক্তের কখন উৎপन्न এवर इक्ति প্राथ इंडेएड शादि न।। यि छन, नाग्न हेडाफिन माथा कान এक नम्नत जार्जा थारक उत्त होती कनां छेर्भन इहेरनक नां; यथा भीतम এनर छेखां भिड

ভূমিতে বীজ বপন করিলে তাহা কখন অঙ্কুরিভ হইবে না। কোন কোন বীজ জলেতে ভিজাইয়া রাখিলে অঙ্কুরিভ হয়। কিন্তু পরে তাহাতে বায়ু এবং উত্তাপ সংলগ্ন না হইলে ঐ अकूत अवनारे मित्रियां नक्षे रहेशा यात्र। वात्रू हीन शास्त বীজ বপন করিয়া তাহাতে উপযুক্ত উত্তাপ এবং জল দেওয়ায় যদিও অকুরিত হয় তথাপি কখন তাহা হইতে ठांत्रा छेर्शन इरेटव ना। नियाम श्रयाम कियात बाता বায়ুর কিয়দংশ উদ্ভিজ্জদিগের অভ্যন্তরে থাকিয়া উছা-দিগকে বর্দ্ধিত করে, কিন্তু বীজের ভিতর বারুর গমনাগম-নের পথ জল ব্যতীত কি প্রকারে হইতে পারে কারণ সকল বীজের আচ্ছাদন আছে তাহা কাহারও কঠিন, কাহারও কোমল, কাহারও পুরু কাহারও বা পাতলা কিন্তু জল বীজের ভিতর প্রবিষ্ট হইয়া তাহাকে স্ফীত করিয়া ঐ আজ্বাদনকে ফাটাইলে তদ্বারা বায় তাহাতে প্রবেশ করে এবং বীজের অন্য ত্কের মধ্যে যে বায় মুদিত থাকে তাহা একণে উত্তাপ সংলগ্ন ছওয়াতে পাতলা হইয়া কোমল মুক্দিগকে বর্দ্ধিত করে, তাহাতে এমত এক উত্তেজিকা শক্তির আবিভাব হয় যে তাহা উদ্ভিজ্ঞদিগের যাবজ্জীবন शांक अर्थाए উদ্ভিজের বিনাশ না হইলে তাহার বিনাশ হয় না 1

যদি ক্ষেত্র মধ্যে বীজ বপন করিতে হয় তবে স্বভাবের যত সাহাযা পাওরা ঘাইতে পারে তাহার উপর নির্ভর করা আবশ্যক, কারণ এই রহদ্যাপার মনুষ্যের সাহায্যে কিছুই সম্পন্ন হইতে পারে না। কিন্তু রুষক বীজ বপন করিবার পূর্বে লাজল ও মই দারা ক্ষেত্রকে এমত সমান করিবে যাহাতে কোন উন্নতাবনত ভূমিতে বীজ বপন করিলে তাহা বর্ষার জল প্রবাহে উক্ত স্থান হইতে ভাসিয়া আসিয়া নিম্ন স্থানে একত্রিত না হয়, তাহা হইলে এ বীজ অধিক জলে অঙ্কুরিত না হইয়া নফ হইতে পারে। যদি বর্ষার ক্ষমল হয়, তবে বর্ষার পূর্বে অর্থাৎ বৈশাধ বা জ্যৈষ্ঠমানে রফি পাত হইলে ভূমিতে চাস দিয়া বীজ বপন করিবে, অধিক বর্ষার সময়ে উহা কখন স্থবিধা মত হইতে পারে না।

রবি ফদল হইলে আধিন বা কার্ত্তিক মাদে মৃত্তিকা সরস থাকিতে থাকিতে বীজ বপন করিবেক নতুবা মৃত্তিকা নীরসা হইলে জলদানে বহুবার ও পরিশ্রম হইতে পারে। বিদেশীর বীজসকলকে গামলার বপন না করিলে কখন উত্তমরপ উৎপন্ন হইতে পারে না, এই জন্য পূর্বের যেরপা কহিরাছি দেইরপা একটা গামলার চিক্রণ মৃত্তিকা এবং তংপরিমাণে কিরদংশ বালি ও পচা পত্রের সার এই তিন বস্তু একর মিথিত করিবেক। যদি বীজ অধিক সরস রাখিবার জন্য চিক্রণের অংশ অধিক দিবে। বড় গামলা হইলে প্রতিকা গামলার উর্দ্ধু সংখ্যার কুড়িটি বীজ পূতিবে অধিক প্রতিলে ঘন হইরা চারা সকল বিনফ্ট হইতে পারে। যদি বীজ অত্যন্ত ক্ষুদ্র ও কোমল হয় যথা পুন্ শিয়ানা রিজিয়ার এক প্রকার রক্ষ চূড়া কুলের গাছের। বীজ, তাহা হইলে বালির সহিত দিশ্রত করিয়া বপন করিবে তাহাতে বীজ

সকল এমত বিভিন্ন হইয়া থাকে যে চারা হইলে চতুদি কৈ
সমান অবকাশ থাকায় পরস্পার সংলগ্ন হইতে পারে না।
অবশেষে ছায়ায় রাখিয়া অতি ফ্ল্ম জলধারা বাহিক
বোমা দারা প্রতি দিন সন্ধার সময়ে জল দিবে। জল
ধারা প্রবল হইলে ঐ জল যে দিকে গড়াইয়া যাইবে সেই
দিকে সকল বীজ যাইয়া একত্র জমা হইবে তাহা হইলে
সুশুগ্রলতারপে চারা উৎপন্ন হইতে পারে না।

মৃত্তিকার কত নিম্নে বীজ পুঁতিতে হইবে তাহা বীজের পরিমাণানুসারে বিবেচনা করিতে হইবে। যদি বীজ অতি ক্ষুদ্র হয় তবে মৃত্তিকা পূর্ণ গামলার উপরে তাহা ছড়াইয়া তাহাতে কিঞ্জাত মৃত্তিকার আচ্ছাদন দিবে, किया टेमेवाल प्रांत्र। छाकिया दाथित। इस्प्रोक स्रेल মৃতিকার এমত নিম্নে পুঁতিতে হইবে যে তাহা অনায়ানে অন্ধকার এবং রস পাইতে পারে। বিদেশীয় বীজ এদেশে রোপণ করিয়া তাহাতে উত্তাপ লাগাইতে হইলে অত্যে দেই বীজের স্বভাব এবং তাহার আদিম জন্ম স্থানের উত্তাপ কত এই উভয় বিবেচনা করিতে হইবে। কোন वीक्त जल्म कांन वीक्त अधिक छेखांम आवमाक करत, তাহা ক্ষক আপন বহুদর্শন দ্বারা নিরূপণ করিবে। যথা, তরমুজের বীজে অধিক উত্তাপ আবশ্যক। এই জন্য তাহা গ্রীষ্মের প্রারম্ভে বপন করিতে হয়। কিন্তু বৈদেশিক বীজ হইলে এদেশীয় তিন কালের মধ্যে কোন কালের উত্তাপে বোপণ করা কর্ত্ব্য তাহা বিশেষরপে জ্ঞাত হইয়া সেই কালে রোপণ করিবে।

যেরপ উন্তাপ সংলগ্ধ করাইবার বিষয় লিখিলাম তদমূরূপ উন্তিজ্জনিগের স্বভাবারুসারে জল দিবার বিষয়
বিবেচনা করা কর্ত্তব্য; যদি অপরিমিত জল দেওরা যায়
তবে তাহাতে বীজ অরুরিত না হইয়া বরং নফ হইবার
সন্তাবনা, কারণ অধিক জল বীজ মধ্যে প্রবেশ করিয়া পরিপক না হইয়া তাহাদিগকে পচাইতে পারে। এই জন্য
মৃত্তিকাতে যে পরিমাণে জল ধারণ করিতে পারে সেই পরিমাণে জল দিবে। পূর্কে বলিয়াছি যে, চিকণ মৃত্তিকা পচা
পাতার সার এবং বালি এই তিম বস্তু মিশ্রিত করিয়া
তাহাতে বীজ পুঁতিতে হইবে। ইহার তাৎপর্য এই যে,
বালি এবং পচা পাতার সারের সহিত চিক্কণ মৃত্তিকা
উত্তমরূপে মিশ্রিত হইলে এমত আলগা হয় যে তাহাতে
জল পড়িলে লীত্র অধােগত হইয়া যায় ও কেবল
কিঞ্চিমাত্র তাহাকে ভিজাইয়া রাখিবার জন্য বন্ধ হইয়া
থাকে।

পুরাতন তেজহীন বীজ হইলে তাহা যত জল সহা করিতে পারে এমত জল দিবে, অধিক জল দিলে তাহা ৰীজের ভিতর প্রবেশ করিয়া পরিপাকাভাব প্রযুক্ত বিনষ্ট করিতে পারে, কিন্তু ঐ বীজ অঙ্কুরিত হইলে জলর পরি-মাণ অপ্প করা কর্ত্তবা। কিন্তা উত্তাপিত ভূমিতে বপন করিয়া কিছুদিন জল না দিয়া কেবল মৃত্তিকার রসের উপর নির্ভর করিতে হইবে। পরে আবশ্যক মতে কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ জল দিবে। এইরূপে উহাদিগের ভিতরে অপ্পই রস প্রবেশ করিলে পরিপাকানন্তর ক্রমে ক্রমে বীজের সর্বাংশ ক্ষীত হইয়া অহুরিত হইতে পারে, তৎপরে অধিক জল দিলেও হানি হইতে পারিবে না।

বীজ শীজ অঙ্কুরিত করিবার জন্য ইহাদিগকে সিদ্ধ করিয়া প্রতিবার ব্যবস্থা এই দেশে এবং অন্যান্য দেশে প্রচলিত আছে। কিন্তু ইহা সকল বীজের প্রতি কি প্রকারে ব্যবহার করা যায়। কারণ যাবতীয় বীজ সিদ্ধ করিয়া প্রতিলে অধিক উত্তাপে নফ্ট হইবার বিলক্ষণ সন্তাবনা। তবে তরমুজ বীজ প্রভৃতি যাহাদিগের আচ্ছাদন অর্থাৎ উপরিভাগের ত্বক অতি কঠিন, তাহাদিগের পক্ষে প্র ব্যবস্থা উপকারক। কেন না তাহা হইলে প্র আচ্ছাদন শীজ ফাটিয়া যায় এবং অঞ্কুর অনায়াসে বহির্গত হয়।

ইউরোপীয় উদ্ভিজ্ঞবৈতার। কহিরাছেন যে, কোন খার দ্রব্য জলে ওলিয়া তাহাতে সকল প্রকার পুরাতন বীজ্ঞ এবং পালঙশাকের বীজ ভিজাইয়া রাখিলে শীল্প অঙ্কুরিত হইতে পারে। এই জন্য চূপের জলে বীজ ভিজা-ইয়া রাখিলে কিমা পূর্ব্বে জলে ভিজাইয়া পরে ঘুঁটের ছাই মাখাইলে ঘরায় অঙ্কুর নির্গত হইবে। যদি বীজ অত্যন্ত পুরাতন হয়, তবে তাহাতে বলাত জড়াইয়া অকজেলিক আসিডে অর্থাৎ কামরাস্থার অসরসে ভিজাইয়া রাখিলে আঙ্কুর নির্গত হইতে পারে।

#### भाशा कलग।

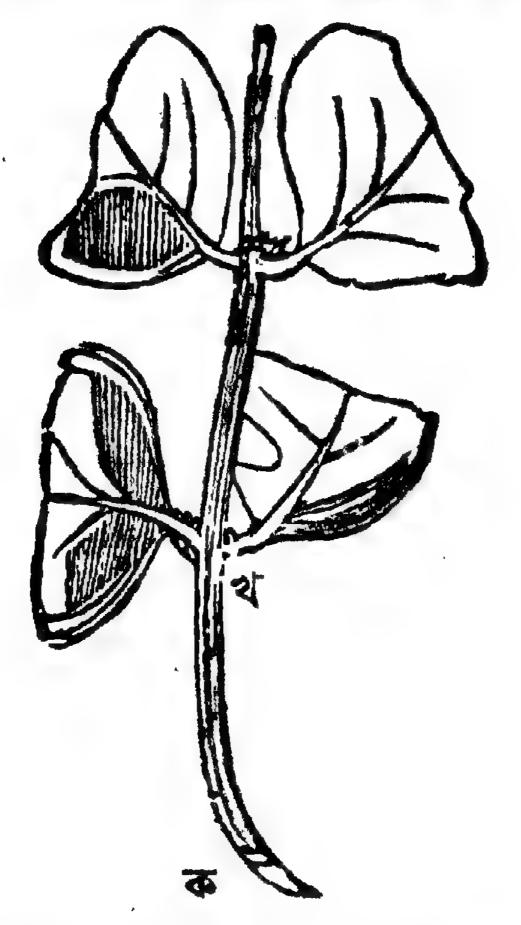
স্বাভাবিক চারার উৎপত্তি বিষয়ে স্বভাবসিদ্ধ ছুই প্রকার উপায় আছে। যথা, বীজ এবং শাখা। বীজের বিষয় পূর্বের কহিয়াছি। কোন কোন রক্ষের শাখা ভূমে পতিত হইলে চারা উৎপন্ন হয়। বীজেশৎপন্ন চারার करनत व्यास्तित व्यानक दिनक्षण इरेड शीरत। এপ্রয়ুক্ত কৌশল দারা শাখা হইতে চারা উৎপন্ন করিলে ফলের 'जाम्बार्मत रिवनक्षना इश्रमा। यमि दीखित होता ध्वरम হয়, তথাপি চারি বৎসরের চারার মন্তক ছেদন করিয়া দেই গুড়িতে তৎসজাতীয় গাছের এক বয়জাত শাখা আনিয়া জড়িয়া দিলে এ ও ডির রস প্রাপ্ত হইয়া অবশ্যই ध्ययम इहेर्त। এই জना উদ্যানকার্য্যে নিম লিখিত রূপে চারা উৎপন্ন করা কর্তব্য। কিন্তু সকল উদ্ভিজ্জেরই যে এই রপে চারা উৎপন্ন হইতে পারে এমত নহে, কোন কোন উদ্ভিক্তের শাখা কাটিয়া পুতিলে চারা ছইতে পারে তাহা নিরূপণ করিবার কোন উপায় নাই, কেবল পরীক্ষা দ্বারা নিরূপণ করিতে হইবে।

শাখা কাটিয়া তদ্বাবা বে কলম হয়, তাহ কৈ শাখা কলম বলা যায়। তাহা করিতে হইলে জেল্লে এমত এক কৌশল দারা জল, বায়ু, উত্তাপ এবং মৃত্তিকা এই কএক বস্তুর ব্যবহার করিতে হইবে যে ভদ্বারা এ শাখা সকল শুক্ত হইতে অথবা পচিয়া যাইতে না পারে; প্রথমতঃ দির্ঘে বিংশতি হন্ত প্রশন্ত হুই হন্ত এবং উদ্ধে হুই হন্ত এক

ইফক নির্মিত চেকি প্রস্তুত করিয়া তাহার ভিতরের কতক অংশ ঝামা দিয়া পূর্ণ করিবে এবং তাহার উপরিভাগে কিঞ্চিৎ চিক্কণ মৃত্তিকা দিয়া তহুপরি সমুদায় বালৈতে পূর্ণ করিবে। তাহা হইলে তাহাতে জল পড়িলে তাহার অতি অপপ অংশ এ বালিকে ভিজাইয়া রাখিতে পারে এবং অবশিষ্টাংশ শীঘ্র অধোগত হইয়া যায়। তাহার উপরে গাছের শাখা আনিয়া পুতিলে তাহা জলে পচিয়া যাইবার কোন সম্ভাবনা থাকেনা। কিন্তু প্রতিদিবস ইহাতে জল দেওয়া কত্তব্য, নতুবা প্র শাখা সকল শুষ্ক হুইয়া যাইবে। এইরপে শাখা সকল রোপিত হুইলে তাহাদিগের উপরিভাগে এক কাঁচের পাত্র আচ্ছাদন ক-রিয়া দিবে। তাহা দিলে তাহার ভিতর বায়ু ও উত্তাপ मर्किन ममजात्व थाकित्व। এवर ठिकातं ठज्ञार्ष शुँ ही পুতিরা তাহার উপর দর্মা দিয়া এ শাখা সকলকে স্থোর উত্তাপ इहेट उक्षा कतिता। किन्छ उज्जीर्यार्श जे मर्मा शुनिशा मित এবং दृष्टित जन जे किंगा को माउ ना-গিতে দিবে না। এইরপ সমস্ত আংয়োজন করিয়া বৃক্ষের ্যে শাখা হেলিয়া পড়িয়াছে, তাহা হইতে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র শাখা সকল মূলশাখার কিয়দংশের সহিত ছিঁড়িয়া লই-বে। কারণ মূলশাখার কিয়দংশ হইতেই শিকড় বহির্যত হইবার অনেক সম্ভাবনা এবং তাহারই রসে এ শাখা স-कल एक इरेट পार्व ना। পরে এ ফুড শাখার निम् जः ए। या गाइते जाहि, जाहाब ठजुल्लायं প्रिक्क उक्राभ कारिया के माथा डेर्क मश्था वर्ष रख পरिमिं नीर्घ ता-

STORE ...

थित्रा ज्विनिकोश्य कार्षित्रा किनित्व अवर रेशांटिक हुरे ठात्रि शेटात्र क्विन ज्विंश्य कार्षित्रा ज्विंश्य ताथित।



बरे চিত্রে মরিকার শা-ধা কাটিয়া যেরূপ শাধা कलम कदिए इस अ-বিকল ভজপ খোদিভ इरेगांटा हेरात नि-মাংশে ক চিহ্নে যে গাঁ-ইট আছে তাহাতে ঞ-कांटलब किशमश्म मः-नश इरेगा द्रशिपाद धरे कना के गाँदिएत রুদে সমুদ্র শাখা ख-ष्क इरेष्ठ शादि न। धवः के झांन इहें एउ मि-কড় বহিগত হইয়া-थारक। थ हिरू निकरि যে গাঁইট আছে তা-হা পত্ৰ গাঁইট এই স্থান হইতেও শিক্ড

ৰহিৰ্গত হইয়া থাকে, শাখা কলমে পত্ৰের কেবল আৰ্দ্ধাংশ রাখিতে হয় এই চিত্ৰে যেক্লপ আছে ডজ্ৰপ করিয়া পত্ৰ সকল কাটিতে হইবেক।

সমুদায় পত্র থাকিলে বহু ঘর্ম নির্গত ছওয়ায় শাধা-থও শুক হইবার বিশেষ সম্ভাবনা এবং শাধাশত সম্পূর্ণ রূপে পত্রশূন্য হইলে পত্রকলিকা বহির্গত ছইবার প্রতি বন্ধক হইতে পারে।

যদি কোন শাধার উক্ত প্রকার নাঁইট না থাকে, তবে নিমাংশে পত্রের নাঁইট রাখিরা অর্ছ হন্ত পরিমাণে কাটিবে। গোড়ায় কোন নাঁইট না থাকিলে শিক্ত বহি-

गँउ रहेट भारत मा। भरत के वानित्र ठोकांत छेभरत এক খোচা মারা হুই অঙ্গুলি পরিমিত গর্ত্ত করিয়া, তাহাতে এ শাখাখণ পুতিয়া মূলের মৃতিকা এমত ঠাসিয়া দিবে যে, তাহা সহজে নড়িতে না পারে এবং উক্তরূপ আচ্ছা-मम नित्म, इरे ठांति मांग जाए अथमडः मिरे পांजा गी-हैरित ठजुर्मितक कुम कुम शिकांत छे० शिख इरेरव। शित তাহারা ক্রমশঃ বাড়িলে, তাহা হইতে শিক্ড বহির্গত হইয়া চারা উৎপন্ন হইবে। কিন্তু রোপেলিয়া গ্রাটা প্রভৃতি যে কতিপয় উদ্ভিদ্ধ আছে, তাহার শাখা, যদিও বালির চেকায় অপ্পর্স থাকে, তথাপি তথায় পুঁতিলে পচিয়া যায়, তজ্জন্য এক গামলার তলায় ছিদ্র করিয়া ঐ ছিদ্রের উপরে খোলার কুচি দিয়া এবং এ গামলা বালি দ্বারা পরিপূর্ণ করিবে। পরে তাহার মধ্যস্থলে এক ক্ষুদ্র ভাঁড় পুঁতিয়া ঐ ভাঁড়ের চতুস্পাশ্বে উক্ত প্রকার উদ্ভি-জ্জের শাখাখণ্ড পুঁতিয়া দিবে। কিন্তু জল দিবার সময়ে গামলায় না দিয়া এ মধ্যন্তিত ক্ষুদ্র ভাড়ে জল দিবে, তা-शास्त्र के वालि मत्रम शांकित्व। शत्त्र इहे जिन माम भाषा খণ্ড সকলের উপরিভাগে পত্র কলিকার উদ্ভব হইলে মূল বহির্গত হইয়াছে এমত জ্ঞান করা যাইবে। এই সময়ে নিড়ানি দিয়া খনন করিয়া দেখিবে যে, মূল কভ হুর পর্যান্ত বিন্তীর্ণ হইয়াছে। যদি এমত জানিতে পার যে, তাহা-मित्र मूल ও শিকড় উত্তম হইয়া প্রবল হইতেছে তবে তাহা ত্রায় তুলিয়া সার সংযুক্ত মৃত্তিকা পূর্ণ অপর পাত্তে পুতিয়া দিবে, কাল বিলম্ব হইলে এ লাখাখও নীরস হইয়া

ছরিজা বর্ণ ছইবে। কারণ তৎকালে উলাত পত্র কলি-का इहेट चर्च विदर्शन इहेजा थाकि। जन्म यादार मूल बोता অधिक तम আকর্ষণ করিতে পারে করা আবশাক। কিন্তু তাহা বালির চৌকাতে হইতে পারে না। যদি আরিকেরিয়ার (এক প্রকার ঝাউ) শাখা ছেদ করিয়া চারা উৎপন্ন করিতে হয়, তবে প্রকাণ্ডের উপরে যে নবীন শাখা হইয়াছে, তাহা ঐ গুড়ির কিয়দংশের সহিত কাটিরা উক্ত প্রকারে ক-लम कतिरव। आमानिशांत मामाना पर्णन घांत्र अहे नि-র্ণর হইতেছে যে, গোলাপ ইত্যাদি কতওলি উদ্ভিজের শাখা এ বালির চেকািয় পুতিয়া কাঁচ পাত্রের আচ্ছাদ্ন নিয়া তথম চারা উৎপান করিতে পারা যায় না। এই জন্য তাহাদিগকে ক্ষেত্রের কোন পাথে পুতিয়া দ্মাতাস্ছাদন দিয়া ছায়া করিয়া দিবে। বর্ষাকালে ইহাদের শাখা রো-পণ করিলে পচিয়া যাইবার সম্ভাবনা। এই নিমিত শীত कार्त এই প্রকার উদ্ভিজের কলম করিবার উপযুক্ত म-भग्न । উक्त व्यक्तांत कलाम छेखां भ लागांहेबात जना ध চারার জন্ম স্থানে যে পরিমাণে উত্তাপ লাগিত, গেইক্রপ ব্যবস্থা করিবে। যদি শীতল দেশীয় কোন চালা হয়, তবে কেবল রৌদ্রের সময়ে তাহাকে ছায়াতে রাখিবে এবং অন্য সময়ে ছায়া অপসারণ করিয়া দিবে। সর্বদা আচ্ছাদিত থাকিলে মৃত্তিকার উত্তাপ এবং কাঁচ পাত্রের ভিতরের উত্তাপ প্রবল হইয়া ঐ শাখাখণ্ডকে নম্ভ করিতে পারে। কিন্তু জাপান ও তরিকটন্থ দেশ, যথার ত্রীম সর্ব-

कोल ममजाद योदक, उत्मनीय छात्रात निवस्त जाक्या-मन (म अयो ज्योगक। विट्येयङ दक्षनीयोश होद्रांक আচ্ছাদিত রাখিলে এ স্থানের উতাপ, প্রতিবন্ধকতা প্র-युक्त सर्पाएक नश ना পाईशा उथाय क्या थारक। के छ-তাপ এবং কাঁচ পাত্রের উত্তাপ এই হুই উত্তাপ প্রায় জাপান রাজ্যের উত্তাপের তুলা হইয়া থাকে। এই প্রকারে ইক্সোরা, জেপনিকা প্রভৃতি ঐ সকল দেশীয় চারার শা-খাতে চারা উৎপন্ন করিবে। পরে উদ্ভিজ্ঞদিগের স্ব-ভাবামুযায়ী কাল নিরপণ করা আবশ্যক, নতুবা শাখা চ্ছেদে চারা উৎপন্ন করা ছন্ধর। যথা গোলাপ, বরবিন हेडानि। हेरानिशांत भाषा (ছिम कलम गींड काल क-दिर्ग। किन्तु दर्ग काला कदिला कथन ठांद्रा छे९পত्তि इ-इंटि भारिद्र मा कार्रा शामार्भित कलम वर्शत ज्ला পচিয়া যাইবে এবং বরবিনার ঐ সময়ে তাদৃশ শাখা পা-ওয়া হুষ্কর। অতএব কোন্ উদ্ভিজের কোন্ সময়ে শাখা कलभ कब्रिट इरेटव छोट्। किहूरे विलिट शीति ना। क्रुयक তাহা আপনি বিবেচনা ও দর্শন ছারা নিরূপণ করিবে।

## गारि कलम ७ छरि कलम।

মাটিকলম ও গুটিকলমের পরস্পার এইমাত্র প্রভেদ যে, মাটিকলম করিতে হইলে, শাখা অবনত করিয়া মৃত্তিকা পূর্ণ টবে পুতিতে হয়। গুটিকলম করিতে হইলে, রক্ষো-পরি মৃত্তিকা তুলিয়া শাখার চতুর্দিকে বান্ধিয়া দিতে হয়। কিন্তু কলম সকল মনুষ্যের বুলি ও কৌশল সাধ্য, শাখায়

मुखिका मश्याश हरेलहे कलम हरेए भारत ना। अह निभिन्न त्रक मकल किन्नर्भ भिन्निश्व रूप्त, তिवियमक किथि-वर्ग करा वावगाक, ध विषय मः किश विषय विषय विषय মৃত্তিকার রস রক্ষের কাষ্ঠমধ্যস্থিত রসবাহিকা শিরা দারা উপরিভাগে আরুষ্ট হইয়া পত্র মধ্যে তপনতাপে পরি-পक इरा, जनखत थे तम ছाल्बर मशाहिত भिन्ना बाता প্রভাগাত হইয়া মূল পর্যান্ত সর্বত্তি ব্যাপিয়া ক্রমে ক্রমে রক্ষের সর্বাংশ পুষ্ট করে। অভএব যে শাখা অবনত করিয়া कलम क्रिएंड इस्र, डांडा इहेएड र्छ প्रतिश्कृतम श्रूनर्कात्र প্রকাপ্ত মধ্যে প্রভ্যাগত না হইতে পারে, এই নিমিত্ত শাখার যে অংশ মৃত্তিকায় পুতিতে হইবে, সেই অংশের মূলভাগের এক পত্র গাইট হইতে আরম্ভ করিয়া অন্য পত্র গাইট পৰ্যান্ত ছুরিকা ছারা হুই অংশ সমভাগে চিরিয়া मित्। की जश्म प्रश्न श्नकांत्र शतम्भत्र मिलिङ ना इश, এ कात्र । উহার মধ্য ছলে এক কার্চ খণ্ড বা কঞ্চি দিয়া মৃত্তিকায় এমত দৃঢ়রূপে পুতিতে হইবে, যাহাতে শাখা তথা হইতে উঠিতে না পারে কিয়া এ পর্কের মধ্যস্থলা ফাটাইয়া তাহার ভিতরে এক খান খোলা কুচি প্রবেশ করিয়া দিবে অথবা চতুষ্পার্থ হইতে ছাল তুলিয়া মৃত্তি-काग्र श्रु जिया मिरव। अहे जिन क्षकांत्र जेशाराज माक्ष कान् উদিভিজ্ঞ প্রতি কোন্ উপায় করিতে হইবে, তাহা কৃষক भद्रीका बर्दा निक्रभेश कदित्। यथा वर्शनत्विक्षांत्र भाशा চিরিয়া কিয়া কাটাইয়া না দিলে মূল বহিগত হয় না। আ-यत (रक्षित्रांत्र भाषा উक्त क्षकादि हित्रित्रा गांयमांत्र गृष्ठि-

कांग्र श्रुडिएड इस्ति। लिख जिन गांत्र भाग उपवर्षात्र बाधिया मध्या भर्षा जल मिल लिकड् ज्यारेट शरित



চিত্ৰে খ চিহ্ন ৰে রূপ আছে ডক্রপ মোচ-ড়াইয়া কিম্বা ছুরিতে কা-টিয়া এক গাঁইট হইতে व्यमा गाँदित भर्गाख हाँ-চিয়া কলম করিবে কিসা গ চিহ্নে যেরূপ শাখার यश एल काठो देश कलब করা হইয়াছে তজ্ঞপ করি-তে হইবেক অথবা শাখার धक गाँहिए इहेए अनी गाँदै । व्यविध काल किया मःশ काष्ट्रंत महिङ जुलिया रयमन क हिट्स करा इहै-আৰু য়াছে তজপ করিয়া কল্ম করিতে হইবেক।

এরপে চিরিয়া দিবার তাৎপর্য এই যে, পরিপক্ষ তাবৎ রস শাখা হইতে প্রকাণ্ডে না যাইয়া, তাহার কিয়দংশ ঐ খণ্ডিত স্থানের নিকট আদিয়া বিন্দু বিন্দু এক প্রকার বস্তুরূপে পরিণত হয়। তাহা হইতেই ক্রমণঃ স্থান স্থান কোমল শিকড় সকল উৎপন্ন হইতে থাকে। এই তাৎপর্য অন্যান্য কলমের বিষয়ত অবগাঁত হইতে।

গুটিকলম করিতে হইলে, প্রথমতঃ কোন শাখার ত্রই পত্র গাইটের মধ্যন্থিত যে পর্বিভাগ আছে, তাহার চতু-স্পাধের ছাল সকল কিয়দংশ কার্চের সহিত তুলিয়া ফে-লিবে। পরে প্র ছালের পচা পত্রের সার গোলাকারে **39**\*

বিশ্বা ছিন্ন চট রা অন্য ছারা বাছিরা বিশ্ব এবং তাছার উপরিভাগে সন্দিন্তে একটা ভাড় বাছিরা বাছাতে দিবা রাত্রি বিন্দু বিন্দু জলপাত হয়, এমত করিতে হইবে। এইরপে চুই তিন মালের মধ্যে চারা উৎপন্ন হইতে পারে।

পূর্বে সামান্তঃ কহিয়াছি যে, পত্র গাঁইট হইতে মূল বহির্গত হয়। কিন্তু এরালিয়া ইক্ষিভোলা প্রভৃতি কতকগুলি উদ্ভিজ্জের গাঁইট দ্বরের মধ্যক্তি পর্বভাগ হইতে মূল উৎপন্ন হইয়া থাকে। ইহার কারণ অনুসন্ধান দারা এই প্রতীত হয় যে, উহাদের ঐ স্থলে চক্ষুর ন্যায়্র যে একপ্রকার চিহ্ন আছে, তাহাদের মূল জ্বনাইবার এক অসাধারণ শক্তি আছে। অতএব যদি তদ্যতীত অন্য কোন উদ্ভিজ্জের শাখার প্রক্রপ চিহ্ন থাকে, তবে তাহাতান প্র প্রপ কলম দারা অবশ্য চারা উৎপন্ন হইতে পারে।

(यां फ कलम।

মাটিকলম ও গুটিকলম দারা উদ্ভিক্ষ সকল হইতে চারা উৎপন্ন করিবার বিধি উক্ত হইল। কিন্তু কতিপন্ন উদ্ভিক্ষ হইতে পুর্কোক্ত কলম দারা চারা উৎপন্ন হইতে পারে না, এই নিমিত্ত তাহাদের যোড়কলম কর। কর্ত্তব্য। যোড়কলম করিতে হইলে অত্যে মৃতিকাপুর্ল শামলায় এক বীজ্ব পুতিবে। এ বীজ হইতে চারা উৎপন্ন হইনা উত্তম পরিপুক্ত হইলে ভক্ষাতীয় রক্ষের যে শাখার সহিত বৃধ্ছিতে হইবে, এ গামলা তাহার নিক্ট বসাইবে। কিন্তু

চারা এবং পাশার সুগতা সমান হওয়া আবশ্যক। চারার প্রকাণ্ড ক্ষম ও পাশা সুল হইলে বলিও মিলিত হইতে পারে, তথাপি মিলনানন্তর পাশার মূলদেশ কাটিলে চারা স্ক্ষম প্রকাণ্ড হারা যে রস আকর্ষণ করিবে, তদ্দারা সুল পাশা পুষ্ট হইতে না পারিয়া অনায়াসে বিনফ হইবে। পরে বে অংশে উত্তরকে মৃড়িতে হইবে; সেই অংশ সমান পরিমাণে মাপিরা অন্যন চারি অসুলি দীর্ঘ কিঞ্চিৎ কার্চ সহিত ছাল তুলিয়া এমত পরিস্কার করিবে যে, মৃড়িলে ভাহার মধ্যে কিছুমাত্র কাক না থাকে। এবং স্ক্ষম রক্ষ্ম হারা বন্ধনপূর্বক ছয় সাত মাস তদবস্থার রাখিবে।

অনস্তর যদি উভয়ে উত্তমরূপ যুড়িয়া থাকে, তবে যোড়ের নিম্ন ভাগে শাখা ছেদ করিয়া ও উপরিভাগে চারার মন্তক কাটিয়া ফেলিবে। এইরূপ কলমকে যোড়কলম কহে। চারা এবং শাখা ভিন্ন জাতীর হইলে যোড়কলম হইতে পারে না কিন্তু সপেটা রক্ষের শাখা মেফিলের চারার সহিত এবং এননামিউরিকেটা রক্ষের শাখা শোনা রক্ষের চারার সহিত যুড়িয়া দিলে যোড়কলম হইতে পারে।



নিই চিত্রে স্ইট ব্রাইরর নামক এক জাতি গোলাপের দক্ষিণ দিগের শাখার উপরি ভাগে থ চিচ্ছে যেরপ কাটা আছে বােড় কলম করিতে হইলে তজ্ঞপ কাটিতে হইবে পরে টবে রােগিত অকলেও হােইট নামক গোলাপের চারার প্রকাণ্ডের উপরে প্র রূপ অবিকল কাটিয়া উভয় চারার ও শাখার আঘাতির স্থান সন্মিলন পূর্বকে বামদিগের শাখার ক চিচ্ছে যেরপ বন্ধন করা আছে সেই রূপ বাঁধিয়া দিবে। আমাদিগের এই দেশে অমু চারার সহিত্র অন্মের যােড় কলম বহু সংখ্য উৎপত্তি হইরা থাকে কিন্তু কথালের চারার সহিত ইহার যােড় কলম করিতে কাহার আকিকন নাই কারন অনেকে বলিয়া থাকেন যে এই কলম কথন হাইতে পারে রা সভাতি আমাছিলের পরীক্ষায় এই ভলন ইব্লাছি করিয়াছি এই কলম করিতে হইলে উক্ত রূপ প্রাকরণ সকল করিতে হইবে কেবল শাখা ও চারার যে স্থান মিলন করিতে হইবে সেই স্থল কাটিবার সময় আঠা বহিগত হইবে এই আঠা বিমোচন করিয়া যোড় লাগাইয়া দিবে।

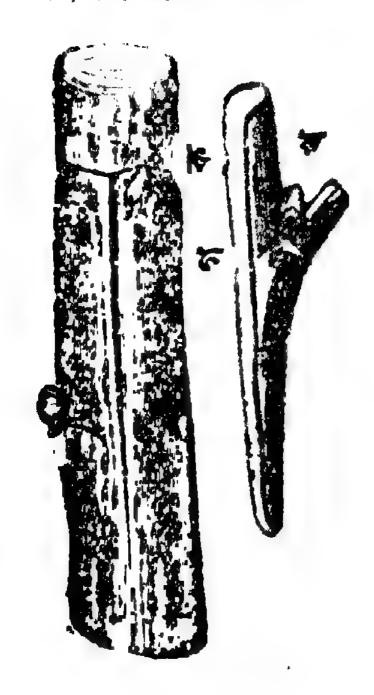
উদ্ভিজের পত্র গাইট হইতে যে সকল শাখা কলিকা বহির্গত হয়, তাহাদিগকে চফুকলম বলা যায়। কোন কৌশলক্রমে ঐ চফু তুলিয়া মৃত্তিকায় পুতিলে কিয়া অপর রক্ষের শাখায় বসাইলে তদ্ধারা চারা উৎপাদিত হইতে পারে। চফুকলম, শাখা কলম ও যোড় কলমের ভিম্ন প্রকামাত্র। ইহাদের পরস্পার বিশেষ প্রভেদ নাই। শাখা হইতে তুলিতে হইলে চফু শাখার কিঞ্ছিৎ কাঠের সহিত তুলিবে। কারণ শাখার আহায়া রম তাহার মূল ভাগের কাঠ মধ্যে যোজিত থাকে। যদবধি তাহার শিকড় নির্গত না হয়, তদবধি ঐ রম দারা চফু জীবিত থাকিতে পারে।

আলু, আসুর ইত্যাদি কতকণ্ডলি উদ্ভিজ্জের চক্ষু দারা চারা উৎপন্ন হয়। তদ্বাতীত অন্যান্য উদ্ভিজ্জের চক্ষুতে তাদৃশ উত্তেজন শক্তির অভাব, কিম্বা প্রকাশু মধ্যে তাদৃশ আহার্য্য বস্তুর অভাব প্রযুক্ত তাহারা উক্তরূপে জন্মাইতে পারে না।

যদি চক্ষু অপর শাখায় বসাইতে হয়, তবে নিম্ন লি-থিত নিয়ম নকল বুদ্ধিপূর্বক অবলম্বন করিয়া কার্য্য করিতে হইবে।

শাখার যে হানে চক্ষু বসাইতে হইবে, প্রথমতঃ সেই স্থানের উপরিভাগের ছাল ছুরিকা ধারা প্রশস্ত দিকে ছিরিয়া তাহার মহাছল হইতে নির ভাগো হই তিন জকুলি পরিমানে দীর্ঘে চিরীয়া দিবে। তাহাতে এইরপ
(া) হইবে। পরে ঐ নির মুখ চেরার হই পার্থের
ছাল এমত আতে আতে ছুরিকার অপ্রভাগ ছারা তুলিতে
হইবে, যাহাতে ছাল ছিডিয়া না যার অখচ ভাহার অভ্যাভরে ফাঁক হর।

এইরপে ছান প্রস্তুত ছইলে তৎসজাতীর শাখা ছইতে কিঞ্চিৎ কাষ্ঠ সহিত চক্ষু তুলিয়া তাহার মূলদেশের
প্রশস্ত ভাগা পূর্ব্বোক্ত ছানের বিদারিত প্রশস্ত ভাগের
মাপ লইয়া কাটিবে এবং উহার দীর্ঘাংশ লেখনীর অগ্রভাগের ন্যায় ক্রমশঃ সক্ত করিয়া ঐ হানের মধ্যে স্থিলনপূর্ব্বক বসাইয়া বাদ্ধিয়া দিবে। তাহার উপরি ভাগে
রৌজ নিবারণ জন্য কলাগাছের খোলা বাদ্ধিয়া প্রতি
দিবস জল দিতে হইবে।



এই চিত্রের বামদিগেক চিক্নে যে শাখা আছে তাহার উপরি ভাগে যেরূপ কৃষ্ণবর্গ রেখা আছে তজ্ঞপ চিরিয়া পরে,
ছুরিকার অগ্রভাগ দিয়া ঐ চেরার দুই পার্থ হইতে এমত সাবধানে ছাল তুলিবেক যে কোন মতে ছাল ছিভিয়া না যায় পরে দক্ষিণদিগে খ চিক্নে যে শাখা কলিকা আছে তাল্য কিয়দংশ ছালের সহিত তুলিয়া ঠ শাখার উপরিভাগে চেরার ভিতরে সম্মিলন পূর্থক বসাইয়া বান্ধিয়া দিবে। কিন্তু যদি ঐ শাখা কলিকায় উক্ত ছালের সহিত কিঞ্চিৎ মাত্র কাইথাকে তবে ভাহাকে উঠাইয়া কেলিবে।

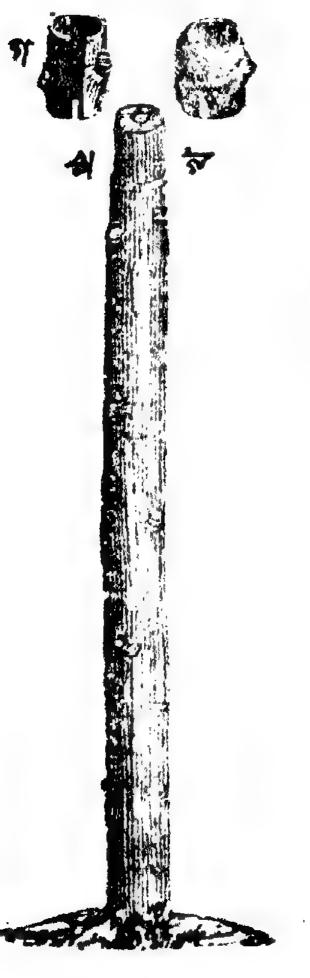
শাধার চকু বসান হইলে এ শাধার বে সকল
শাধাকদিকা থাকে, তাহা তৎকালে ছিঁড়িরা কেলিবে।
নতুবা তাহার শাধার পরিপক্রন সকল আকর্ষণ
করিলে চকু রসাভাবে বিনই হইতে পারে। অনন্তর বোড়
লাগিরা চকু বাড়িবার উপুখ হইলে তাহার উপরিভাগের
শাধা সমুদার কাটিবে। যে হুলে চকু বসাইবে তথার
গাইট থাকিলে তাহা হইতে অভিনব কোমল কাঠ উৎপন্ন
হইয়া উভরে বরায় যোড় লাগিয়া যার, একারণ গাইটের
উপরিভাগে চকু বসান আবশ্যক।

তেজমী শাখার চক্ষু বসাইলে অধিকতর রস দ্বারা যোডের স্থান শীঘু মিলিত হওয়ার চক্ষু আশু বর্দ্ধনশীল হইবে। শাখা চক্ষু অপেক্ষা তেজোহীন হইলে চক্ষু রিদ্ধি প্রাপ্ত না হইয়া তদবস্থই থাকিবে। কিন্তু যে স্থলে উষ্ণ-তার প্রাবলা প্রযুক্ত উক্তরূপ কলম করিয়া চারা উৎপন্ন করা স্কঠিন বোধ হয়, সে স্থলে চক্ষুকে সতত সরস রাখি-বার জন্য যোড়ের উপরিভাগে বস্ত্রখণ্ড জড়াইয়া তাহার উপরিভাগে সিচ্ছিদ্র ভাঁড় বান্ধিয়া জল দিতে হইবে।

# চুঞ্জিকলম।

শাখার ছাল বজায় রাখিয়া অভ্যন্তরের কার্চ কার্টিলে
চুলিরন্যায় দেখিতে হয় এই নিমিত্ত তাহাকে চুলিকলম
বলা যায়। যদিও চুলিকলম এদেশে সর্বত্ত প্রচলিত নাই
তথাপি তাহা করিতে পারিলে অনায়াসে রুতকার্য্য হওয়া
যায়, একারণ তাহিষয় বর্ণন করিজে প্রায়ত হইলাম। কোন

ছারার শন্তক কেলন করিয়া প্রকাণ্ডের উপরিভাগ প্রায় ছাই অসুনী পরিমাণে চতুর্দিকের ছাল তুলিয়া চতৃক গাছের মন্তকের ন্যার পরিষ্কৃত করিবে। পরে ভৎসজাতীয় রক্ষের তহুপাযুক্ত ছুল ও কোমল পাখা জানিয়া ভাছার যে ছানে চক্ষু আছে সেই ছানের ছাল বজায় রাখিয়া ঐ পরিমাণে অভ্যন্তরের কান্ঠ কোন কেশিল ক্রমে কান্তিরা সেই ছিল মন্তক চারার উপরিভাগে এমত টিপে বসাইবে যাহাতে ভাছার ভিতরে ফাঁক না থাকে অথচ চুল্ধি কাটিয়া না যায়। যনি ভিতরে ফাঁক থাকে কিন্তা চুল্ধি ফাটিয়া না তাহা হইলে কনাপি ইউ সিদ্ধি হইবে না।



এই চিত্রে ক চিত্রে এক চারার মন্তক ছেদন
করিয়া ইহার উপরিভাগে দুই অঙ্গুলি পরিমাণে ছাল তুলিয়া চড়ক গাছের মন্তকের ন্যায়
করা হইয়াছে এবং ইহার দক্ষিণ দিগে চক্ত্
থ চিহ্নেতে সংযুক্ত যে চুক্তি আছে তাহা ঐ
চারার মন্তকে সন্মালন পূর্বাক বসাইজে
হইবেক কিন্তু বামদিগে গ চিহ্নে যেরপ চুক্তি
কাটিয়া গিয়াছে তন্ত্রপ হইলে ইফ সিদ্ধি

ভাগি পাৰা নােচড়াইলে কিয়া থাবান্ত কাউচি আনি ভাগির অবভাগে কাঠ হইতে পুৰত্ হইরা টুলির কারি হর ভাগির অবভাগ কাঠ হইতে পুনর হৈ কারে। ইহা পালিক বাধা বােষ হইলে নির লিখিত উপার অবভাগ কারিবি। শাধার যে অংশে চকু আছে সেই অথপের উপরিভাগ এক অজ্পী পরিমাণে রাখিরা কাটিবে এবং অধ্যান্তিবা এক অজ্পী পরিমাণে রাখিরা অপর ছাল সকল জুলিরে। পরে এ চকু সংযুক্ত ছাল ধারণ পূর্বাক কমে করে ব্রাহাইরা বল পূর্বাক টানিলে ঐ ছাল কাঠ হইতে পুলিরা আনি নিবে। তাহা লইরা পূর্বোক্ত ছিল মন্তক চারার উপর বসাইবে। কমলা লেবুর চুলি কাণ্জি বা অন্যান লেবুর চারায় বসাইলে কমলালেবু হইবে। পিচ্, কুল, গোলাপা পুভৃতি এই কলমে উৎপন্ন হইতে পারে।

# জিবে কলম। প্রথম পকরণ।

এতদেশে উত্তাপের প্রাবন্য প্রযুক্ত জিবে কলবে
চারা উৎপন্ন হইতে পারে না তথাপি সকলের অবগত হওরা আবশ্যক এবিধার তদ্বিষয় কিছু বর্ণন করিতেছি।
এক চারার মন্তক কাটিয়া প্রকাণ্ডের এক পার্শের উপরিভাগ হইতে আরম্ভ করিয়া প্রার দুই তিন অসুনী প্রশ্ র্যান্ত নিম্ন ভাগ ক্রমশঃ অধিক পরিমাণে কাটিবে। এবং
তৎ সজাতীর রক্ষের এক শাখার এক পার্শের অধোভাগ
হইতে প্রস্রেপ চাঁচিতে আরম্ভ করিয়া উদ্বাধ্যে প্র পরি- विक्र कांन कांनिय अधिक श्रीत्रगांट गै किया जे श्रीत्रकार श्रीत कांनिक क्षित्र कांनिक कांनिक

काणियां दब अकादत नमाहेत्व हरेदवर जाहा न्याहे काणियां दब अकादत नमाहेत्व हरेदवर जाहा न्याहे

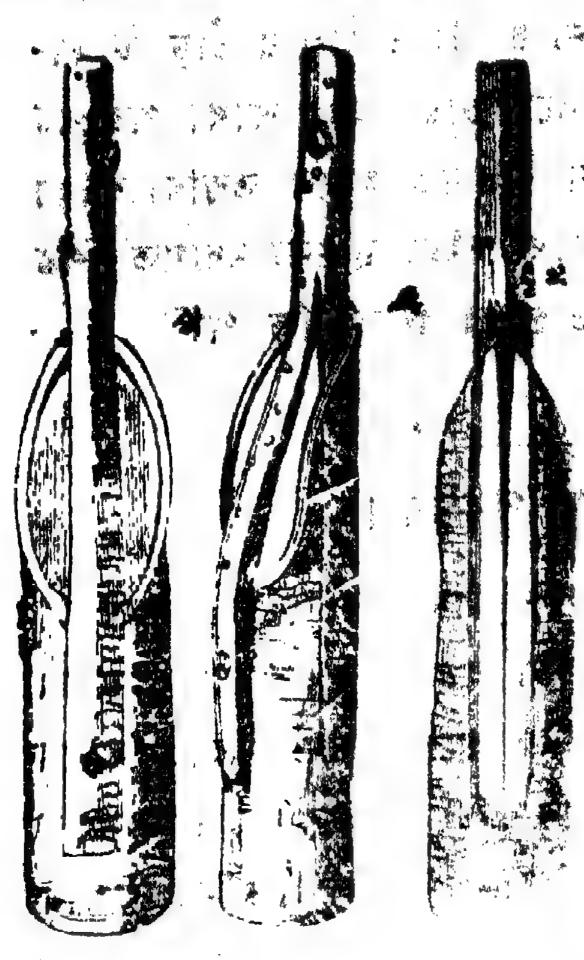
## দিতীয় প্রকরণ।

কোল ছির মন্তক চারার হুই জনুলী । র্মিত অথা-ভাগের হুই গাখিছ ছাল চাঁচিরা ক্রমণঃ উপরিভাগ পা-ত্লা করিবে। পরে তজ্জাতীর ও তজ্ঞা সুল এক শাখা ভারিরা ভাহার মূলদেশের হুই অসুলী উপরিভাগ ছইতে সমাল অংশে চিরিতে আরম্ভ করিরা ক্রমণঃ নিহুভাগের কাঠ কাটিরা অন্ধিক পারিষাণে ফাঁক কার্মবে। এবং উহাকে এমত পরিকার করিরা চাঁচিকে যে উভরুক সং-হোজিত করিলে উত্তররূপে নিলিড হইতে পারে। অনন্তর এ চারার উপরি শাখা বলাইয়া দুলুরূপে রক্ষ্যারা কার্মিনা রাখিবে। গুটা কলমের ন্যার উহার উপরে ভাঁল টালা-ইরা জল বিবে। এই কলমে চারা এবং শাখা পর্কার নহলম বাকার আরুক্ত রস উর্জ্ব গত হইলে তত্বারা শাখা জীবিত থাকে এবং পরিপক হইরা ছালের মধ্যণত শির ভারা চারার আনিলে অভ্যন্তরের হাল র্ম্মি পাইরা উভ-রকে বৃত্রা দের।

# তৃতীয় প্করণ।

চারা এবং শাখা আকারে সমান না হইরা যদি শাখা অপেক্ষা চারা অধিক মোটা হয় তবে উক্তরপে উভরের কলম হইতে পারে না। এমত স্থলে কলম করিতে হইলে নিম্ন লিখিত উপায় অবলম্বন করিতে হইবে। চারার মন্তক ক্ষেদন করিয়া প্রকাণ্ডের হই তিন অঙ্গুলি পরিমিত উপরি ভাগের এক পার্থ লেখনীর অপ্রভাগের ন্যায় ক্রমশঃ কাটিয়া পাতলা করিবে এবং অপর পার্থের ছাল মাত্র ভুলিবে তদপেক্ষা সক্ষ এক শাখা আনিয়া তাহার তৎপরিন্যিত নিম্ন ভাগ অসমান অংশে অর্থাৎ এক অংশ পাতলা রূপে চিরিবে। প্রস্থল অংশের মুখনী মাত্র স্থুল রাখিয়া উপরি ভাগের অভ্যন্তর ক্রমশঃ চাচিয়া পাতলা করিবে পরে চারার যে পার্থে পাতলা হইয়াছে সেই পার্থে

बंबात भावना जरमें जरर ति भारत है हाममंति का है। हरेबाटह मिरे भारत भारत के चून मूर्थ जरने नमारेबा नाबिया बाबिरन। भिन्न हाकत भावने जरे कमम क्षितिह, रेका नमस्बद्ध कांबरक कांबर रंग।



वरे किरवाद वांच फिरमद अधम क हिस्स त्य होत्रां ि ज जार जीराज मजक नित्र क्षेत्रक छेशकि छात्र श्राप्त अवाद्य किंग श्रेप्राट अर हेशांत जिनात्र कारम करण भाषात निर्दारम हितिया वस है त्व त्य ध्यकां क क्रेया थाटन उक्ति ममा स देशांटज ध्यक्त भा शाहरज्य अबर अरे कलायत्र भाग मिटन य अकान इरेशा थाटक जाहा जे वामांमरभव चिजीग हिस्क ध्यक्रीन कहा इहेटज्राह । তৃতীয় চিত্রে শাখার এক ष्यः ग रमहिराद ज्ना ठांदाद कार्षिए इहेरवक डांका ध्वान-শ্ন করা হইতেছে।

### माधात्रण विधि।

र्याष्ट्र कनम ठकू कनम देजानि कवित वान छेछ दाव हान भवन्भव मिनिड ना दरेवा भ्रथक हरेवा थारक उर्दर के हास भविभक वम वक हरेवा जारिव नाव कृतिका छैठे भिह गाहिब स्याष्ट्र कनम देश क्षांव भविष्णा मान हव। देशक क्षांविकान ना कवितन नाथा एक हरेवाव विनक्त বভাষনা। কাৰণ উক্ত প্রকার ক্রেন্ত্র ক্র্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র করার আঠা উৎপন্ন হয়, তৎসংযোগে প্র কাষ্ঠ অপ্রো পরম্পর যুড়িতে থাকে। পরে ক্রেন্ত্র করে তাহার অ্যোভাগের কাষ্ঠ সকল যুড়িয়া মিলিত হইলে তদন্তর্গত রস বাহিকা শিরা দ্বারা উর্দ্ধ্ ভাগের আক্রন্ত রসের সঞ্চার হইতে থাকে। যদি তৎকালে কোন কারণ বশতঃ ছাল সকল যুড়িয়া না যায় তাহা হইলে প্রকাণ্ড মধ্যে পরিপক রসের সঞ্চার না হওয়ায় তাহা ক্রমণঃ তেজোন্ত্রন হয়া তাদৃশ রসাকর্ষণ করিতে অক্ষম হয় প্ররাণ্ড শাখাও উত্রেরের শীর্ণ হইয়া শুক্ত হইতে পারে অত্রব কলম করিবার সময় যাহাতে উত্রের ছাল পরস্পর সংযুক্ত হয়া থাকে এবিষয়ে সতর্ক হইয়া কার্য্য করিতে হইবে।

উদ্ভিজ্ঞ নানা জাতি, তাহার মধ্যে পরস্পর স্বজাতীর না হইলে কলমে চারা উৎপন্ন হইতে পারে না। স্বজাতী-য়ের মধ্যেও প্রত্যেকের অন্তর্গত বহুবিধ প্রভেদ আছে। যথা, এক কুল জাতির মধ্যে দেশী কুল, বিলাতি কুল, বন-কুল ইত্যাদি। এবং আমু, লেরু প্রভৃতির প্রক্রপ নানাবিধ প্রভেদ আছে।

স্থাতীয়ের মধ্যে সন্নিহিত জাতিদ্বরের কলম যত হরার যুড়িয়া যার অসনিহিত জাতিদ্বরের কলম তত শীপ্র যোড় লাগে না তাহা যুড়িতে অপেক্ষাক্কত অধিক সময় লাগে। উভয়ে ভিন্ন জাতি হইলে কোন রূপেই যোড় লাগিবার সম্ভাবনা নাই। কোন কোন ব্যক্তি কোশল ক্রমে বিভিন্ন জাতিম্বরের
কলম দেখাইবার জন্য এক লেরু চারার মন্তক কাটিয়া স্ক্রম
অন্তর দ্বারা ছালমাত্র বজার রাধিয়া মূল পর্যন্ত প্রকাণ্ডের
অন্তঃগত কার্চ সকল কাটিয়া চুঙ্গির ন্যায় করে। পরে তত্বপযুক্ত অন্য জাতীয় এক চারা মূল সহিত আনিয়া তাহার
মধ্যে এমত বসাইয়া দেয় যাহাতে সেই মূল মৃত্তিকায় সংলগ্ন হইয়া রসাকর্ষণ করিতে পারে। তাহাতে এ চারা ক্রমে
পুষ্ট হইয়া যুড়িয়া যাইবার মত হইয়া থাকে। কিন্তু ইহাতে
কেবল প্রতারণা ব্যতীত আর কিছুই প্রকাশ পায় না।

যদি যোড় কলম করিবার জন্য অন্য চারা না পাওয়া যায় তবে তজ্জাতীয় কোন শাখার প্রকাণ্ডের সহিত তাহা করিলেও যুড়িয়া যাইবে। যদিও উভয়ের আন্তরিক রচনার বৈলক্ষণ্য আছে তথাপি যুড়িবার কোন প্রতিবন্ধক নাই।

যোড় কলম করিতে হইলে যে চারা শাখা অপেক্ষা প্রবল হইবে তাহাতে যোড় কলম করিবে চারা তেজোহীন হইলে আপাততঃ যোড় লাগিতে পারে কিন্তু পরে রসা-ভাব প্রযুক্ত শাখা শুক্ত হইবার সম্ভাবনা।

চুন্ধিকলম ও জিবে কলম করিয়া প্রথমতঃ ছায়ায় রাধিয়া উপরে সচ্ছিত্র ভাঁড় টাঙ্গাইয়া প্রভিত্নিক জল দিবে নতুবা আতপ তাপে শুষ্ক হইয়া যাইবে।

যে যে রক্ষ সভাবতঃ অভিশয় বর্দ্দশীল, তাহাদিগকে উদ্যানে রাখিলে অনেক অনিষ্ট ঘটতে পারে। উহা-দিগকে ধর্মতাবস্থায় রাখিবার জন্য কলম করা আবশ্যব মুংরি আমু রক্ষ অভি ধর্মাকার, অন্যান্য আমুরক্ষ রহদা কার হয় অতএব মুংরি আমের চারার সহিত অন্যান্য আমুরক্ষের শাখার যোড়কলম করিলে ঐ শাখা অধিক-তর রসের অভাব পুরুক্ত রহদাকার না হইয়া থকাকার হইয়া থাকিবে। এবং স্থল পদ্মের গাছ অতি রহৎ এবং শাখা পুশাখা দ্বারা অপ্যকাল মধ্যেই অনেক স্থান ব্যাপিয়া থাকে। কিন্তু জবা ফুলের গাছ তাদৃশ বদ্ধ ন শীল নহে। একারণ জবাফুলের চারার সহিত স্থলপদ্মের যোড়কলম করিলে তাদৃশ বাড়িতে না পারিয়া জবার ন্যায় রিদ্ধি পুাপ্ত

জবা এবং স্থলপদ্মের নামভেদ হইলেও উহারা বিজাতীয় নহে তাহা হইলে উভয়ের যোড়কলম হইবার কোন
সন্তাবনা থাকে না, এবং উভয়ের অবয়ব ও প্রস্পাত অনেক
সাদৃশ্য আছে, ইত্যাদি নানা কারণে উহারা সজাতীয়,
কেবল সজাতীর অন্তর্গত যে নানা প্রকার প্রভেদ আছে
তাহার মধ্যে এক এক প্রকার বলিয়া গণ্য করিতে হইবে।

এইরপে কলম করিলে রহদাকার রক্ষ থবা হইবার কারণ এই যে উভয়ের কার্চ ত্রায় যুড়িয়া যায়, ছাল যুড়িতে অধিক বিলম্ব হয়, এই নিমিত্ত পরিপক রস শাখা হইতে চারায় আদিতে না পারিয়া তথায় বহুকাল অব-ছিতি করে। তাহাতে সময় পাইলে তদবন্থ শাখা হইতেই পুষ্পা, ফল উৎপন্ন হইতে থাকে। কিন্তু শাখা তাদৃশ রিদ্ধি প্রাণ্ড হইতে পারে না। যখন এ পরিপক রস চারায় প্রত্যাগত হইয়া মূলে সংযুক্ত হয় তখন চারাও শাখা বাড়িতে থাকে। যাহাকে বাড়াইতে হইবে তাহার উক্ত রূপ কলম করা অনুচিত। এই সকল বিবেচনা করিয়া সকলে রক্ষের হাস ও রদ্ধির কারণ উপায় করিতে যত্নান হইবে।

যদি কোন কারণ বশতঃ কোন রক্ষের ফল হইতেছে না দেখা যায় তবে তাহার শাখা কিন্তা চক্ষু লইয়া তৎসজা-তীয় চারার সহিত কলম করিলে অবশ্য ফল হইবে। ই-হাতে বিশেষ এই যে এ ফল মূল রক্ষে হইলে আকারে যেরপ হইত ইহাতেও সেইরপ হইবে কেবল বীজ অতি ক্ষুদ্র হইবে।

বিদেশীয় এমন কতকগুলি উদ্ভিজ্ঞ আছে তাহা এদেশে আনিয়া রোপণ করিলে আপাততঃ কিছুদিন জীবিত থাকিয়া পরে ক্রমশঃ শুক্ষ হইয়া মরিয়া যায়। একারণ এদেশীয় তৎসজাতীয় চারার সহিত কলম করিলে তাহা চারার রম প্রাপ্ত হইয়া ততুলা জীবন শক্তি পাইয়া থাকে। কিন্তু লবজগাছ উক্তরূপেও রক্ষিত হওয়া স্ফ্রুকিন। বস্থ-রাই গোলাপ প্রভৃতি কতকগুলি উদ্ভিজ্জের বীজ আনিয়া এদেশে প্রতিলে তাহাতে চারা কখন উৎপন্ন হয় না তন্নি-মিত্ত এদেশায় তৎসজাতীয় অন্য চারার সহিত তাহার কলম করিবে।

উদ্ভিজ্ঞ এবং জন্তু একই পুকার, কেবল আকারগত বৈলক্ষণ্য মাত্র। বিশেষতঃ দেশ, কাল, এবং স্থান বিশেষে জল, বায়ু, উত্তাপ এবং মৃত্তিকা রীতিমত যথাযোগ্য রূপে ব্যবহার করিলে উদ্ভিজ্ঞ জাতি বীজ, শাখা, শিকভ প্রভৃতি হইতে উৎপন্ন হইয়া থাকে জন্তরা কেবল এক বীজ হইতেই জন্মায় একারণ উৎপত্তি বিষয়ে জন্ত অপেক্ষা উদ্ভিজ্ঞের ক্ষমতার আধিক্য আছে ইহা অবশ্যই স্বীকার করিতে হইবে।

# অশুक সংশোধন।

र्क।	পুক্তি	অশুদ	শুকা !	
2	<u> </u>	জীবন উপযোগি	<u>ज</u> ीवत्नां श्रेट्यां भी	
8	3	প্রথ	প্রেখা	
<b>S</b>	39	সংযত	<b>সং</b> যোত	
	<b>b</b>	इ कि भोनी	इकिशील	
7	<b>२</b> २	গমমাগমনের	গ্মনাগ্মন	
50	৩	নির†করণ	নিবারণ	
59	39	इकिंगोलि	इकिनीन	
25	৯	मत्यनम	সন্মিলন	
¢8	ъ	ছাই মৃতিকা	ছ বৈ মৃতিকা	
ब	39	অধোগমন	অধ্যামন	
•	9	লবণ	যে লবণ	
W.	9	স্ব	সৰ্বৰ	
4	৯	দ্ৰবাদি	ज्या नि	
18	2	अमानमीय	অস্দেশীয়	
3	পরপৃষ্ঠায়	95	98	
, ,	8	স্তব	বস্তুর	
2	\$8	বৰ্ণ থাকে	বৰ্ণ হইয়া থাকে	
	9	ভাকে	তারে	
	50	তামা	ভাষ	
	5	পলিজ যুক্ত	পলিযুক্ত	

•

# শ্রীপ্যারী মোহন বন্দ্যোপাধ্যায় দ্বারা বেদ্ধল স্ম্পিরীয়র যন্ত্রে মুদ্রিত কলিকাতা মৃজাপুর ৫ নং মুছলমান পাড়া লেন।